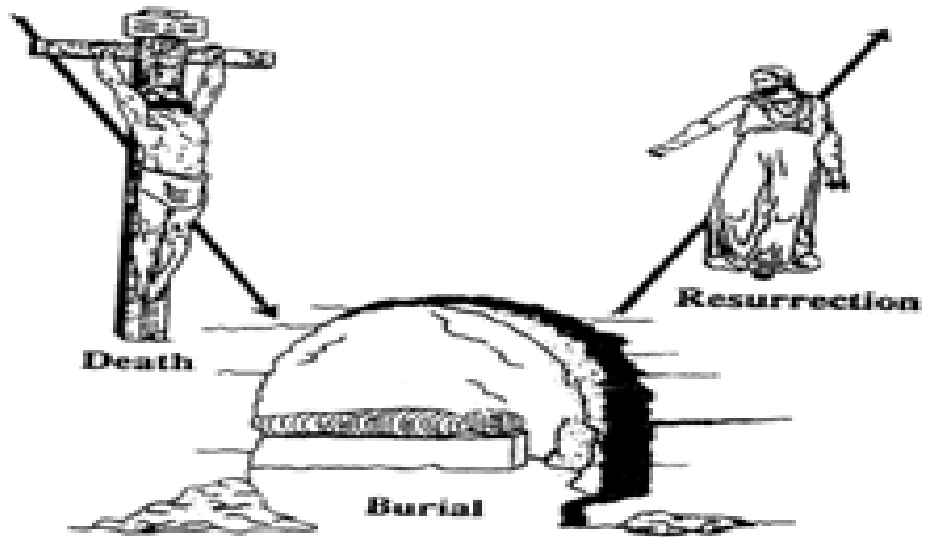


খ্রীষ্টের মধ্যে বাপ্তিস্ম

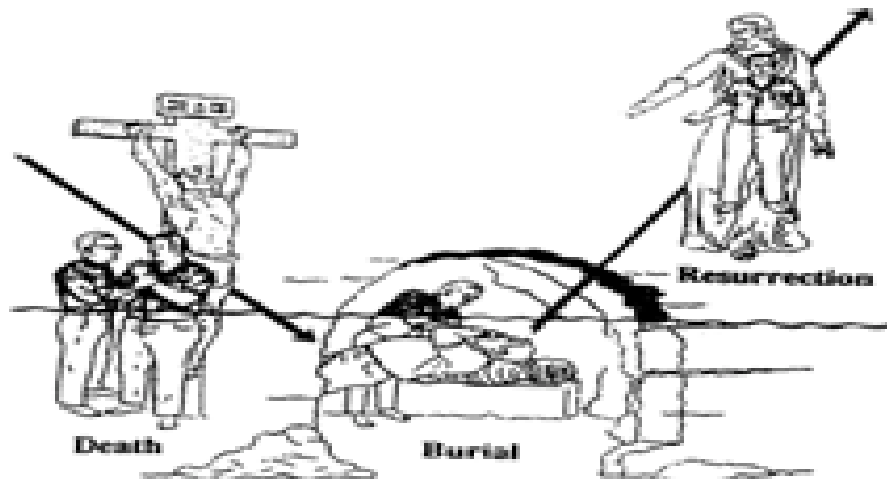


Baptism

Christ



Into



Baptism Into Christ

You are encouraged to study your Bible to prove the truth presented in these lessons or any other lesson. The comments presented herein are those of the authors and the compiler. You should verify their comments and opinions and teachings by others; e.g., a pastor, preacher, priest, rabbi, commentator, or publisher as it is YOUR responsibility to seek, know and do God's will.

In verifying to read different Bible translations, refer to Bible dictionaries and lexicons for meaning of words or phrases you do not know. Be careful with dictionary definitions as dictionaries give meaning of words and phrases from original language through current usage.

The meaning of words and phrases change over time. Also, several Greek words may be translated into one word in English and may distort the original meaning. For instance, the Greek words *de* and *kai* were translated as "and" in English. *De* is used to separate two nouns whereas *kai* connects two nouns.

Let God speak to you from His Holy Word as recorded in the Bible.



International Bible Knowledge Institute

IBKI grants permission to reproduce for non-commercial purposes lessons in their entirety without change or charge.

Randolph Dunn, President - Roberto Santiago, Dean
Visit our website Thebibleway.net
Contact us at info.India.IBKI@gmail.com

श्रीष्टेर मध्ये वास्तुश्रुत्य

इन पाठों या किसी अन्य पाठ में प्रस्तुत सत्य को साबित करने के लिए आपको अपनी बाइबल का अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यहाँ प्रस्तुत टिप्पणियाँ लेखकों और संकलनकर्ताओं की हैं। आपको दूसरों द्वारा उनकी टिप्पणियों और राय और शिक्षाओं को सत्यापित करना चाहिए; उदाहरण के लिए, एक पादरी, उपदेशक, पुजारी, रब्बी, टिप्पणीकार, या प्रकाशक क्योंकि यह आपकी जिम्मेदारी है कि आप परमेश्वर की इच्छा को खोजें, जानें और करें।

विभिन्न बाइबल अनुवादों को पढ़ने के लिए सत्यापित करने में, उन शब्दों या वाक्यांशों के अर्थ के लिए बाइबल शब्दकोश और शब्दकोष देखें जिन्हें आप नहीं जानते हैं। शब्दकोश परिभाषाओं से सावधान रहें क्योंकि शब्दकोश वर्तमान उपयोग के माध्यम से मूल भाषा से शब्दों और वाक्यांशों का अर्थ देते हैं।

समय के साथ शब्दों और वाक्यांशों के अर्थ बदल जाते हैं। इसके अलावा, कई ग्रीक शब्दों का अंग्रेजी में एक शब्द में अनुवाद किया जा सकता है और मूल अर्थ को विकृत कर सकता है। उदाहरण के लिए, ग्रीक शब्द *डे* और *काई* का अंग्रेजी में "और" के रूप में अनुवाद किया गया था। *डे* दो संज्ञाओं को अलग करने के लिए प्रयोग किया जाता है जबकि *काई* दो संज्ञाओं को जोड़ता है।

परमेश्वर को अपने पवित्र वचन से आप से बात करने दें जैसा कि बाइबल में दर्ज है।



अंतर्राष्ट्रीय बाइबिल ज्ञान संस्थान IBKI बिना किसी परिवर्तन या शुल्क के गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों के पाठों को उनकी संपूर्णता में पुनः पेश करने की अनुमति देता है। रैंडोल्फ़ डन, राष्ट्रपति - रॉबर्टो सैंटियागो, डीन हमारी वेबसाइट Thebibleway.net पर जाएँ हमसे info.India.IBKI@gmail.com पर संपर्क करें

Baptism Into Christ

WHAT BLESSINGS DOES A PERSON RECEIVE WHEN HE IS BAPTIZED BIBLICALLY?

Lesson 1

A person is saved when he is scripturally baptized. There are several aspects or ways of expressing this gift of salvation in the New Testament:

1. Salvation — Mark 16:15-16

“And He said to them, “Go into all the world and preach the gospel to all creation. He who has believed and has been baptized shall be **saved**; but he who has disbelieved shall be condemned.”

2. Forgiveness of sins — Acts 2:38

“And Peter said to them, “Repent, and let each of you be baptized in the name of Jesus Christ for the **forgiveness of your sins**; and you shall **receive the gift of the Holy Spirit.**”

3. Receive the gift of the Holy Spirit — Acts 2:38 above

4. Sins washed away — Acts 22:16

“And now why do you delay? Arise and be baptized, and **wash away your sins**, calling on His name.”

5. Cleansing — Eph. 5:25-27

“... Christ also loved the church and gave Himself for her, that He might **sanctify her**, having cleansed her by the washing of water with the word, that He might present to Himself the church in all her glory, having no spot or wrinkle or any such thing; but that she should be holy and blameless.”

6. Sanctification — Eph. 5:26 above

7. A good conscience — 1 Peter 3:21

“And corresponding to that, baptism now saves you— not the removal of dirt from the flesh, but **an appeal to God for a good conscience**—through the resurrection of Jesus Christ.”

8. Puts off the body of sin — Col. 2:11, 12

“In Him you were also circumcised with a circumcision made without hands, in **the removal of the body of the flesh** by the circumcision of Christ; having been buried with Him in baptism in which you were also **raised up with Him** through faith in the working of God, who raised Him from the dead.”

9. Raised with Christ — Col. 2:12 above

10. Born again — John 3:3-5

श्रीष्टेन मध्ये बाप्तिस्मा

जब एक व्यक्ति बाइबल से बपतिस्मा लेता है तो उसे क्या आशीषें मिलती हैं?

पाठ 1

एक व्यक्ति को तब बचाया जाता है जब वह शास्त्र से बपतिस्मा लेता है। नए नियम में उद्धार के इस वरदान को व्यक्त करने के कई पहलू या तरीके हैं:

2. मोक्ष - मरकुस 16:15-16

"और उसने उनसे कहा, "सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि को सुसमाचार प्रचार करो। जिसने विश्वास किया है और बपतिस्मा लिया है वह बच जाएगा; परन्तु जिसने काफ़िर किया, वह दोषी ठहराया जाएगा।"

2. पापों की क्षमा - प्रेरितों के काम 2:38

"तब पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; और तुम पवित्र आत्मा का वरदान पाओगे।"

3. पवित्र आत्मा का उपहार प्राप्त करें - प्रेरितों के काम 2:38 ऊपर

4. पाप धुल गए - प्रेरितों के काम 22:16

"और अब देर क्यों करते हो? उठो और बपतिस्मा लो, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धोओ।"

5. सफाई - इफ. 5:25-27

"... मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम किया, और उसके लिये अपने आप को दे दिया, कि वह उसे पवित्र करे, और वचन के द्वारा उसे जल से धोकर शुद्ध करे, कि वह कलीसिया को उसकी सारी महिमा में उपस्थित करे, जिसमें कोई स्थान न हो या शिकन या ऐसी कोई चीज; परन्तु यह कि वह पवित्र और निर्दोष ठहरे।"

6. पवित्रीकरण - इफ. 5:26 ऊपर

7. एअच्छा विवेक - 1 पतरस 3:21

"और इसके अनुरूप, बपतिस्मा अब आपको बचाता है - मांस से गंदगी को हटाने के लिए नहीं, बल्कि एक अच्छे विवेक के लिए भगवान से अपील - यीशु मसीह के पुनरुत्थान के माध्यम से।"

8. पाप के शरीर को दूर करता है - कर्नल 2:11, 12

"उसी में तुम्हारा भी खतना हुआ, और बिना हाथों का खतना हुआ, अर्थात् मसीह के खतने के द्वारा शरीर का खतना किया गया; उसके साथ उस बपतिस्मे में गाड़ा गया जिस में तुम भी उसके साथ उस विश्वास के द्वारा जिलाए गए जिस ने उस परमेश्वर के काम पर विश्वास किया, जिस ने उसे मरे हुआओं में से जिलाया।"

9. मसीह के साथ उठाया - कर्नल 2:12 ऊपर

10. फिर से जन्म - यूहन्ना 3:3-5

“Jesus answered and said to him, ‘Truly, truly, I say to you, unless one is **born again**, he cannot see the kingdom of God.’ Nicodemus said to Him, ‘How can a man be born when he is old? He cannot enter a second time into his mother’s womb and be born, can he?’ Jesus answered, ‘Truly, truly, I say to you, unless one is **born of water and the Spirit**, he cannot enter into the kingdom of God.’”

11. Baptized into the death of Christ - Romans 6:3-6
“Or do you not know that all of us who have been **baptized into Christ Jesus** have been **baptized into his death**? Therefore we have been buried with Him through baptism into death, in order that as Christ was raised from the dead through the glory of the Father, so we too might walk in newness of life. For if we have been become united with *Him* in the likeness of His death, certainly we shall be also *in the likeness* of His resurrection, knowing this, that our old self was crucified with *Him*, that our body of sin might be done away with, that we should no longer be slaves to sin.”

12. Become a child of God — Gal. 3:26, 27
“For you are **all sons of God through faith in Christ Jesus**. **For all of you who were baptized into Christ have clothed yourselves with Christ.**”

13. Be clothed with Christ — Gal. 3:27 above

14. Enter into Christ — Gal. 3:27 and Romans 6:3 above

NOTE 1 - The phrase “**in Christ**” or “**into Christ**” is very significant! When we enter into Christ, we then are found “**in Christ**” and it is “**in Christ**” that all spiritual blessings are given to us (Eph. 1:3, “Blessed be the God and Father of our Lord Jesus Christ, who has blessed us with every spiritual blessing in the heavenly places **in Christ**”).

Rom. 3:24 — “being justified as a gift by His grace through the redemption which **is in Christ Jesus**.”

Rom. 6:11— “Even so consider yourselves to be dead to sin, but alive to God **in Christ Jesus**.”

Rom. 6:23 — “For the wages of sin is death, but the free gift of God is eternal life **in Christ Jesus our Lord**.”

Rom. 8:1 — “There is therefore now **no condemnation for those who are in Christ Jesus**.”

Rom. 12:5 — “So we, who are many, are one body **in Christ**, and individually members one of one another.”

“यीशु ने उत्तर दिया, और उस से कहा, मैं तुम से सच सच सच कहता हूँ, कि जब तक कोई नया जन्म न ले, वह परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकता।” नीकुदेमुस ने उससे कहा, “मनुष्य जब बूढ़ा हो जाए तो उसका जन्म कैसे हो सकता है? वह अपनी माँ के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म नहीं ले सकता, है ना?” यीशु ने उत्तर दिया, मैं तुम से सच सच सच कहता हूँ, जब तक कोई जल और आत्मा से न जन्मे, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।”

11. मसीह की मृत्यु में बपतिस्मा लिया- रोमियों 6:3-6
“या क्या तुम नहीं जानते कि हम सब ने, जिन्होंने यीशु मसीह का बपतिस्मा लिया है, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया है? इसलिथे हम उसके साथ मृत्यु के बपतिस्मे के द्वारा गाड़े गए, कि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुआँ में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ एक हो गए हैं, तो निश्चित रूप से हम भी उसके पुनरुत्थान की समानता में होंगे, यह जानते हुए कि हमारा पुराना शरीर उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था, ताकि हमारे पाप के शरीर को दूर किया जा सके, कि हम फिर पाप के दास न रहें।”

12. भगवान की संतान बनें -लड़की 3:26, 27
“क्योंकि मसीह यीशु पर विश्वास करने के द्वारा तुम सब परमेश्वर की संतान हो। क्योंकि तुम सभी ने जिन्होंने मसीह में बपतिस्मा लिया था, अपने आप को मसीह पहिन लिया है।”

13. मसीह को पहिन लो -लड़की 3:27 ऊपर

14. मसीह में प्रवेश करें -लड़की 3:27 और रोमियों 6:3 ऊपर

नोट 1 - वाक्यांश “मसीह में” या “मसीह में” बहुत महत्वपूर्ण है! जब हम मसीह में प्रवेश करते हैं, तब हम “मसीह में” पाए जाते हैं और यह “मसीह में” है कि हमें सभी आत्मिक आशीषें दी जाती हैं (इफ. 1:3, “हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जिन्होंने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में हर प्रकार की आत्मिक आशीष दी है”)।

ROM| 3:24 - “उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, दान के रूप में धर्मी ठहरे।”

ROM| 6:11- “वैसे ही अपने आप को पाप के लिये मरा हुआ समझो, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो।”

ROM| 6:23 - “क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का मुफ्त दान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।”

ROM| 8:1 - “इसलिये अब जो मसीह यीशु में हैं उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं।”

ROM| 12:5 - “इस प्रकार हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह हैं, और आपस में एक दूसरे के अंग हैं।”

2 Cor. 5:17 — "...Therefore if any man is **in Christ, he is a new creature**; the old things passed away; behold, new things have come."

2 Cor. 5:21 — "He made Him who knew no sin to be sin on our behalf, that we might become the righteousness of God **in Him**."

Gal. 3:28 — "There is neither Jew nor Greek, there is neither slave nor free man, there is neither male nor female; for you are all one **in Christ Jesus**."

Eph. 1:7 — "**In Him** we have redemption through His blood, the forgiveness of our trespasses, according to the riches of His grace."

Eph. 1:11 — "**In Him** also we have obtained an inheritance."

Eph. 2:6 — "and raised us up with Him, and seated us with Him in the heavenly places **in Christ Jesus**."

Eph. 2:7 — "in order that in the ages to come He might show the surpassing riches of His grace in kindness toward us **in Christ Jesus**."

Eph. 2:13 — "but now **in Christ Jesus** you who formerly were far off have been brought near by the blood of Christ."

Eph. 3:6 — "that the Gentiles are fellow heirs and fellow members of the body, and fellow partakers of the promise **in Christ Jesus** through the gospel."

Eph. 3:12 — "**in whom** we have boldness and confident access through faith in Him."

Phil. 3:9 — "and may be found **in Him**, not having a righteousness of my own derived from the Law, but that which is through faith in Christ, the righteousness which comes from God on the basis of faith."

Col. 2:10 — "and **in Him** you have been made complete, and He is the head over all rule and authority."

1 Thess. 4:16 — "...For the Lord Himself will descend from heaven with a shout, with the voice of an archangel, and with the trumpet of God; and the dead **in Christ** will rise first."

2 Tim. 1:1 — "Paul, an apostle of Jesus Christ by the will of God, according to the promise of life **in Christ Jesus**."

2 Tim 1:9 — "who has saved us and called us with a holy calling, not according to our works, but according to His

2 कोर. 5:17 — "... सो यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है; पुरानी बातें बीत गई; देखो, नई बातें आई हैं।"

2 कोर. 5:21 - "जिसने पाप को न जाना, उसे उस ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में परमेश्वर की धार्मिकता ठहरें।"

लड़की 3:28 — "न यहूदी, न यूनानी, न दास, न स्वतन्त्र मनुष्य, न नर न स्त्री; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।"

इफ. 1:7 — "उस में हमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपने अपराधों की क्षमा, उसके अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है।"

इफ. 1:11 — "उसी में भी हमें विरासत मिली है।"

इफ. 2:6 - "और हमें उसके साथ जिलाया, और उसके साथ स्वर्ग में मसीह यीशु में बिठाया।"

इफ. 2:7 - "कि आने वाले युगों में वह अपने अनुग्रह के अपार धन को हम पर मसीह यीशु में हम पर प्रगट करे।"

इफ. 2:13 — "परन्तु अब मसीह यीशु में तुम जो पहिले दूर दूर थे, मसीह के लोहू के द्वारा निकट आ गए हो।"

इफ. 3:6 - "कि अन्यजाति लोग संगी वारिस और देह के संगी अंग, और सुसमाचार के द्वारा मसीह यीशु में प्रतिज्ञा के संगी भागी हैं।"

इफ. 3:12 — "जिस में उस पर विश्वास करने के द्वारा हमें हियाव और दृढ़ विश्वास है।"

फिल. 3:9 - "और उस में पाया जा सकता है, जो मेरी ओर से व्यवस्था से प्राप्त की गई धार्मिकता नहीं है, लेकिन वह है जो मसीह में विश्वास के माध्यम से है, वह धार्मिकता जो विश्वास के आधार पर भगवान से आती है।"

कुलु0 2:10 — "और उसी में तुम सिद्ध किए गए हो, और वह सारे नियम और अधिकार का प्रधान है।"

1 थीस। 4:16 - "... क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा, जिसका ललकार, प्रधान स्वर्गदूत का शब्द, और परमेश्वर की तुरही के साथ होगा; और मसीह में मरने वाले पहले उदित होंगे।"

2 टिम। 1:1 — "पौलुस, परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित, उस प्रतिज्ञा के अनुसार जो मसीह यीशु में जीवन की है।"

2 तीमुथियुस 1:9 - "जिसने हमारा उद्धार किया है और हमें पवित्र बुलाहट के साथ बुलाया है, हमारे कामों के अनुसार नहीं, बल्कि अपने उस उद्देश्य और अनुग्रह के अनुसार जो हमें मसीह यीशु में अनंत काल से मिला है।"

2 तीमुथियुस 2:10 - "इस कारण मैं चुने हुआ के लिये सब कुछ सहता हूँ, कि वे भी उस उद्धार को पाएं जो मसीह यीशु में है, और उस से अनन्त महिमा भी मिलती है।"

own purpose and grace which was given us **in Christ Jesus** from all eternity.”

2 Tim 2:10 — “For this reason I endure all things for the sake of those who are chosen, that they also may obtain the salvation which is **in Christ Jesus and with it eternal glory.**”

1 John 3:5 — “And you know that He appeared in order to take away sins; and **in Him** there is no sin.”

1 John 5:11 — “And the witness is this, that God has given us eternal life, and this life is **in His Son.**”

NOTE 2. This question are often asked: “Do I have to be baptized in order to be saved?” It might be easier to reply if we asked:

“Do I have to be born of the water and the Spirit in order to be saved?”

“Do I have to have my sins washed away in order to be saved?”

“Do I have to be a child of God in order to be saved?”

“Do I have to be **‘in Christ’** to be saved?”

The answer to all these questions is the same – (“**yes!**”) - Since it is **in Christ** that all these blessings are bestowed and we are “baptized into Christ”; that is, we come into Christ in the act of being baptized. Baptism is obviously necessary for a sinner to be saved! It is good to remember that the act of baptism is not a work man does whereby he earns salvation. Instead it is, as we will see in the next section of this study, “an appeal to God for a good conscience – through the resurrection of Jesus Christ.”

Questions

- Who are those that will be condemned?
 - ___ No one as Jesus saves everybody
 - ___ Those who disbelieve, do not obey, the Gospel
- Who will not see the Kingdom of God?
 - ___ Jews
 - ___ Blind
 - ___ Those who are not born again
- The penitent believer who is baptized into Christ Jesus has been baptized into His death.

True ___ False ___

- All in Christ have been blessed with all spiritual blessings

True ___ False ___

- What does one have to do to be saved
 - ___ be baptized into Christ death
 - ___ be born of the water and the Spirit
 - ___ have their sins washed away

1 यूहन्ना 3:5 — “और तुम जानते हो कि वह पापों को हर लेने के लिये प्रकट हुआ; और उस में कोई पाप नहीं।”

1 यूहन्ना 5:11 — “और यह साक्षी है कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है, और यह जीवन उसके पुत्र में है।”

नोट 2 यह प्रश्न अक्सर पूछा जाता है: “क्या मुझे उद्धार पाने के लिए बपतिस्मा लेना होगा?” अगर हम पूछें तो जवाब देना आसान हो सकता है:

“क्या मुझे उद्धार पाने के लिए जल और आत्मा से जन्म लेना आवश्यक है?”

“क्या मुझे उद्धार पाने के लिए अपने पापों को धोना पड़ेगा?”

“क्या मुझे उद्धार पाने के लिए परमेश्वर की संतान होना आवश्यक है?”

“क्या मुझे उद्धार पाने के लिए ‘मसीह में’ होना आवश्यक है?”

इन सभी प्रश्नों का उत्तर एक ही है - (“हाँ!”) - चूंकि यह मसीह में है कि ये सभी आशीषें प्रदान की जाती हैं और हम “मसीह में बपतिस्मा” लेते हैं; अर्थात्, हम बपतिस्मा लेने के कार्य में मसीह में आते हैं। एक पापी को बचाने के लिए बपतिस्मा स्पष्ट रूप से आवश्यक है! यह याद रखना अच्छा है कि बपतिस्मा का कार्य कोई ऐसा कार्य नहीं है जिसे मनुष्य करता है जिससे वह मोक्ष अर्जित करता है। इसके बजाय, जैसा कि हम इस अध्ययन के अगले भाग में देखेंगे, “ईश्वर से एक अच्छे विवेक के लिए अपील - यीशु मसीह के पुनरुत्थान के माध्यम से।”

प्रश्न

- वे कौन हैं जिनकी निंदा की जाएगी?
 - ___ यीशु के समान कोई नहीं सबको बचाता है
 - ___ जो अविश्वास करते हैं, वे सुसमाचार का पालन नहीं करते हैं
- परमेश्वर के राज्य को कौन नहीं देखेगा?
 - ___ यहूदी
 - ___ अंधा
 - ___ जिनका दोबारा जन्म नहीं हुआ है
- पश्चात्ताप करने वाला आस्तिक जिसने मसीह यीशु में बपतिस्मा लिया है, उसकी मृत्यु में बपतिस्मा लिया गया है।
सही गलत ___
- मसीह में सभी को सभी आध्यात्मिक आशीषों से आशीषित किया गया है
सही गलत ___
- बचने के लिए क्या करना होगा
 - ___ मसीह की मृत्यु में बपतिस्मा लें
 - ___ जल और आत्मा से उत्पन्न हो
 - ___ उनके पाप धुल जाएं
 - ___ भगवान की संतान हो
 - ___ मसीह में हो
 - ___ सब से ऊपर
 - ___ बी, सी, डी और ई

- d. _____ be a child of God
- e. _____ be in Christ
- f. _____ all the above
- g. _____ b, c, d and e

SHOULD A PERSON UNDERSTAND THAT HIS SINS ARE BEING FORGIVEN WHEN HE IS BAPTIZED?

I believe the answer is yes, he does. These are the reasons why:

Lesson 2

1. In Baptism A Sinner Cries Out To God To Save Him

- a. **Acts 22: 16 — “And now why do you delay? Arise and be baptized, and wash away your sins, calling on His name.”** This passage shows that we are baptized to have our sins washed away and in that action of being baptized, we are calling on the name of the Lord. To call on the name of the Lord means to invoke Him to action. **(See Call on the name of the Lord page13.)**

Question: In baptism, what are we calling on the Lord to do?

Answer: To save us! To wash away our sins!

But what if we don't feel the need to be saved, because we don't think Jesus saves or we don't think we are lost or we don't really know what we're doing or because we think we are already saved?

In this case, how could we be calling on the Lord to save us in baptism? If we didn't feel the need to be saved, we couldn't be calling on the Lord to save us! True, scriptural, baptism is an act in which we are asking the Lord to save us from our sins!

This is not to say that for a person's baptism to be valid, he must say aloud words like: “Lord save me from my sins”. Rather, it means that we are being baptized for that purpose.

- b. **1 Peter 3: 21 — “Corresponding to that (eight souls saved by water in Noah's ark), baptism now saves you — not the removal of dirt from the flesh, but an appeal to god for a good conscience — through the resurrection of Jesus Christ.”**

Baptism, according to Peter, is not an outer cleansing of dirt from the physical body. Rather, the baptism that saves us is an “appeal to God for a good conscience.” It is a prayer (an appeal, a petition, a request) to God for Him to cleanse our guilty soul of the guilt of sin. This is the very same thought expressed in Acts 22:16 above.

h.

क्या एक व्यक्ति को यह समझना चाहिए कि बपतिस्मा लेने पर उसके पाप क्षमा किए जा रहे हैं?

मुझे विश्वास है कि उत्तर हाँ है, वह करता है। ये कारण हैं:

पाठ 2

- 1. **बपतिस्मा में एक पापी परमेश्वर को बचाने के लिए पुकारता है**
 - c. **प्रेरितों के काम 22:16 — “और अब तुम देर क्यों करते हो? उठो और बपतिस्मा लो, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धोओ।”** यह मार्ग दिखाता है कि हमने अपने पापों को धोने के लिए बपतिस्मा लिया है और बपतिस्मा लेने की उस क्रिया में, हम प्रभु के नाम का आह्वान कर रहे हैं। भगवान के नाम का आह्वान करने का अर्थ है उन्हें कार्रवाई के लिए आमंत्रित करना। (प्रभु के नाम की पुकार पृष्ठ 13 देखें।)

प्रश्न: बपतिस्मे में, हम प्रभु को क्या करने के लिए बुला रहे हैं?

उत्तर: हमें बचाने के लिए! हमारे पापों को धोने के लिए!

लेकिन क्या होगा अगर हमें बचाए जाने की आवश्यकता महसूस नहीं होती है, क्योंकि हमें नहीं लगता कि यीशु बचाता है या हमें नहीं लगता कि हम खो गए हैं या हम वास्तव में नहीं जानते कि हम क्या कर रहे हैं या क्योंकि हमें लगता है कि हम पहले से ही हैं बचाया?

इस मामले में, हम कैसे बपतिस्मे में हमें बचाने के लिए प्रभु को पुकार सकते हैं? यदि हमें बचाए जाने की आवश्यकता महसूस नहीं होती, तो हम हमें बचाने के लिए प्रभु को पुकार नहीं सकते थे! सच है, शास्त्रवचन, बपतिस्मा एक ऐसा कार्य है जिसमें हम प्रभु से हमारे पापों से बचाने के लिए कह रहे हैं!

इसका मतलब यह नहीं है कि किसी व्यक्ति का बपतिस्मा वैध होने के लिए, उसे ऊंचे शब्दों में कहना चाहिए: "भगवान मुझे मेरे पापों से बचाओ"। इसके बजाय, इसका मतलब है कि हमें उसी मकसद से बपतिस्मा दिया जा रहा है।

- d.1 **पतरस 3:21 - "उसी के अनुरूप (नूह के सन्दूक में पानी के द्वारा बचाई गई आठ आत्माएं), बपतिस्मा अब आपको बचाता है - मांस से गंदगी को हटाने के लिए नहीं, बल्कि एक अच्छे विवेक के लिए भगवान से अपील - यीशु के पुनरुत्थान के माध्यम से क्राइस्ट।"**

पीटर के अनुसार, बपतिस्मा भौतिक शरीर से गंदगी की बाहरी सफाई नहीं है। इसके बजाय, बपतिस्मे जो हमें बचाता है, वह है “परमेश्वर से अच्छे विवेक के लिए बिनती करना।” यह ईश्वर से प्रार्थना (एक अपील, एक याचिका, एक अनुरोध) है कि वह हमारी दोषी आत्मा को पाप के अपराध से मुक्त करे। यह वही विचार है जो ऊपर प्रेरितों के काम 22:16 में व्यक्त किया गया है।

ध्यान दें कि विभिन्न अनुवादक 1 पतरस 3:21 में इस वाक्यांश का अनुवाद कैसे करते हैं: "बपतिस्मा..."

Notice how various translators render this phrase in 1 Peter 3:21: **“Baptism is...**

- an **appeal** to God for a good conscience” – NASB
- an **appeal** to God for a good conscience” – RSV, NRSV
- an **appeal** to God for a good conscience” – ESV
- **making you free** from the sense of sin before God” – Basic English
- **the prayer** for a clean conscience before God” – Moffatt (1935)
- an **appeal** to God from [or for] a clean conscience” – New Living Translation
- [the] **demand as before** God of a good conscience” – Darby
- the **craving** of a good conscience after God” – Weymouth
- the **asking** of a good conscience in God” – Wycliffe New Testament
- the **question** of a good conscience in regard to God” – Young’s Literal
- the **interrogation** of a good conscience toward God” – ASV
- [**providing you with**] the answer of a good and clear conscience (inward cleanness and peace) before God” – Amplified Bible
- **asking** God for a pure heart” – Easy To Read Version
- **making you free from** the sense of sin before God” – Bible in Basic English
- the **request** unto God for a good conscience” – Rotherham (1897)
- the **prayer** for a good conscience toward God” – Montgomery (1924)
- **the craving for** a conscience right with God” – Goodspeed (1935)

Some other translations or paraphrases render this phrase differently:

- the **answer** of a good conscience toward God. NKJV, KJV
- the **pledge** (or response) of a good conscience toward God. NIV
- It **means turning** to God with a clear conscience. Contemporary

English Version

- It **means we are saved** from the punishment of sin and go to God in prayer with a heart that says we are right. New Life Version

In the New International Version it is “the pledge of a good conscience toward God,” as if it were because we are already saved and having a good conscience, instead

- एक अच्छे विवेक के लिए ईश्वर से अपील" - NASB
- एक अच्छे विवेक के लिए भगवान से अपील" - RSV, NRSV
- एक अच्छे विवेक के लिए भगवान से अपील" - ESV
- **आपको मुक्त कर रहा है** भगवान के सामने पाप की भावना से”- मूल अंग्रेजी
- **प्रार्थना** भगवान के सामने एक साफ विवेक के लिए”- मोफैट (1935)
- एक स्वच्छ अंतःकरण से [या के लिए] परमेश्वर से एक अपील" - न्यू लिविंग ट्रांसलेशन
- [द] एक अच्छे विवेक के भगवान के सामने की मांग”- डारबी
- भगवान के बाद एक अच्छे अंतःकरण की लालसा" - वेमाउथ
- भगवान में एक अच्छे विवेक की मांग" - वार्डक्लिफ न्यू टेस्टामेंट
- भगवान के संबंध में एक अच्छे विवेक का प्रश्न”- यंग्स लिटरल
- भगवान के प्रति एक अच्छे विवेक की पूछताछ" - ASV
- [आपको प्रदान करते हुए] भगवान के सामने एक अच्छे और स्पष्ट विवेक (आंतरिक शुद्धता और शांति) का जवाब”- एम्प्लीफाइड बाइबिल
- **पूछ** शुद्ध हृदय के लिए ईश्वर”- पढ़ने में आसान संस्करण
- **आपको मुक्त कर रहा है** भगवान के सामने पाप की भावना”- बेसिक अंग्रेजी में बाइबिल
- एक अच्छे विवेक के लिए भगवान से अनुरोध"-रॉदरहैम (1897)
- भगवान के प्रति एक अच्छे विवेक के लिए प्रार्थना”- मोंटगोमरी (1924)
- **की लालसा** भगवान के साथ एक विवेक सही”-गुडस्पीड (1935)

कुछ अन्य अनुवाद या पैराफ्रेश इस वाक्यांश को अलग तरह से प्रस्तुत करते हैं:

- परमेश्वर के प्रति एक अच्छे विवेक का उत्तर। एनकेजेवी, केजेवी
- भगवान के प्रति एक अच्छे विवेक की प्रतिज्ञा (या प्रतिक्रिया)। एनआईवी
- इसका अर्थ है स्पष्ट विवेक के साथ ईश्वर की ओर मुड़ना। समकालीन

अंग्रेजी संस्करण

- इसका मतलब है कि हम पाप की सजा से बच गए हैं और भगवान के पास जाते हैं

दिल से प्रार्थना जो कहती है कि हम सही हैं। नया जीवन संस्करण

न्यू इंटरनेशनल वर्जन में यह "ईश्वर के प्रति एक अच्छे विवेक की प्रतिज्ञा" है, जैसे कि ऐसा इसलिए था क्योंकि हम पहले से ही बचाए गए हैं और एक अच्छा विवेक रखते हैं, बजाय "के लिए" या "के लिए" पापों की क्षमा के लिए होने के लिए एक अच्छा विवेक।

of being “for” or “unto” remission of sins in order to have a good conscience.

But it is rendered by most other translations as an appeal to God for “cleansing” in order to “have ... no more consciousness of sins” (Hebrews 10:2), in accord with Acts 2:38, which speaks of it as “for the remission of sins.” This would make baptism an overt prayer for pardon, without which surely baptism itself would be of no avail.

This seems to not be the easiest phrase to translate. Beasley-Murray makes this comment: “...the disputed phrase can be rendered either as a ‘prayer to God for a good conscience’ or a ‘pledge to God to maintain a good conscience’.

On the first interpretation baptism is declared to be an appeal to God on the part of the baptized, which appeal is answered through the saving act of the risen Christ; this personal dealing between the believer and His Lord makes [baptism] what it is.”

Theological Dictionary of the New Testament (edited by Kittel in Germany, 1935; translated by Bromily in America, 1964): “Prayer to God for a good conscience” (Vol. II, p.688), with the following comment:

“In view of v.21 we should expect *alla* to be followed by a cleansing in the spiritual sense. Thus the request for a good conscience is to be construed as a prayer for the remission of sins. ... Remission of sins is closely related to baptism from the very outset (Mk.1:4 and par.; Acts 2:38.) This makes a number of other passages fall beautifully into place. For one thing, a “good conscience” (Acts 23:1) is a “conscience void of offence toward God and men” (Acts 24:16). For another thing, it harmonizes with what Ananias, sent by the Lord to the believing and penitent Saul of Tarsus, told him yet to do: “arise, and be baptized, and wash away thy sins, calling on the name of the Lord” (Acts 22:16, King James Version; or “calling on his name,” American Standard Version).”

It is said: “For there is no distinction between the Jew and the Greek: for the same Lord is Lord of all, **and is rich unto all that call upon him: for, whosoever shall call upon the name of the Lord shall be saved**” (Romans 10:12-13). “Calling upon the name of the Lord” or “calling upon him” or praying to him as Stephen did while being stoned, was “calling upon the Lord, saying, “Lord Jesus, receive my spirit” (Acts 7:59).

Saul of Tarsus was to “be baptized,” “calling upon the name of the Lord,” in order to have his “sins washed away” and thus have a “good conscience toward God.” His baptism itself, being “for” or “unto the remission of

लेकिन अधिकांश अन्य अनुवादों द्वारा इसे “शुद्ध करने” के लिए परमेश्वर से अपील के रूप में अनुवादित किया गया है ताकि “पापों के बारे में और अधिक चेतना न हो” (इब्रानियों 10:2), प्रेरितों के काम 2:38 के अनुसार, जो इसके बारे में बात करता है जैसे “पापों की क्षमा के लिए।” यह बपतिस्मा को क्षमा के लिए एक स्पष्ट प्रार्थना बना देगा, जिसके बिना निश्चित रूप से बपतिस्मा का कोई फायदा नहीं होगा।

ऐसा लगता है कि यह अनुवाद करने का सबसे आसान वाक्यांश नहीं है। बेस्ली-मरे यह टिप्पणी करते हैं: “...विवादित वाक्यांश को या तो ‘एक अच्छे विवेक के लिए भगवान से प्रार्थना’ या ‘एक अच्छा विवेक बनाए रखने के लिए भगवान से प्रतिज्ञा’ के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। पहली व्याख्या पर बपतिस्मा को बपतिस्मा देने वाले की ओर से भगवान के लिए एक अपील के रूप में घोषित किया जाता है, जिसकी अपील का उत्तर पुनर्जीवित मसीह के बचत कार्य के माध्यम से दिया जाता है; आस्तिक और उसके भगवान के बीच यह व्यक्तिगत व्यवहार [बपतिस्मा] बनाता है कि यह क्या है।”

थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टेस्टामेंट (जर्मनी में किटेल द्वारा संपादित, 1935; ब्रोमिली द्वारा अमेरिका में अनुवादित, 1964): “एक अच्छे विवेक के लिए भगवान से प्रार्थना” (वॉल्यूम II, पृष्ठ 688), निम्नलिखित टिप्पणी के साथ:

“व.21 को ध्यान में रखते हुए हमें उम्मीद करनी चाहिए कि अल्ला का आध्यात्मिक अर्थों में शुद्धिकरण किया जाएगा। इस प्रकार एक अच्छे विवेक के अनुरोध को पापों की क्षमा के लिए प्रार्थना के रूप में समझा जाना चाहिए। ... पापों का निवारण शुरू से ही बपतिस्मे के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है (मरकुस 1:4 और पैरा।; प्रेरितों 2:38।) यह कई अन्य अंशों को खूबसूरती से जगह देता है। एक बात के लिए, एक “अच्छा विवेक” (प्रेरितों के काम 23:1) एक “विवेक है जो परमेश्वर और मनुष्यों के प्रति अपराध से रहित है” प्रेरितों के काम 24:16। एक और बात के लिए, यह हनन्याह के साथ मेल खाता है, जिसे प्रभु ने तरसुस के विश्वासी और पश्चाताप करने वाले शाऊल के पास भेजा था, जिसने उसे अभी तक करने के लिए कहा था: “उठो, और बपतिस्मा लो, और अपने पापों को धो लो, प्रभु के नाम से पुकारो” (प्रेरितों के काम 22:16, किंग जेम्स वर्शन; या “उसके नाम से पुकारना,” अमेरिकी मानक संस्करण)।

यह कहा गया है: “क्योंकि यहूदी और यूनानी में कोई भेद नहीं; क्योंकि एक ही प्रभु सबका स्वामी है, और जितने उसे पुकारते हैं उन सभी के लिये धनी है; क्योंकि जो कोई यहोवा का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।” (रोमियों 10:12-13)। “प्रभु के नाम से पुकारना” या “उसे पुकारना” या उससे प्रार्थना करना जैसे स्तिफनुस ने पत्थरवाह किए जाने के दौरान किया था, “प्रभु को पुकारते हुए कह रहा था, “हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण करो” (प्रेरितों के काम 7:59)।

तरसुस के शाऊल को “बपतिस्मा लेना”, “प्रभु के नाम से पुकारना” था, ताकि उसके “पाप धुलें” और इस प्रकार “परमेश्वर के प्रति अच्छा विवेक” हो। उसका बपतिस्मा, “के लिए” या “पापों की क्षमा के लिए” होने के नाते, “अच्छे विवेक” के लिए क्षमा के लिए एक स्पष्ट अनुरोध था।

sins,” was an overt request for pardon in order to have a “good conscience.”

The Greek word under consideration in 1 Peter 3:21 is the noun *eperotema*, the verb form of which is *eperotao*, meaning to ask; also, according to Thayer, “by a usage foreign to the Greeks, to address one with a request or demand; to ask of or demand of one”, citing Matthew 16:1. Arndt & Gingrich likewise cite Matthew 16:1 as an example of meaning to ask someone for something.” Kittel-Bromily trace the change of the word’s meaning to include (in koine Greek of New Testament times) the last mentioned sense, which was taking place at the time of the LXX (about 250 B.C.) Accordingly, Arndt & Gingrich define *eperotema* as: “1. question; 2. request, appeal, and cite as an example ‘an appeal to God for a clear conscience 1 Peter 2:21’, in harmony with the goodly number of versions cited above, and Kittel.”

Even many scholars who do not wish to concede baptism as being “for,” or “unto remission of sins,” acknowledge that “answer” is not a satisfactory rendering the Greek verb. But, if not, then the above must be its most likely meaning. It is to me the most satisfactory from every significant angle.

The word “appeal” as used by the NASB, RSV, and others seems to make more sense, meaning that we ask God for a good conscience in the act of baptism. This appears obvious when we read “baptism now saves us.” There is no way for sinners to have a good conscience before being saved. That is what it really means to be saved – to be forgiven of our sins. We are not saved when we “pledge to God to maintain a good conscience.” That would more closely define repentance. On the other hand, when we, in baptism, appeal to God to cleanse our conscience, he does just that - He saves us!

It is not the sinner saying “I promise to never sin again!” that saves him. Rather it is the sinner crying out in the act of baptism “Lord, please, save me!” that saves him. That is the meaning of baptism.

That “appeal” is the better translation and is re-enforced by comparing Hebrews 9:13, 14; Romans 6:3-6; Acts 22:16 and 1 Peter 3:21.

Hebrews 9:13, 14 “For if the blood of goats and bulls and the ashes of a heifer sprinkling those who have been defiled, sanctify for the cleansing of the flesh, how much more will the blood of Christ, who through the eternal Spirit offered Himself without blemish to God, **cleanses your conscience from dead works to serve the living God?**”

1 पतरस 3:21 में विचाराधीन यूनानी शब्द संज्ञा एपेरोटेमा है, जिसका क्रिया रूप एपेरोटाओ है, जिसका अर्थ पूछना है; साथ ही, थायर के अनुसार, “यूनानियों के लिए एक विदेशी प्रयोग द्वारा, एक अनुरोध या मांग के साथ एक को संबोधित करने के लिए; मत्ती 16:1 का हवाला देते हुए एक की माँग करना या माँगना”। Arndt और Gingrich इसी तरह मत्ती 16:1 को अर्थ के उदाहरण के रूप में किसी से कुछ माँगने के लिए उद्धृत करते हैं। “किट्टेल-ब्रोमिली शब्द के अर्थ के परिवर्तन का पता लगाता है (नए नियम के समय के कोइन ग्रीक में) अंतिम उल्लेखित अर्थ, जो एलएक्सएक्स (लगभग 250 ईसा पूर्व) के समय हो रहा था, तदनुसार, अरंड्ट और गिंगरिच ने एपेरोटेमा को परिभाषित किया: “1. प्रश्न; 2. अनुरोध, अपील, और उदाहरण के रूप में उद्धृत करें ‘एक स्पष्ट विवेक के लिए भगवान से अपील 1 पतरस 2:21’, ऊपर उद्धृत संस्करणों की अच्छी संख्या के अनुरूप, और किट्टेल।

यहाँ तक कि बहुत से विद्वान जो बपतिस्मा को “के लिए” या “पापों की क्षमा के लिए” होने के रूप में स्वीकार नहीं करना चाहते हैं, स्वीकार करते हैं कि “उत्तर” ग्रीक क्रिया का संतोषजनक अनुवाद नहीं है। लेकिन, यदि नहीं, तो उपरोक्त इसका सबसे संभावित अर्थ होना चाहिए। यह मेरे लिए हर महत्वपूर्ण कोण से सबसे संतोषजनक है।

शब्द “अपील” जैसा कि NASB, RSV, और अन्य द्वारा प्रयोग किया जाता है, अधिक अर्थपूर्ण प्रतीत होता है, जिसका अर्थ है कि हम बपतिस्मा के कार्य में परमेश्वर से एक अच्छे विवेक की माँग करते हैं। यह स्पष्ट प्रतीत होता है जब हम पढ़ते हैं “बपतिस्मा अब हमें बचाता है।” पापियों के पास बचाए जाने से पहले एक अच्छा विवेक रखने का कोई तरीका नहीं है। उद्धार पाने का वास्तव में यही अर्थ है - हमारे पापों के लिए क्षमा किया जाना। जब हम “परमेश्वर से पवित्र विवेक बनाए रखने की प्रतिज्ञा” करते हैं, तो हम बचाए नहीं जाते। यह पश्चाताप को अधिक बारीकी से परिभाषित करेगा। दूसरी ओर, जब हम, बपतिस्मे में, परमेश्वर से हमारे अंतःकरण को शुद्ध करने की अपील करते हैं, तो वह वही करता है - वह हमें बचाता है!

यह पापी नहीं है जो कह रहा है “मैं फिर कभी पाप नहीं करने का वादा करता हूँ!” जो उसे बचाता है। बल्कि रोता हुआ पापी है बपतिस्मा के कार्य में “प्रभु, कृपया, मुझे बचाओ!” जो उसे बचाता है। बपतिस्मा का यही अर्थ है।

वह “अपील” बेहतर अनुवाद है और इब्रानियों 9:13, 14; रोमियों 6:3-6; प्रेरितों के काम 22:16 और 1 पतरस 3:21।

इब्रानियों 9:13, 14 “क्योंकि यदि बकरों और सांडों का लोहू और बछिया की राख अशुद्ध लोगों पर छिड़का जाए, तो मांस को शुद्ध करने के लिये पवित्र किया जाए, तो मसीह का लोहू, जिसने अपने आप को अनन्त आत्मा के द्वारा परमेश्वर को निर्दोष ठहराया है, कितना अधिक न होगा। जीवित परमेश्वर की उपासना करने के लिये अपने विवेक को मरे हुए कामों से शुद्ध करो?”

रोमियों 6:3 “या क्या तुम नहीं जानते कि हम सब ने, जिन्होंने यीशु मसीह का बपतिस्मा लिया है, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया है?”

Romans 6:3 “Or do you not know that all of us who have been baptized into Christ Jesus have been **baptized into his death?**”

Acts 22:16 “Arise and be baptized, and wash away your sins, **calling on His name.**”

1 Peter 3: 21 “... baptism now saves you — not the removal of dirt from the flesh, but an appeal to God for a good conscience — through the resurrection of Jesus Christ.”

From these we see that our conscience is cleansed by the blood of Christ, in baptism we contact his blood (death) and in baptism we call on the Lord to save us. These three statements fit together perfectly. Salvation is given to us in baptism because it is in baptism that we are appealing (imploring, asking) God to cleanse our conscience by the blood of Christ.

If the person being baptized is unaware of or unbelieving in the truth that God is forgiving his sins (washing away his sins, remitting his sins, cleansing his conscience) in his baptism, then certainly he could not be asking for or appealing for forgiveness of his sins. Such lack of understanding makes his baptism not the baptism referred to in **1 Peter 3:21**, which baptism “saves” him.

The conclusion is: Salvation (forgiveness of sins), which comes from being united with God in Christ, is given when our trusting hearts appeal to God for a good conscience. We do this when we are baptized. Baptism is faith crying out to God to save, based on the death of Christ on the cross. Baptism is the biblical “sinner’s prayer”, not necessarily spoken but understood and acted out.

c. Colossians 2:12 — “buried with Him in baptism, in which you were also raised up with Him through faith in the working of God, who raised Him from the dead.”

The raising to a new life happens in, through or by means of (Greek *dia*) our faith in God’s operation or working. We, in effect, are trusting in God to save us in that act of baptism. Note that in baptism it is faith in God’s working. Baptism is God’s work, not ours.

When we are baptized, we believe (trust) that God is working. It is through our faith in His working that He works! For our baptism to be effective we must believe that God is working to raise us to a new life (save us).

Again, that’s what baptism is: crying out to God to save us and trusting that He will, based on the cleansing power of Christ’s blood.

प्रेरितों के काम **22:16** “उठो और बपतिस्मा लो, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो लो।”

1 पतरस 3:21 “... बपतिस्मा अब आपको बचाता है - मांस से गंदगी को हटाने के लिए नहीं, बल्कि एक अच्छे विवेक के लिए भगवान से अपील करता है - यीशु मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा।”

इनसे हम देखते हैं कि हमारा विवेक मसीह के खून से साफ हो गया है, बपतिस्मा में हम उसके खून (मृत्यु) से संपर्क करते हैं और बपतिस्मा में हम हमें बचाने के लिए प्रभु को बुलाते हैं। ये तीनों कथन एक साथ बिल्कुल फिट बैठते हैं। बपतिस्मा में हमें उद्धार दिया जाता है क्योंकि यह बपतिस्मा में है कि हम परमेश्वर से मसीह के लहू के द्वारा हमारे विवेक को शुद्ध करने के लिए प्रार्थना कर रहे हैं।

यदि बपतिस्मा लेने वाला व्यक्ति इस सच्चाई से अनजान या अविश्वासी है कि परमेश्वर उसके बपतिस्मा में उसके पापों को क्षमा कर रहा है (उसके पापों को धो रहा है, उसके पापों को क्षमा कर रहा है, अपने विवेक को शुद्ध कर रहा है), तो निश्चित रूप से वह क्षमा के लिए प्रार्थना या अपील नहीं कर सकता था। उसके पाप। समझ की ऐसी कमी उसके बपतिस्मा को **1 पतरस 3:21** में उल्लिखित बपतिस्मा नहीं बनाती है, जो बपतिस्मा उसे “बचाता” है।

निष्कर्ष यह है: उद्धार (पापों की क्षमा), जो मसीह में परमेश्वर के साथ एक होने से आता है, तब दिया जाता है जब हमारे भरोसेमंद हृदय एक अच्छे विवेक के लिए परमेश्वर से अपील करते हैं। हम ऐसा तब करते हैं जब हम बपतिस्मा लेते हैं। क्रूस पर मसीह की मृत्यु के आधार पर, बपतिस्मा परमेश्वर को बचाने के लिए पुकारने वाला विश्वास है। बपतिस्मा बाइबिल की “पापियों की प्रार्थना” है, जो जरूरी नहीं कि बोली जाती है बल्कि समझी जाती है और काम की जाती है।

सी। कुलुस्सियों 2:12 — “उसके साथ बपतिस्मा में दफनाया गया, जिस में उस विश्वास के द्वारा जो परमेश्वर ने उसे मरे हुआओं में से जिलाया, तुम भी उसके साथ जी उठे।”

एक नए जीवन का उत्थान, (ग्रीक दीया) के माध्यम से या ईश्वर के संचालन या कार्य में हमारे विश्वास के माध्यम से होता है। वास्तव में, हम बपतिस्मा के उस कार्य में हमें बचाने के लिए परमेश्वर पर भरोसा कर रहे हैं। ध्यान दें कि बपतिस्मा में यह परमेश्वर के कार्य में विश्वास है। बपतिस्मा परमेश्वर का कार्य है, हमारा नहीं।

जब हम बपतिस्मा लेते हैं, हम विश्वास करते हैं (भरोसा करते हैं) कि परमेश्वर कार्य कर रहा है। उसके कार्य में हमारे विश्वास के द्वारा ही वह कार्य करता है! हमारे बपतिस्मा के प्रभावी होने के लिए हमें यह विश्वास करना चाहिए कि परमेश्वर हमें एक नया करने के लिए काम कर रहा है जीवन (हमें बचाओ)।

फिर से, यही बपतिस्मा है: मसीह के लहू की सफाई करने की शक्ति के आधार पर, हमें बचाने के लिए परमेश्वर की दोहाई देना और उस पर भरोसा करना।

Call On The Name Of The Lord

Word study

To call on the name of the lord means to invoke Him to action. Read each verse in its own context and you will notice how calling on the name of the Lord means to call out to God to save, help, bless, protect, act, etc.

1 Kings 18:24 — “Then you call on the name of your gods, and I will call on the name of the LORD; and the God who answers by fire, He is God.” And all the people answered and said, “That is a good idea.”

2 Kings 5:11 But Naaman went away angry and said, “I thought that he would surely come out to me and stand and call on the name of the LORD his God, wave his hand over the spot and cure me of my leprosy.

Psalms 105:1 — “Oh, give thanks to the LORD! Call upon His name; Make known His deeds among the peoples.”

Psalms 116:3-4 — “The cords of death entangled me, the anguish of the grave came over me; I was overcome by distress and sorrow. Then I called upon the name of the LORD: ‘O LORD, I beseech Thee, save my life!’”

Psalms 116:13 — (NKJV) “I will take up the cup of salvation, And call upon the name of the LORD.”

Psalms 116:17 — (NKJV) “I will offer to You the sacrifice of thanksgiving, And will call upon the name of the LORD.”

Isaiah 12:4 — “And in that day you will say, ‘give thanks to the Lord, call on His name. Make known His deeds among the peoples; Make them remember that His name is exalted.’”

Isaiah 64:7 — “And there is no one who calls on Thy name, who arouses himself to take hold of Thee; for thou hast hidden Thy face from us, and hast delivered us into the power of our iniquities.”

Lamentations 3:55 — “I called on Thy name, O Lord, out of the lowest pit.”

Joel 2:32 — “And it will come about that whoever calls on the name of the LORD will be delivered; For on Mount Zion and in Jerusalem there will be those who escape.”

प्रभु के नाम पर पुकारें

शब्द अध्ययन

के नाम पर कॉल करने के लिए भगवान का अर्थ है उन्हें कार्रवाई के लिए आमंत्रित करना। प्रत्येक श्लोक को उसके अपने संदर्भ में पढ़ें और आप देखेंगे कि कैसे प्रभु के नाम का आह्वान करने का अर्थ है बचाने, मदद करने, आशीर्वाद देने, रक्षा करने, कार्य करने आदि के लिए ईश्वर को पुकारना।

1 राजा 18:24 — “तब तू अपने देवताओं से प्रार्थना करना, और मैं यहोवा से प्रार्थना करूंगा; और परमेश्वर जो आग से उत्तर देता है, वही परमेश्वर है।” और सभी लोगों ने उत्तर दिया और कहा, “यह एक अच्छा विचार है।”

2 राजा 5:11 परन्तु नामान क्रोधित होकर चला गया, और कहा, मैं ने तो सोचा था, कि वह निश्चय मेरे पास निकलकर खड़ा होगा, और अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करेगा, और उस स्थान पर अपना हाथ हिलाएगा, और मेरा कोढ़ ठीक कर देगा।

भजन संहिता 105:1 — “ओह, यहोवा का धन्यवाद करो! उसके नाम पर पुकारो; उसके कामों को देश देश के लोगों में प्रगट करो।”

भजन 116:3-4 - “मृत्यु की रस्सियों ने मुझे उलझा दिया, कब्र की पीड़ा मुझ पर छा गई; मैं संकट और दुख से दूर हो गया था। तब मैं ने यहोवा से प्रार्थना की, कि हे यहोवा, मैं तुझ से बिनती करता हूँ, मेरे प्राण की रक्षा कर!”

भजन 116:13 - (NKJV) “मैं उद्धार का कटोरा उठाऊंगा, और यहोवा से प्रार्थना करूंगा।”

भजन 116:17 — (NKJV) “मैं तुम्हें धन्यवाद का बलिदान चढ़ाऊंगा, और यहोवा से प्रार्थना करूंगा।”

यशायाह 12:4 - “और उस दिन तुम कहोगे, ‘प्रभु का धन्यवाद करो, उसका नाम लो। उसके कामों को देश देश के लोगों में प्रगट करो; उन्हें स्मरण दिलाना कि उसका नाम महान है।”

यशायाह 64:7 — “और कोई तेरा नाम से पुकारने वाला नहीं, जो तुझे थामने के लिए उभारा हो; क्योंकि तू ने अपना मुंह हम से छिपा रखा है, और हम को हमारे अधर्म के कामोंके वश में कर दिया है।”

विलाप 3:55 - “मैंने तेरा नाम पुकारा, हे भगवान, सबसे निचले गड्ढे में से।”

योएल 2:32 — “और ऐसा होगा कि जो कोई यहोवा से प्रार्थना करेगा वह छुड़ाया जाएगा; क्योंकि सियोन पर्वत पर और यरूशलेम में बचनेवाले होंगे।”

Zephaniah 3:9 — “For then I will give to the peoples purified lips, that all of them may call on the name of the LORD, to serve Him shoulder to shoulder.”

Zechariah 13:9 — “And I will bring the third part through the fire, refine them as silver is refined, and test them as gold is tested. They will call on My name, and I will answer them. I will say, ‘They are My people,’ And they will say, ‘The LORD is my God.’”

Acts 2:21 — “And it shall come to pass that whoever calls on the name of the LORD shall be saved.”

Acts 9:14 — “And here he has authority from the chief priests to bind all who call on Thy name.”

Acts 9:21 — “...Is this not he who in Jerusalem destroyed those who called on this name, and who had come here for the purpose of bringing them bound before the chief priests?”

Acts 22:16 — “And now why do you delay? Arise, and be baptized, and wash away your sins, calling on His name.”

Romans 10:13 — “for, Everyone who calls on the name of the Lord will be saved.”

1 Corinthians 1:2 — “to the church of God which is at Corinth, to those who have been sanctified in Christ Jesus, saints by calling, with all who in every place call upon the name of our Lord Jesus Christ, their *Lord* and ours.”

Questions

1. Through the act of baptism one realizes he is a sinful man, recognizes Jesus is Lord and savior and pleads to God to wash away his sin by the blood of Christ.

True ____ False ____

2. Baptism only washes away the dirt from the body

True ____ False ____

3. Baptism is just a tradition as one is saved when they believe Jesus is the Christ

True ____ False ____

4. One’s conscience is cleansed when God answers their appeal for forgiveness through their act of baptism.

True ____ False ____

5. Salvation comes from being united with God in Christ.

सपन्याह 3:9- "तब मैं देश देश के लोगों को पवित्र किए हुए होंठ दूंगा, कि वे सब के सब यहोवा से प्रार्थना करें, कि कन्धे से कंधा मिलाकर उसकी उपासना करें।"

जकर्याह 13:9- "और मैं तीसरे भाग को आग में झोंक दूंगा, और उन्हें चान्दी की नाई शुद्ध कर दूंगा, और उन्हें ऐसे परखूंगा जैसे सोना परखा जाता है। वे मेरा नाम पुकारेंगे, और मैं उन्हें उत्तर दूंगा। मैं कहूंगा, 'वे मेरी प्रजा हैं,' और वे कहेंगे, 'यहोवा मेरा परमेश्वर है।'"

प्रेरितों के काम 2:21- "और ऐसा होगा कि जो कोई यहोवा का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।"

प्रेरितों के काम 9:14— "और यहां उसे महायाजकों की ओर से अधिकार है, कि वह जितने तेरे नाम से पुकारते हैं उन सभी को बान्धे।"

प्रेरितों के काम 9:21- "... क्या यह वही नहीं है, जिस ने यरूशलेम में इस नाम से पुकारनेवालों को नाश किया, और जो यहां मुख्य याजकों के साम्हने बन्धे हुए लाने के लिथे आए थे?"

प्रेरितों के काम 22:16- "और अब देर क्यों करते हो? उठ, और बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।"

रोमियों 10:13- "क्योंकि जो कोई यहोवा का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।"

1 कुरिन्थियों 1:2- "परमेश्वर की कलीसिया की ओर जो कुरिन्थ में है, और जो मसीह यीशु में पवित्र किए गए हैं, हे संतों को बुलाकर, उन सभी के साथ जो हर जगह हमारे प्रभु यीशु मसीह, अपने प्रभु और हमारे नाम से पुकारते हैं।"

प्रश्न

1. बपतिस्मा के कार्य के माध्यम से व्यक्ति को पता चलता है कि वह एक पापी व्यक्ति है, पहचानता है कि यीशु ही प्रभु और उद्धारकर्ता है और परमेश्वर से उसके पाप को मसीह के लहू से धोने की याचना करता है।

सही गलत ____

2. बपतिस्मा केवल शरीर से गंदगी को धोता है

सही गलत ____

3. बपतिस्मा सिर्फ एक परंपरा है क्योंकि एक व्यक्ति को बचाया जाता है जब वे मानते हैं कि यीशु ही मसीह है

सही गलत ____

4. जब परमेश्वर उनके बपतिस्मा के कार्य के माध्यम से क्षमा के लिए उनकी अपील का उत्तर देता है तो उसका विवेक शुद्ध हो जाता है।

सही गलत ____

True ____ False ____

6. To call on the name of the Lord means to invoke Him to some type of action.

True ____ False ____

DOCTRINE OF JUSTIFICATION

Lesson 3

The doctrine of justification by faith demands that a person understand and believe that his sins are being forgiven when he is baptized. It is important, therefore, for us to know what justification means.

To help us understand this word, think about the super-religious, do-gooder, self-righteous hypocrite, pillar of the church and the dirty, rotten, no-good, traitorous, wicked, extortioner, sinner at his side.

“And He also told this parable to certain ones who **trusted in themselves that they were righteous, and viewed others with contempt**: ‘Two men went up into the temple to pray, one a Pharisee, and the other a tax-gatherer. The Pharisee stood and was praying thus to himself, ‘God, I thank Thee that I am not like other people; swindlers, unjust, adulterers, or even like this tax-gatherer. I fast twice a week; I pay tithes of all that I get.’ But the tax-gatherer, standing some distance away, was even unwilling to lift up his eyes to heaven, but was beating his breast, saying, ‘God, be merciful to me, the sinner!’” ‘I tell you, **this man went down to his house justified rather than the other**; for everyone who exalts himself shall be humbled, but he who humbles himself shall be exalted.’” (Luke 18:9-14)

a. What does it mean to be justified? What is justification?

Justification is a legal term. Justification, defined in Young's Analytical Concordance, means “A judicial sentence, declaration of right, to make or declare right.” Vine's Dictionary of New Testament Words says that justify “denotes the act of pronouncing righteous, justification, acquittal.”

The person who is justified is declared or pronounced to be righteous. (The same Greek word translated “just” 33 times in the New Testament is translated “righteous” 41 times). Declaring a person justified is the same thing as pronouncing a man righteous.

Perhaps knowing that “just” and “righteous” are two ways to translate the very same Greek word will help us understand that **to be justified** does not mean to be made “just-as-if-I” had never sinned. Just having no sin does not make us acceptable in God’s eyes. We must

5. उद्धार मसीह में परमेश्वर के साथ एक होने से आता है।
सही गलत ____

6. भगवान के नाम का आह्वान करने का अर्थ है उन्हें किसी प्रकार की कार्रवाई के लिए आमंत्रित करना।
सही गलत ____

औचित्य का सिद्धांत

अध्याय 3

विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराने का सिद्धांत यह मांग करता है कि एक व्यक्ति यह समझे और विश्वास करे कि बपतिस्मा लेने पर उसके पापों को क्षमा किया जा रहा है। इसलिए, हमारे लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि औचित्य का क्या अर्थ है।

इस शब्द को समझने में हमारी मदद करने के लिए, उसके पक्ष में अति-धार्मिक, अच्छे-अच्छे, आत्म-धर्मी पाखंडी, चर्च के स्तंभ और गंदे, सड़े हुए, अच्छे-अच्छे, देशद्रोही, दुष्ट, जबरन वसूली करने वाले, पापी के बारे में सोचें।

“और उसने यह दृष्टान्त कुछ उन लोगों से भी कहा, जो अपने आप पर भरोसा रखते थे कि वे धर्मी थे, और दूसरों को तिरस्कार की दृष्टि से देखते थे: ‘दो आदमी मंदिर में प्रार्थना करने गए, एक फरीसी, और दूसरा चुंगी लेने वाला। फरीसी खड़ा हुआ और अपने आप से इस प्रकार प्रार्थना कर रहा था, ‘भगवान, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि मैं अन्य लोगों की तरह नहीं हूँ; ठग, अन्यायी, व्यभिचारी, या यहां तक कि इस कर संग्रहकर्ता की तरह। मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूँ; जो कुछ मुझे मिलता है, उसका मैं दशमांश देता हूँ।’ परन्तु चुंगी लेने वाला कुछ दूर खड़ा था, और स्वर्ग की ओर आंखें उठाने को भी तैयार नहीं था, परन्तु छाती पीट रहा था, और कह रहा था, हे परमेश्वर, मुझ पर दया कर, पापी! मैं तुम से कहता हूँ, कि यह मनुष्य दूसरे से अधिक धर्मी ठहराए हुए आपके घर गया; क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाता है, वह छोटा किया जाएगा, परन्तु जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वह ऊंचा किया जाएगा।” (लूका 18:9-14)

एक। न्यायोचित होने का क्या अर्थ है? औचित्य क्या है?

औचित्य एक कानूनी शब्द है। यंग्स एनालिटिकल कॉनकॉर्डेंस में परिभाषित औचित्य का अर्थ है “एक न्यायिक वाक्य, अधिकार की घोषणा, अधिकार बनाना या घोषित करना।” वाइन डिक्शनरी ऑफ न्यू टेस्टामेंट वर्ड्स कहती है कि न्यायोचित ठहराना “धर्मी, धर्मी ठहराने, दोषमुक्त करने के कार्य को दर्शाता है।”

जिस व्यक्ति को न्यायोचित ठहराया जाता है उसे धर्मी घोषित या उच्चारित किया जाता है। (एक ही यूनानी शब्द का नए नियम में 33 बार अनुवाद किया गया है, जिसका अनुवाद “धर्मी” 41 बार किया गया है)। किसी व्यक्ति को धर्मी घोषित करना एक व्यक्ति को धर्मी घोषित करने के समान है।

have our sins “subtracted” and also Christ’s righteousness “added”. Justification is when the criminal is not only declared innocent of the crimes he committed but also declared to be a righteous person.

There is a difference between “being righteous” and “being declared righteous”. We are declared to be righteous the moment we are saved. We spend our lives becoming righteous as we grow spiritually into the image of Christ. Justification is exclusively a work of God in which He imputes to us the righteousness of Christ.

There are two kinds of righteousness: imputed (attributed, ascribed or reckoned) righteousness and earned righteousness. Consider Philippians 3:3-9: “for we are the true circumcision, who worship in the Spirit of God and glory in Christ Jesus and put no confidence in the flesh, although I myself might have confidence even in the flesh. If anyone else has a mind to put confidence in the flesh, I far more: circumcised the eighth day, of the nation of Israel, of the tribe of Benjamin, a Hebrew of Hebrews; as to the Law, a Pharisee; as to zeal, a persecutor of the church; as to the righteousness which is in the Law, found blameless. But whatever things were gain to me, those things I have counted as loss for the sake of Christ. More than that, I count all things to be loss in view of the surpassing value of knowing Christ Jesus my Lord, for whom I have suffered the loss of all things, and count them but rubbish so that I may gain Christ, and may be found in Him, **not having a righteousness of my own derived from the Law, but that which is through faith in Christ, the righteousness which comes from God on the basis of faith, (This is imputed righteousness).**

b. We are justified (saved, counted as righteous) by faith.

“For we maintain that **a man is justified by faith apart from works of the Law.**” (Romans 3:28)

“knowing that **a man is not justified by the works of Law but through faith in Christ Jesus**, even we have believed in Christ Jesus, that we may be justified by faith in Christ, and not by the works of the Law; since by the works of the Law shall no flesh be justified.” (Galatians 2:16)

“Now that **no one is justified by the Law before God** is evident for, ‘The Righteous Man Shall Live By Faith.’” (Galatians 3:11)

“For we also once were foolish ourselves, disobedient, deceived, enslaved to various lusts and pleasures, spending our life in malice and envy, hateful, hating one

शायद यह जानकर कि "न्यायिक" और "धर्मी" एक ही ग्रीक शब्द का अनुवाद करने के दो तरीके हैं, हमें यह समझने में मदद मिलेगी कि न्यायसंगत होना इसका मतलब यह नहीं है कि "जैसा-जैसा-मैं-मैं" ने कभी पाप नहीं किया था। केवल पाप न होने से ही हम परमेश्वर की दृष्टि में स्वीकार्य नहीं हो जाते। हमें अपने पापों को "घटाना" चाहिए और मसीह की धार्मिकता को भी "जोड़ा" जाना चाहिए। औचित्य तब होता है जब अपराधी को न केवल उसके द्वारा किए गए अपराधों के लिए निर्दोष घोषित किया जाता है बल्कि उसे एक धर्मी व्यक्ति भी घोषित किया जाता है।

"धर्मी होने" और "धर्मी घोषित किए जाने" में अंतर है। जिस क्षण हम बचाए जाते हैं, हमें धर्मी घोषित किया जाता है। जब हम आत्मिक रूप से मसीह के स्वरूप में बढ़ते हैं तो हम अपना जीवन धर्मी बनने में व्यतीत करते हैं। धर्मी ठहराना विशेष रूप से परमेश्वर का एक कार्य है जिसमें वह हमें मसीह की धार्मिकता के बारे में बताता है।

धार्मिकता दो प्रकार की होती है: आरोपित (जिम्मेदार, आरोपित या माना गया) धार्मिकता और अर्जित धार्मिकता। फिलिप्पियों 3:3-9 पर गौर करें: “क्योंकि हम ही सच्चे खतनेवाले हैं, जो परमेश्वर के आत्मा से दण्डवत करते हैं, और मसीह यीशु पर घमण्ड करते हैं, और शरीर पर भरोसा नहीं रखते, तौभी मुझे शरीर पर भी भरोसा हो। यदि किसी और को शरीर पर भरोसा रखने का मन है, तो मैं और भी अधिक: आठवें दिन खतना किया गया, इस्राएल के राष्ट्र का, बिन्यामीन के गोत्र का, इब्रानियों का एक इब्रानी; व्यवस्था के विषय में एक फरीसी; जोश के लिए, कलीसिया का सताने वाला; जो धार्मिकता व्यवस्था में है, वह निर्दोष पाई गई। परन्तु जो वस्तुएं मेरे लाभ की थीं, उन्हें मैं ने मसीह के लिथे हानि समझी है। उस से भी बढ़कर, मैं अपने प्रभु मसीह यीशु को जानने के महान मूल्य के कारण सब कुछ खो देता हूं, जिसके लिए मैंने सभी चीजों की हानि उठाई है।

बी। हम जायज हैं(बचाया गया, धर्म के रूप में गिना गया) विश्वास से।

“क्योंकि हम मानते हैं, कि व्यवस्था के कामों से अलग मनुष्य विश्वास से ही धर्मी ठहरता है।” (रोमियों 3:28)

“यह जानते हुए कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं परन्तु यीशु मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरता है, हम ने भी मसीह यीशु पर विश्वास किया है, कि हम व्यवस्था के कामों से नहीं, पर मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरें; क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी धर्मी न ठहरेगा।” (गलतियों 2:16)

“अब जब कि कोई व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर के साम्हने धर्मी नहीं ठहरता, यह प्रगट है, ‘धर्मी मनुष्य विश्वास से जीवित रहेगा।’” (गलतियों 3:11)

“क्योंकि हम भी एक बार मूर्ख थे, आज्ञा न मानने वाले, धोखा देने वाले, नाना प्रकार की अभिलाषाओं और सुखों के दास थे, और अपना जीवन द्वेष और ईर्ष्या में व्यतीत करते थे, और एक दूसरे से बैर रखते थे। परन्तु जब हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की कृपा और मानवजाति के लिए उसका प्रेम प्रकट हुआ, तो उसने हमें उन कामों के आधार पर नहीं जो हमने

another. But when the kindness of God our Savior and His love for mankind appeared, He saved us, **not on the basis of deeds which we have done in righteousness, but according to His mercy, by the washing of regeneration and renewing by the Holy Spirit**, whom He poured out upon us richly through Jesus Christ our Savior, that being justified by His grace we might be made heirs according to *the* hope of eternal life.” (Titus 3:3-7)

“But God, being rich in mercy, because of His great love with which He loved us, even when we were dead in our transgressions, made us alive together with Christ (by grace you have been saved), and raised us up with Him, and seated us with Him in the heavenly places, in Christ Jesus, in order that in the ages to come He might show the surpassing riches of His grace in kindness toward us in Christ Jesus. **For by grace you have been saved through faith; and that not of yourselves, it is the gift of God; not as a result of works, that no one should boast.** For we are His workmanship, created in Christ Jesus for good works, which God prepared beforehand, that we should walk in them.” (Ephesians 2:4-10)

c. Some conclusions based on these passages:

- God’s motive for saving us is His mercy, kindness, love and grace
- Our actions did not move God to grace. God’s grace moved us to take a step toward Him.
- God saves sinners who do not deserve to be saved. Grace is **unmerited** and **unearned** favor.
- We are saved by grace through faith.
- Salvation is by Christ’s meritorious work, not ours.
- Wrath was owed but grace was bestowed.
- We do not save ourselves from our sins, rather God saves us.
- Salvation is a gift from God.
- Salvation is through faith.
- Living (obedient) faith is the means by which we receive God’s grace.
- Human response is required for salvation. To be saved we must trust in Jesus as our sin sacrifice.
- All our righteous deeds are excluded as the means to salvation.
- Christ’s perfect obedience merited the salvation that is given to us.
- We are not saved because we are good enough but on the merits of Christ’s work.
- Saving faith trusts in and depends upon God’s saving work in Christ.

Baptism, which now saves us (1 Peter 3:21), to be effective, must be classified as faith. It must be an expression of our faith in Christ as our sin - sacrifice!

धार्मिकता में किए हैं, परन्तु उनकी दया के अनुसार, पुनर्जन्म के धोने और पवित्र आत्मा द्वारा नवीनीकृत करने के द्वारा, हमें बचाया। जिसे उस ने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर बहुतायत से उंडेला, कि उसके अनुग्रह से धर्मी ठहरकर हम अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस बनें।” (तीतुस 3:3-7)

“परन्तु परमेश्वर ने दया के धनी होकर अपने उस बड़े प्रेम के कारण जिस से उस ने हम से प्रेम रखा, जब हम अपने अपराधों के कारण मरे हुए भी थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह से तुम्हारा उद्धार हुआ है), और हमें उसके साथ जिलाया। , और हमें उसके साथ स्वर्गीय स्थानों में, मसीह यीशु में बिठाया, ताकि आने वाले युगों में वह अपने अनुग्रह के महान धन को हम पर मसीह यीशु में हम पर दिखा सके। सौभाग्य से आपको विश्वास के माध्यम से बचा लिया गया; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, यह परमेश्वर की देन है; कामों के परिणामस्वरूप नहीं, कि कोई घमण्ड न करे। क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और उन भले कामों के लिये मसीह यीशु में सृजे गए हैं, जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से तैयार किया है, कि हम उन पर चलें।” (इफिसियों 2:4-10)

सी। इन अंशों के आधार पर कुछ निष्कर्ष:

- हमें बचाने के लिए भगवान का मकसद उनकी दया, दया, प्रेम और अनुग्रह है
- हमारे कार्यों ने परमेश्वर को अनुग्रह की ओर प्रेरित नहीं किया। परमेश्वर की कृपा ने हमें उसकी ओर एक कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित किया।
- परमेश्वर उन पापियों को बचाता है जो उद्धार के योग्य नहीं हैं। अनुग्रह अयोग्य और अनर्जित उपकार है।
- हम विश्वास के द्वारा अनुग्रह से बचाए जाते हैं।
- उद्धार मसीह के नेक कार्य से होता है, हमारे द्वारा नहीं।
- क्रोध बकाया था लेकिन अनुग्रह प्रदान किया गया था।
- हम अपने आप को अपने पापों से नहीं बचाते, बल्कि भगवान हमें बचाता है।
- मोक्ष भगवान का एक उपहार है।
- मोक्ष विश्वास के द्वारा होता है।
- जीवित (आज्ञाकारी) विश्वास वह साधन है जिसके द्वारा हमें ईश्वर की कृपा प्राप्त होती है।
- मोक्ष के लिए मानवीय प्रतिक्रिया आवश्यक है। उद्धार पाने के लिए हमें अपने पाप बलिदान के रूप में यीशु पर भरोसा करना चाहिए।
- हमारे सभी नेक कामों को मोक्ष के साधन के रूप में बाहर रखा गया है।
- मसीह की पूर्ण आज्ञाकारिता उस उद्धार के योग्य थी जो हमें दिया गया है।
- हम बचाए नहीं गए हैं क्योंकि हम काफी अच्छे हैं लेकिन मसीह के कार्य के गुणों के कारण।
- बचाने वाला विश्वास मसीह में परमेश्वर के बचाने के कार्य पर भरोसा करता है और उस पर निर्भर करता है।

बपतिस्मा, जो अब हमें बचाता है (1 पतरस 3:21), प्रभावी होने के लिए, विश्वास के रूप में वर्गीकृत किया जाना चाहिए। यह हमारे पाप-बलिदान के रूप में मसीह में हमारे विश्वास की अभिव्यक्ति

Otherwise, being saved by baptism would mean that we are justified by works of law and not by faith.

Questions

1. God declares a person righteous following their resurrection from the cleansing waters of baptism that leads to eternal life

True ____ False ____

Man earns righteousness by doing good things for others.

True ____ False ____

3. Being righteous and being declared righteous are the same.

True ____ False ____

4. Man is justified

- a. ____ on the basis of deeds which we have done in righteousness,
b. ____ according to God's mercy, by the washing of regeneration and renewing by the Holy Spirit.

5. For by grace you have been saved through faith; and that not of yourselves, it is the gift of God; not as a result of works.

True ____ False ____

BAPTISM AND JUSTIFICATION BY FAITH

Lesson 4

"Baptized into Christ" must be considered as faith and not be understood as some arbitrary command of God to test our willingness to obey Him. Only when baptism is understood to be faith can it agree with Paul's purpose of proving that justification is by faith in Christ. Specifically, baptism needs to be seen as having the meaning of trust in Christ as Savior.

a. Paul wrote Galatians to prove that we are sons of God through faith in Christ and not by law - contrary to the legalists who advocated justification by law keeping. Notice how he so strongly emphasized this truth.

2:16 — nevertheless knowing that a man is not justified by the works of the Law but through faith in Christ Jesus, even we have believed in Christ Jesus, that we may be justified by faith in Christ and not by the works of the Law; since by the works of the Law shall no flesh be justified.

होना चाहिए! अन्यथा, बपतिस्मे के द्वारा बचाए जाने का अर्थ यह होगा कि हम व्यवस्था के कार्यों से धर्मी ठहराए जाते हैं, न कि विश्वास से।

प्रश्न

1. परमेश्वर एक व्यक्ति को धर्मी घोषित करता है, उसके पुनरुत्थान के बाद बपतिस्मा के शुद्ध जल से जो अनन्त जीवन की ओर ले जाता है

सही गलत ____

मनुष्य दूसरों के लिए अच्छे कार्य करके धार्मिकता अर्जित करता है।

सही गलत ____

3. धर्मी होना और धर्मी घोषित होना एक ही है।

सही गलत ____

4. आदमी जायज है

- a. ____ उन कर्मों के आधार पर जो हमने नेकी से किए हैं,
b. ____ भगवान की दया के अनुसार, पुनर्जन्म की धुलाई और पवित्र आत्मा द्वारा नवीनीकरण द्वारा।

5. सौभाग्य से आपको विश्वास के माध्यम से बचा लिया गया; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, यह परमेश्वर की देन है; कार्यों के परिणामस्वरूप नहीं।

सही गलत ____

बपतिस्मा और विश्वास के द्वारा औचित्य

पाठ 4

"मसीह में बपतिस्मा" को विश्वास के रूप में माना जाना चाहिए और परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने की हमारी इच्छा का परीक्षण करने के लिए कुछ मनमानी आदेश के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए। केवल जब बपतिस्मा को विश्वास के रूप में समझा जाता है, तो वह यह साबित करने के पॉल के उद्देश्य से सहमत हो सकता है कि धर्मी ठहराना मसीह में विश्वास के द्वारा है। विशेष रूप से, बपतिस्मा को उद्धारकर्ता के रूप में मसीह में विश्वास के अर्थ के रूप में देखा जाना चाहिए।

एक। पॉल ने गलाटियन्स को यह साबित करने के लिए लिखा था कि हम मसीह में विश्वास के माध्यम से भगवान के पुत्र हैं, न कि कानून के द्वारा - कानून रखने वालों के विपरीत जो कानून रखने से औचित्य की वकालत करते थे। गौर कीजिए कि कैसे उसने इस सच्चाई पर इतना जोर दिया।

2:16 - तौभी यह जानकर कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, पर यीशु मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरता है, हम ने भी मसीह यीशु पर विश्वास किया है, कि हम व्यवस्था के कामों से नहीं, पर मसीह पर

2:21 — “I do not nullify the grace of God, **for if righteousness comes through law**, then Christ died needlessly.

3:6-9 — “Even so Abraham believed God and it was reckoned to him as righteousness. Therefore, be sure that it is **those who are of faith who are sons of Abraham**. The Scripture, foreseeing that **God would justify the Gentiles by faith**, preached the gospel beforehand to Abraham saying, “all nations shall be blessed in you. So, then **those who are of faith are blessed with Abraham**, the believer.”

3:26 — **For you are all sons of God through faith in Christ Jesus.**

3:27-9 — **For all of you who were baptized into Christ have clothed yourselves with Christ.** There is neither Jew nor Greek, there is neither slave nor free man, there is neither male nor female; for you are all one in Christ Jesus. And **if you belong to Christ, then you are Abraham's offspring**, heirs according to promise.

b. Galatians 3:27 was not given as a treatise on baptism. He was discussing justification by faith. The only way we can understand his meaning in verse 27 is within the context in which it was written. Why did Paul mention baptism? How does it fit into his main theme (Gal. 2:16)? It is in the context of justification by faith in Christ that the apostle wrote: “**For all of you who were baptized into Christ have clothed yourselves with Christ**” (3:27). But this statement is preceded by “**For you are all sons of God through faith in Christ Jesus**” (verse 26). If the meaning of baptism were not classified as faith in Christ, it would be irrelevant to Paul's argument. If verse 27 is not to be equated with verse 26 then Paul's reference to baptism is both irrelevant and confusing because then he would be introducing a condition of justification in addition to the principle of faith. But, the apostle in verse 27 is still teaching justification by faith in Christ as opposed to salvation by law keeping.

So what does baptism mean? It means more than simply immersion in water. It means faith in Christ. It is not just that baptism is to be preceded by belief that Jesus is the Son of God. Baptism is faith in Jesus who offered himself as the sacrifice for our sins.

If baptism were only a command of God chosen to test our willingness to obey, and not seen as trust in Christ as savior; if it were to be submitted to just because Jesus commanded it, that would be legalism (making baptism a work of righteousness we do). But, when we see baptism to be the God ordained embodiment of faith by

विश्वास करने से धर्मी ठहरें ; क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी धर्मी नहीं ठहरेगा।

2:21 — “मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं ठहराता, क्योंकि यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता आती है, तो मसीह व्यर्थ ही मर गया।

3:6-9 - "वैसे ही इब्राहीम ने परमेश्वर की प्रतीति की, और यह उसके लिये धर्म गिना गया। इसलिए, सुनिश्चित हो कि यह वही है जो विश्वास के हैं जो इब्राहीम के पुत्र हैं। पवित्रशास्त्र ने, यह देखते हुए कि परमेश्वर अन्यजातियों को विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराएगा, पहले से ही अब्राहम को यह कहते हुए सुसमाचार सुनाया, “सब जातियाँ तुझ में आशीष पाएंगी। सो जो विश्वासी हैं, वे विश्वासी इब्राहीम से आशीष पाते हैं।”

3:26 - क्योंकि तुम सब मसीह यीशु पर विश्वास करने के द्वारा परमेश्वर की सन्तान हो।

3:27-9 - क्योंकि तुम सबने जिन्होंने मसीह में बपतिस्मा लिया है, मसीह को पहिन लिया है। न यहूदी, न यूनानी, न दास, न स्वतन्त्र, न नर, न स्त्री; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो। और यदि तुम मसीह के हो, तो इब्राहीम की सन्तान और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो।

बी। गलातियों 3:27 को बपतिस्मा पर ग्रंथ के रूप में नहीं दिया गया था। वह विश्वास द्वारा औचित्य पर चर्चा कर रहा था। पद 27 में उसके अर्थ को समझने का एकमात्र तरीका उस संदर्भ में है जिसमें यह लिखा गया था। पौलुस ने बपतिस्मे का जिक्र क्यों किया? यह उसके मुख्य विषय में कैसे फिट बैठता है (गला0 2:16)? यह मसीह में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के संदर्भ में है कि प्रेरित ने लिखा: "क्योंकि तुम सब ने जो मसीह में बपतिस्मा लिया था, अपने आप को मसीह को पहिन लिया है" (3:27)। परन्तु इस कथन से पहले "क्योंकि तुम सब मसीह यीशु पर विश्वास करने के द्वारा परमेश्वर की सन्तान हो" (वचन 26)। यदि बपतिस्मा के अर्थ को मसीह में विश्वास के रूप में वर्गीकृत नहीं किया गया था, तो यह पॉल के तर्क के लिए अप्रासंगिक होगा। यदि पद 27 को पद 26 के साथ नहीं जोड़ा जाना है, तो बपतिस्मा के लिए पॉल का संदर्भ अप्रासंगिक और भ्रमित करने वाला दोनों हैं, क्योंकि तब वह विश्वास के सिद्धांत के अलावा औचित्य की एक शर्त पेश कर रहा होगा। परन्तु, पद 27 में प्रेरित अभी भी व्यवस्था के द्वारा उद्धार के विरोध में मसीह में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराना सिखा रहा है।

तो बपतिस्मा का क्या अर्थ है? इसका अर्थ केवल पानी में विसर्जन से कहीं अधिक है। इसका अर्थ है मसीह में विश्वास। ऐसा नहीं है कि बपतिस्मा इस विश्वास से पहले होना चाहिए कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। बपतिस्मा यीशु में विश्वास है जिसने हमारे पापों के लिए खुद को बलिदान के रूप में पेश किया।

यदि बपतिस्मा केवल परमेश्वर की आज्ञा थी जिसे मानने की हमारी इच्छा का परीक्षण करने के लिए चुना गया था, और इसे उद्धारकर्ता के रूप में मसीह में विश्वास के रूप में नहीं देखा गया था; अगर इसे सिर्फ इसलिए प्रस्तुत किया जाना था क्योंकि यीशु ने इसे आज्ञा दी थी, तो यह विधिवाद होगा (बपतिस्मा को धार्मिकता का कार्य बनाना)। परन्तु, जब हम देखते हैं कि बपतिस्मा परमेश्वर द्वारा नियुक्त विश्वास का अवतार है जिसके द्वारा

which we are united with Christ, then it becomes consistent with Galatians' theme of justification by faith.

If the so-called "plan of salvation" means a set of arbitrary commands given by one in authority, and the one who obeys it is rewarded with salvation, then those commands become pure legalism.

c. Baptism must not be separated from faith in Christ to save us. To make it a command or ordinance based solely upon the authority of Christ to test man's willingness to obey him is a return to legalism. Baptism considered as the embodiment of faith in Christ as our sin offering does not constitute a work of legalism. The only way to properly defend baptism as a prerequisite to salvation is to understand it as faith; that is, reliance upon Christ as sin offering.

One being baptized should have his eyes on the cross, not merely on the act of being immersed in water. We have to be very careful to not transmit the idea that faith leads to repentance and repentance leads to baptism and that baptism as an act of obedience is separate and apart from faith. That thinking would be legalism.

d. In baptism we are clothed with Christ. "In Christ" and "into Christ" signify union with Christ. To try to be justified by law (by merit or by doing righteous deeds) is to be "severed from Christ" (Galatians 5:4), but to be justified by faith (embodied in baptism) means union with Christ. This is the apostle's argument in Galatians 3:26, 27. Baptism can't be understood apart from faith in Christ as sin offering. Simply to quote Galatians 3:27 to prove the necessity of baptism is to fail to consider it in its proper context. Galatians 3:26, 27 shows baptism to be faith embodied, expressed or pictured. Through our faith in Christ as the sacrifice for our sins, baptism results in us coming into Christ and being clothed with Christ. Clothed with Christ, covered by Christ's righteousness and not our own, entering into Christ, coming into a saving relationship with Christ – all this happens by or through our faith in him when we are baptized.

e. Conclusion:

Being baptized just to obey some command of God and not for the purpose of receiving forgiveness and thus salvation through the meritorious death of Christ on the cross turns baptism into a work and therefore a form of legalism. We are not saved by any of our own works of righteousness but by faith in Christ.

The Lord gave many commands. For example, "give to him who asks you and do not turn away he who would borrow from you". This is a command. To think that by obeying this command one may unknowingly be saved, would negate **Eph. 2:8-9**: "For by grace you have been

हम मसीह के साथ एक हो जाते हैं, तो यह गलातियों के विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के विषय के अनुरूप हो जाता है।

यदि तथाकथित "उद्धार की योजना" का अर्थ अधिकार में एक व्यक्ति द्वारा दी गई मनमानी आज्ञाओं का एक समूह है, और जो इसका पालन करता है उसे उद्धार के साथ पुरस्कृत किया जाता है, तो वे आदेश शुद्ध विधिवाद बन जाते हैं।

सी। हमें बचाने के लिए बपतिस्मा को मसीह में विश्वास से अलग नहीं किया जाना चाहिए। मनुष्य की उसकी आज्ञा मानने की इच्छा का परीक्षण करने के लिए इसे पूरी तरह से मसीह के अधिकार पर आधारित एक आदेश या अध्यादेश बनाना विधिवाद की वापसी है। बपतिस्मा को हमारे पापबलि के रूप में मसीह में विश्वास के अवतार के रूप में माना जाता है, यह विधिवाद का कार्य नहीं है। उद्धार के लिए एक पूर्वापेक्षा के रूप में बपतिस्मे का ठीक से बचाव करने का एकमात्र तरीका इसे विश्वास के रूप में समझना है; अर्थात्, पापबलि के रूप में मसीह पर निर्भर रहना।

बपतिस्मा लेने वाले की नज़र केवल पानी में डूबे रहने के कार्य पर नहीं, बल्कि क्रूस पर होनी चाहिए। हमें इस विचार को प्रसारित नहीं करने के लिए बहुत सावधान रहना होगा कि विश्वास पश्चाताप की ओर ले जाता है और पश्चाताप बपतिस्मा की ओर ले जाता है और यह कि आज्ञाकारिता के कार्य के रूप में बपतिस्मा विश्वास से अलग और अलग है। वह सोच कानूनीवाद होगी।

डी। बपतिस्मे में हम मसीह के कपड़े पहने हुए हैं। "मसीह में" और "मसीह में" मसीह के साथ एकता का प्रतीक है। व्यवस्था के द्वारा (योग्यता के द्वारा या धार्मिक कार्यों के द्वारा) धर्मी ठहराए जाने का प्रयास करना "मसीह से अलग" होना है (गलातियों 5:4), परन्तु विश्वास (बपतिस्मा में सन्निहित) के द्वारा धर्मी ठहराए जाने का अर्थ है मसीह के साथ एक होना। गलातियों 3:26, 27 में यह प्रेरित का तर्क है। बपतिस्मा को पापबलि के रूप में मसीह में विश्वास के अलावा नहीं समझा जा सकता है। केवल गलातियों 3:27 को उद्धृत करना बपतिस्मे की आवश्यकता को प्रमाणित करने के लिए है, इसे इसके उचित संदर्भ में विचार करने में विफल होना है। गलातियों 3:26, 27 बपतिस्मे को सन्निहित, अभिव्यक्त या चित्रित विश्वास के रूप में दर्शाता है। हमारे पापों के बलिदान के रूप में मसीह में हमारे विश्वास के माध्यम से, बपतिस्मा हमें मसीह में आने और मसीह के साथ पहने जाने का परिणाम देता है। मसीह के वस्त्र पहिने, जो मसीह की धार्मिकता से आच्छादित है, न कि हमारी अपनी, मसीह में प्रवेश करते हुए,

इ। निष्कर्ष:

केवल परमेश्वर की किसी आज्ञा का पालन करने के लिए बपतिस्मा लिया जाना न कि क्षमा प्राप्त करने के उद्देश्य से और इस प्रकार क्रूस पर मसीह की मेधावी मृत्यु के माध्यम से उद्धार बपतिस्मा को एक कार्य में बदल देता है और इसलिए यह एक प्रकार का कानूनीवाद है। हम अपने किसी धर्म के कामों से नहीं, परन्तु मसीह में विश्वास करने से उद्धार पाते हैं।

यहोवा ने बहुत सी आज्ञाएँ दीं। उदाहरण के लिए, "जो तुझ से मांगे उसे दे दो और जो तुझ से उधार लेगा, उसे मत छोड़ो"। यह एक आदेश है।

saved through faith, and that not of yourselves; it is the gift of God, not as a result of works, so that no one may boast." It would also negate **Titus 3:5**: "He saved us, not on the basis of deeds which we have done in righteousness, but according to His mercy by the washing of regeneration and renewing by the Holy Spirit." This would be obedience to a command but not directly connected to faith in Christ to save nor the death, burial and resurrection of Jesus from the dead. The latter is the baptism the New Testament writers said was necessary to be saved.

Questions

1. Baptism is an arbitrary command of God to test our willingness to obey Him

True ____ False ____

2. Man is justified thereby saved by his works that please God

True ____ False ____

3. Baptism is an act of faith in Jesus who offered himself as the sacrifice that cleanses sins from man.

True ____ False ____

4. Baptism is an act of obedience and is separate and apart from faith.

True ____ False ____

5. Through our faith and trust in Christ as the sacrifice for our sins, baptism results in

- a. ____ being clothed with Christ.
- b. ____ being covered by Christ's righteousness and not our own
- c. ____ entering into Christ
- d. ____ coming into a saving relationship with Christ
- e. ____ all the above.

ARE THERE PREREQUISITES THAT MUST BE MET IN ORDER FOR SOMEONE TO BE BAPTIZED?

Lesson 5

Yes, there are prerequisites for baptism. This is obvious from the account of Philip and the Ethiopian treasurer in Acts 8. After being taught Jesus, beginning from Isaiah 53, the eunuch asked, "Look, here is water, why can't I be baptized?" Philip's answer showed a prerequisite: "If you believe with all your heart, you may." It is logical that if he did not believe, he could not be baptized.

यह सोचना कि इस आज्ञा का पालन करने से कोई अनजाने में बचाया जा सकता है, इफ को नकार देगा। 2:8-9: "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं; यह परमेश्वर का दान है, न कि कर्मों के कारण, कि कोई घमण्ड न करे।" यह तीतुस 3:5 को भी अस्वीकार करता है: "उसने हमारा उद्धार उन कामों के आधार पर नहीं जो हम ने धर्म से किए हैं, परन्तु उसकी दया के अनुसार पुनर्जन्म को धोने और पवित्र आत्मा के द्वारा नया करने के द्वारा।" यह एक आज्ञा का पालन करना होगा लेकिन सीधे तौर पर यीशु को बचाने के लिए मसीह में विश्वास से जुड़ा नहीं है और न ही मृत्यु, दफन और मृतकों में से पुनरुत्थान। उत्तरार्द्ध वह बपतिस्मा है जिसे नए नियम के लेखकों ने कहा था कि बचाया जाना आवश्यक था।

प्रश्न

1. बपतिस्मा एक हैपरमेश्वर की मनमानी आज्ञा उसकी आज्ञा मानने की हमारी इच्छा का परीक्षण करने के लिए

सही गलत ____

2. मनुष्य धर्मी है इस प्रकार परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले उसके कार्यों से बचाया जाता है

सही गलत ____

3. बपतिस्मा यीशु में विश्वास का एक कार्य है जिसने खुद को बलिदान के रूप में पेश किया जो मनुष्य के पापों को शुद्ध करता है।

सही गलत ____

4. बपतिस्मा आज्ञाकारिता का कार्य है और विश्वास से अलग और अलग है।

सही गलत ____

5. हमारे पापों के बलिदान के रूप में मसीह में हमारे विश्वास और भरोसे के द्वारा, बपतिस्मा का परिणाम होता है

- a. ____ मसीह के साथ पहना जा रहा है।
- b. ____ प्राणीमसीह की धार्मिकता से आच्छादित है न कि हमारी अपनी
- c. ____ मसीह में प्रवेश करना
- d. ____ मसीह के साथ एक बचाने वाले संबंध में आना
- e. ____ सब से ऊपर।

क्या किसी को बपतिस्मा लेने के लिए कुछ शर्तें पूरी करनी होंगी?

पाठ 5

हाँ, बपतिस्मा के लिए कुछ शर्तें हैं। यह प्रेरितों के काम 8 में फिलिप्पुस और कूश के कोषाध्यक्ष के वृत्तांत से स्पष्ट है। यशायाह 53 से शुरू होकर, यीशु को सिखाया जाने के बाद, खोजे ने पूछा, "देखो, यहाँ पानी है, मैं बपतिस्मा क्यों नहीं ले सकता?" फिलिप्पुस के उत्तर ने एक पूर्वापेक्षा दिखाई: "यदि तुम पूरे मन से विश्वास करते हो, तो कर सकते

The "great-commission" recorded in Matthew 28:19 also makes it obvious that there are prerequisites for baptism: "Go and make disciples of all nations, baptizing them in the name of the Father, the Son and the Holy Spirit". Who are we to baptize? We are to only baptize disciples – those people who decide to follow Jesus and learn from Him. Those who do not decide to follow Jesus (repent) are not to be baptized.

The simplest and most concise way to express the prerequisites for baptism might be simply that we must believe and repent in order to be baptized; that is, if we understand what these mean. However, in that simplicity, it may be easy to get the cart before the horse and in doing so we could ignore (or fail to emphasize) the centrality of the gospel of Jesus Christ.

There is an important, even essential, connection between the Cross of Christ, faith (as trust and belief), repentance, discipleship, the Lordship of Jesus, baptism and redemption. Consider the following:

1. **In Order To Be Baptized, One Must Recognize That He Is A Sinner Who Needs A Savior.**

1 Timothy 1:15 "It is a trustworthy statement, deserving full acceptance, that Christ Jesus came into the world to save sinners, among whom I am foremost of all."

Many people do not feel the need for a savior because they do not feel lost. Whether it comes through hearing a moving sermon; maybe a friend who shares with you the truth; maybe by reading a tract; whichever, in some way one must come to understand that "all have sinned and fall short of the glory of God" (Romans 3:23). As the prophet Isaiah had said, long ago: our sins have hidden God's face from us so that He will not hear." (Isaiah 59:2). Our own sin separates us from God! "The wages of sin is death" we read in Romans 6:23. This is a spiritual death, which is a separation from God for those who are lost.

"But what about my good works?" someone may say. The answer returns: "For by grace you have been saved through faith, and that not of yourselves; it is the gift of God, not of works, lest anyone should boast" (Ephesians 2:8, 9). "But my sins are small" others say, but "For whoever shall keep the whole law, and yet stumble in one point, he is guilty of all" (James 2:10).

Human pride and self-sufficiency are the greatest barriers against salvation. He who refuses to admit that he is a sinner in need of forgiveness is lost and cannot be baptized in order to be saved. Sinners need salvation.

2. **In Order To Be Baptized, One Must Recognize That Jesus Is The Only Hope Of Salvation.**

हो।" यह तर्कसंगत है कि यदि वह विश्वास नहीं करता, तो उसे बपतिस्मा नहीं दिया जा सकता था।

मत्ती 28:19 में अभिलिखित "महान-आयोग" यह भी स्पष्ट करता है कि बपतिस्मा के लिए कुछ शर्तें हैं: "जाओ और सब जातियों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो"। हम कौन होते हैं बपतिस्मा देने वाले? हमें केवल शिष्यों को बपतिस्मा देना है - वे लोग जो यीशु का अनुसरण करने और उससे सीखने का निर्णय लेते हैं। जो लोग यीशु का अनुसरण करने का निर्णय नहीं लेते (पश्चाताप) उन्हें बपतिस्मा नहीं लेना चाहिए।

बपतिस्मे के लिए पूर्वापेक्षाएँ व्यक्त करने का सबसे सरल और सबसे संक्षिप्त तरीका यह हो सकता है कि हमें विश्वास करना चाहिए और बपतिस्मा लेने के लिए पश्चाताप करना चाहिए; यानी, अगर हम समझते हैं कि इनका क्या मतलब है। हालाँकि, उस सादगी में, घोड़े के आगे गाड़ी को लाना आसान हो सकता है और ऐसा करने में हम यीशु मसीह के सुसमाचार की केंद्रीयता की उपेक्षा (या जोर देने में विफल) हो सकते हैं।

क्राइस्ट के क्रॉस, विश्वास (विश्वास और विश्वास के रूप में), पश्चाताप, शिष्यत्व, यीशु की प्रभुता, बपतिस्मा और छुटकारे के बीच एक महत्वपूर्ण, यहां तक कि आवश्यक, संबंध है। निम्न पर विचार करें:

3. **बपतिस्मा लेने के लिए हेने को यह पहचानना होगा कि वह एक पापी है जिसे एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है।**

1 तीमुथियुस 1:15 "यह विश्वास योग्य बात है, कि पूरी तरह ग्रहण करने के योग्य है, कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिये जगत में आया, जिन में मैं सब से प्रधान हूँ।"

बहुत से लोगों को एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता महसूस नहीं होती है क्योंकि वे खोया हुआ महसूस नहीं करते हैं। चाहे वह चलते-फिरते उपदेश सुनने से आता हो; शायद एक दोस्त जो आपके साथ सच्चाई साझा करता है; शायद एक टैक्ट पढ़कर; जो भी हो, किसी न किसी रूप में यह समझना चाहिए कि "सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं" (रोमियों 3:23)। जैसा कि भविष्यद्वक्ता यशायाह ने बहुत पहले कहा था: हमारे पापों ने परमेश्वर का मुख हम से छिपा रखा है, कि वह सुन न सके।" (यशायाह 59:2)। हमारा अपना पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है! "पाप की मजदूरी मृत्यु है" हम रोमियों 6:23 में पढ़ें। यह एक आत्मिक मृत्यु है, जो खोए हुए लोगों के लिए परमेश्वर से अलगाव है।

"लेकिन मेरे अच्छे कामों का क्या?" कोई कह सकता है। उत्तर वापस आता है: "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं; यह परमेश्वर का दान है, न कि कर्मों का, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे" (इफिसियों 2:8, 9)। "परन्तु मेरे पाप छोटे हैं" दूसरे कहते हैं, परन्तु "क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करेगा, तौभी एक ही बात में चूक जाए, वह सब का दोषी है" (याकूब 2:10)।

मानव अभिमान और आत्मनिर्भरता मोक्ष के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है। वह जो यह स्वीकार करने से इंकार करता है कि वह एक पापी है जिसे

There is no other way. By his death on the cross, Jesus is able to save, set free, and ransom sinners. In John 14:6, Jesus declared: says, "I am the way, the truth, and the life: No man comes to the Father except through Me." The only way we can get to God is through Christ. We also read in Acts 4:12, "Nor is there salvation in any other, for there is no other name under heaven given among men by which we must be saved." We cannot be saved by relying on Mohammed, Buddha, Judaism, Hindu gods or any other religion. Neither can we devise our own system of "Christianity" as is being done today and expect it to save us. Only Jesus Christ can specify the conditions for our salvation because He paid our price and is our only savior. There is no other way. What Jesus did for sinners was necessary to bring divine mercy to condemned sinners.

3. What Was It, Then, That Jesus Did To Save Sinners?

a. Jesus became a man. Before Jesus came, He was God (John 1:1) and was on equality with God (Phil. 2: 6). But man's Savior must be human as well as divine; otherwise he could not bear man's sins. He emptied himself ... coming in the likeness of men." (Phil. 2:7).

b. Christ became our sin bearer. "But he was pierced for our transgressions, he was crushed for our iniquities; the punishment that brought us peace was upon him, and by his wounds we are healed ... and the Lord has laid on him the iniquity of us all" (Isaiah. 53:5, 6). "He made Him who knew no sin to be sin for us." (II Cor. 5:21). "Who Himself bore our sins in His own body on the tree" (1Pet. 2:24). None other could be man's sin bearer.

c. Christ became our sin offering. "God presented him as a sacrifice of atonement, through faith in his blood" (Rom. 3:25). "Christ died for our sins" (I Cor. 15:3). "Who gave himself for our sins" (Galatians. 1:4).

d. He was raised for us. "But now hath Christ been raised from the dead, the first fruits of them that sleep. For since by man came, death by man (Christ in the flesh) came also the resurrection of the dead. For as in Adam all die, so also in Christ shall all be made alive." (I Cor. 15. 20-22). "He was "raised for our justification." (Rom. 4: 25)

e. He is at the right hand of God interceding for us. "Therefore he is able to save completely those who come to God through him, because he always lives to intercede for them" (Hebrews 7:25). "We have one who speaks to the Father in our defense—Jesus Christ, the Righteous One" (1 John 2:1). "Christ Jesus, who died—more than that, who was raised to life—is at the right hand of God and is also interceding for us (Romans 8:24).

क्षमा की आवश्यकता है वह खो गया है और उद्धार पाने के लिए उसे बपतिस्मा नहीं दिया जा सकता है। पापियों को मोक्ष चाहिए।

4. बपतिस्मा लेने के लिए एक यह स्वीकार करना चाहिए कि यीशु ही मुक्ति की एकमात्र आशा है।

और कोई रास्ता नहीं है। क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा, यीशु पापियों को बचाने, मुक्त करने और छुड़ौती देने में सक्षम है। यूहन्ना 14:6 में, यीशु ने घोषणा की: कहता है, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ: बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।" हम केवल मसीह के द्वारा ही परमेश्वर तक पहुँच सकते हैं। हम प्रेरितों के काम 4:12 में भी पढ़ते हैं, "और न किसी दूसरे के द्वारा उद्धार है, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।" हमें मोहम्मद, बुद्ध, यहूदी, हिंदू देवताओं या किसी अन्य धर्म पर भरोसा करके नहीं बचाया जा सकता है। न ही हम "ईसाई धर्म" की अपनी प्रणाली तैयार कर सकते हैं जैसा कि आज किया जा रहा है और यह उम्मीद कर सकते हैं कि यह हमें बचाएगा। केवल यीशु मसीह ही हमारे उद्धार के लिए शर्तों को निर्दिष्ट कर सकते हैं क्योंकि उन्होंने हमारी कीमत चुकाई और वही हमारे एकमात्र उद्धारकर्ता हैं। और कोई रास्ता नहीं है। यीशु ने पापियों के लिए जो किया वह निन्दित पापियों पर ईश्वरीय दया लाने के लिए आवश्यक था।

3. तो फिर, यीशु ने पापियों को बचाने के लिए क्या किया?

एक। यीशु एक आदमी बन गया। यीशु के आने से पहले, वह परमेश्वर था (यूहन्ना 1:1) और परमेश्वर के साथ समानता पर था (फिलि0 2:6)। लेकिन मनुष्य का उद्धारकर्ता मानवीय होने के साथ-साथ दिव्य भी होना चाहिए; अन्यथा वह मनुष्य के पापों को सहन नहीं कर सकता था। उसने अपने आप को खाली कर दिया... मनुष्यों की समानता में आकर।" (फिलि0 2:7)।

बी। मसीह हमारा पाप वाहक बन गया। "परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण बेधा गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया; जिस दण्ड ने हमें शान्ति दी, वह उस पर था, और उसके घावों से हम चंगे हो गए हैं... और यहोवा ने हम सब के अधर्म का भार उसी पर डाल दिया है" (यशायाह 53:5, 6)। "उसने उसे बनाया जो पाप को नहीं जानता था।" (द्वितीय कुरिं। 5:21)। "जिसने हमारे पापों को अपने शरीर में पेड़ पर रखा" (1 पतरस 2:24)। कोई और नहीं हो सकता मनुष्य का पाप ढोने वाला।

सी। मसीह हमारा पापबलि बन गया। "परमेश्वर ने उसे उसके लहू पर विश्वास करने के द्वारा प्रायश्चित का बलिदान करके भेंट किया" (रोमियों 3:25)। "मसीह हमारे पापों के लिए मरा" (1 कुरि0 15:3)। "जिसने हमारे पापों के लिए अपने आप को दे दिया" (गलातियों 1:4)।

डी। वह हमारे लिए उठाया गया था। "परन्तु अब तो मसीह मरे हुएों में से जिलाया गया, जो सोते हैं उन में पहिला फल है। क्योंकि जब से मनुष्य आया, तब से मनुष्य की मृत्यु (शरीर में मसीह) भी मरे हुएों का पुनरुत्थान आया। क्योंकि जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसे ही मसीह में भी सब जिलाए जाएंगे।" (1 कुरि0 15. 20-22)।

f. Christ did many other things for the benefit of man, but it was by means of his death that he redeemed us. For example, he left us the incomparable Sermon on the Mount, but this teaching is not redemptive. The gospel that saves is the good news of Christ's death for our sins (1 Cor. 15:3, 4). The source of our salvation is the blood of Christ.

g. What Jesus did for us is called "the gospel", meaning "good news!" In Mark 16:15, 16 Jesus said "go and preach the gospel to every creature. He who believes [this gospel] and is baptized will be saved but he who does not believe [this gospel] will be condemned" We must believe this gospel and be baptized to be saved. If we do not believe [this] gospel we will not want to nor can be baptized.

Questions

- Who offers forgiveness of sins and eternal life?
 - ___ God of Mohammad
 - ___ God of Hindu
 - ___ Buddha
 - ___ The Grace of God - Jesus Christ
 - ___ God of Jews by law of Moses

- A person drowning in sin cannot be saved unless he is willing to take hold of the saving rope of salvation.

True ___ False ___

- What is the Gospel – the Good News of Jesus?
 - ___ God became man- Jesus of Nazareth
 - ___ Christ became our sin bearer
 - ___ Christ became our sin offering by His death
 - ___ God raised Christ from the grave for us
 - ___ Christ returned to Heaven to intercede for us
 - ___ All the above
 - ___ None of the above

- One shows their belief that the crucified Jesus Christ is their Lord and Savior by their commitment to Him

True ___ False ___

- Repentance
 - ___ Is feeling really sorry
 - ___ Leads to salvation
 - ___ Causes one to change from a selfish sinful life to God's way of life
 - ___ Salvation
 - ___ a and b
 - ___ b and c

इ। वह हमारे लिए मध्यस्थता करने वाले परमेश्वर के दाहिने हाथ पर है। इसलिये जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिये बिनती करने को सर्वदा जीवित है" (इब्रानियों 7:25)। "हमारे पास एक है जो हमारे बचाव में पिता से बात करता है—यीशु मसीह, धर्मी एक" (1 यूहन्ना 2:1)। "मसीह यीशु, जो मर गया - उससे भी अधिक, जो जीवित हो गया - परमेश्वर के दाहिने हाथ पर है और हमारे लिए भी हस्तक्षेप कर रहा है (रोमियों 8:24)।

एफ। मसीह ने मनुष्य के लाभ के लिए और भी बहुत कुछ किया, परन्तु अपनी मृत्यु के द्वारा ही उसने हमें छुड़ाया। उदाहरण के लिए, उसने हमें पहाड़ पर अतुलनीय उपदेश छोड़ दिया, लेकिन यह शिक्षा छुटकारे की नहीं है। जो सुसमाचार बचाता है वह हमारे पापों के लिए मसीह की मृत्यु का शुभ समाचार है (1 कुरि0 15:3, 4)। हमारे उद्धार का स्रोत मसीह का लहू है।

जी। यीशु ने हमारे लिए जो किया वह "सुसमाचार" कहलाता है, जिसका अर्थ है "सुसमाचार"। मरकुस 16:15, 16 में यीशु ने कहा, "जाओ और सब प्राणियों को सुसमाचार सुनाओ। वह जो [इस सुसमाचार] पर विश्वास करता है और बपतिस्मा लेता है वह बच जाएगा लेकिन वह जो विश्वास नहीं करता [इस सुसमाचार] को दोषी ठहराया जाएगा" हमें इस सुसमाचार पर विश्वास करना चाहिए और उद्धार पाने के लिए बपतिस्मा लेना चाहिए। यदि हम [इस] सुसमाचार पर विश्वास नहीं करते हैं तो हम न तो बपतिस्मा लेना चाहेंगे और न ही बपतिस्मा ले सकते हैं।

प्रश्न

- पापों की क्षमा और शाश्वत झूठ कौन प्रदान करता है?
 - ___ मोहम्मद के भगवान
 - ___ हिन्दुओं के भगवान
 - ___ बुद्धा
 - ___ ईश्वर की कृपा - यीशु मसीह
 - ___ मूसा की व्यवस्था के अनुसार यहूदियों का परमेश्वर
- पाप में डूबे हुए व्यक्ति को तब तक नहीं बचाया जा सकता जब तक कि वह उद्धार की रस्सी को पकड़ने के लिए तैयार न हो।

सही गलत ___

- सुसमाचार क्या है - यीशु की खुशखबरी?
 - ___ परमेश्वर मनुष्य बने- नासरत के यीशु
 - ___ मसीह हमारा पाप वाहक बन गया
 - ___ मसीह उनकी मृत्यु के द्वारा हमारा पापबलि बन गया
 - ___ भगवान ने हमारे लिए मसीह को कब्र से उठाया
 - ___ मसीह हमारे लिए मध्यस्थता करने के लिए स्वर्ग लौट आया

WHAT A LOST PERSON MUST DO TO BE SAVED RELATES TO WHAT JESUS DID TO SAVE HIM.

Lesson 6

The conditions of salvation are not merely acts commanded by one in authority that become the ground of our redemption. "Christ crucified" is himself the Savior. "He offered himself." (Hebrews 7:27). "He gave himself" (Galatians 1:4). The idea that conditions have been arbitrarily chosen ignores the cross. Nothing nullifies the cross more than to preach the conditions of salvation without relating them to the atoning work of the Savior.

What Jesus did to save us determines, therefore, what we must do to be saved. Nothing that is required of sinners can possibly be for the remission of sins unless it relates to the blood of Christ. Faith, for example, possesses no redemptive power; but the blood of Christ is redemptive. So faith is a condition of salvation because it means trust in, or reliance upon the blood of Christ. (See John 3:16 and Romans 3:25.)

It Is Required That One Believe In The Crucified Son Of God.

John 3:16 teaches this. "God so loved the world that he gave his only begotten son that whosoever believes on him shall be saved." It was his Son that God gave. But the Son must be lifted up on the cross. The Son died for our sins. Hence, it is not enough merely to believe that Jesus is the Son of God. The sinner must also believe in the Son crucified for his sins. The faith that saves must be in the Son who died to save. "Whom God set forth to be a propitiation, through faith in his blood" (Romans 3:25). Christ is our propitiation because he shed his blood (His sacrifice) for us and we respond to him through faith. We must have faith in his blood (trust in his blood) or faith in him who shed his blood.

But what is it to believe in Christ crucified? It is the belief that he died for our sins and as well as trust or reliance upon him as our sin offering.

Jesus died to redeem man so one must depend upon or trust in his death for salvation. This dependence on Christ crucified is faith. This faith is more than confidence in the integrity of Jesus to fulfill his promise to save upon certain conditions. The conditions themselves mean trust in his death for salvation. Faith looks to the cross, to the blood. Jesus did not die merely to induce one to recognize him as Lord or king, that is, as one having the right to rule over us. He died to save sinners. Hence, faith that saves must mean dependence upon his blood. Without trust in the blood as an element of faith there is no satisfactory response to Christ as a sin offering. Faith that saves must have Jesus Christ and him

- f. ___ सब से ऊपर
g. ___ इनमे से कोई भी नहीं

4. एक उनके विश्वास को दर्शाता है कि क्रूस पर चढ़ाए गए यीशु मसीह उनके प्रभु और उद्धारकर्ता हैं, उनके प्रति उनकी प्रतिबद्धता से

सत्य ___ असत्य ___

5. पछतावा

- a. ___ सचमुच खेद महसूस हो रहा है
b. ___ मोक्ष की ओर ले जाता है
c. ___ एक को c. का कारण बनता है एक स्वार्थी पापी जीवन से परमेश्वर के जीवन के मार्ग पर लटका देना
d. ___ मोक्ष
e. ___ ए और बी
f. ___ बी और सी

एक खोए हुए व्यक्ति को बचाए जाने के लिए क्या करना चाहिए, यीशु ने उसे बचाने के लिए जो किया उससे संबंधित है।

पाठ 6

उद्धार की शर्तों केवल एक अधिकारी के द्वारा आदेशित कार्य नहीं हैं जो हमारे छुटकारे का आधार बन जाते हैं। "मसीह को क्रूस पर चढ़ाया गया" स्वयं उद्धारकर्ता है। "उन्होंने खुद को पेश किया।" (इब्रानियों 7:27)। "उसने अपने आप को दे दिया" (गलातियों 1:4)। यह विचार कि शर्तों को मनमाने ढंग से चुना गया है, क्रूस की उपेक्षा करता है। उद्धार की शर्तों को उद्धारकर्ता के प्रायश्चित्त कार्य से संबंधित किए बिना उन्हें प्रचारित करने के अलावा और कुछ भी नहीं है।

यीशु ने हमें बचाने के लिए जो किया वह यह निर्धारित करता है कि हमें बचाए जाने के लिए क्या करना चाहिए। पापियों से जो कुछ भी आवश्यक है, वह संभवतः पापों की क्षमा के लिए नहीं हो सकता जब तक कि यह मसीह के लहू से संबंधित न हो। उदाहरण के लिए, विश्वास के पास कोई छुटकारे की शक्ति नहीं है; परन्तु मसीह का लहू छुड़ाने वाला है। तो विश्वास मोक्ष की एक शर्त है क्योंकि इसका अर्थ है मसीह के लहू पर भरोसा या भरोसा करना। (यूहन्ना 3:16 और रोमियों 3:25 देखें।)

यह आवश्यक है कि कोई परमेश्वर के क्रूस पर चढ़ाए गए पुत्र में विश्वास करे।

यूहन्ना 3:16 यह सिखाता है। "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया कि जो कोई उस पर विश्वास करे वह उद्धार पाए।" यह उसका पुत्र था जिसे परमेश्वर ने दिया था। परन्तु पुत्र को क्रूस पर चढ़ाया जाना चाहिए। पुत्र हमारे पापों के लिए मरा। इसलिए, केवल यह मानना ही पर्याप्त नहीं है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। पापी को अपने पापों के लिए क्रूस पर चढ़ाए गए पुत्र पर भी विश्वास करना चाहिए। जो विश्वास बचाता है वह उस पुत्र में होना चाहिए जो बचाने के लिए मरा। "जिसे परमेश्वर ने उसके लहू में विश्वास के द्वारा प्रायश्चित्त ठहराया" (रोमियों 3:25)। मसीह हमारा प्रायश्चित्त है क्योंकि उसने हमारे लिए अपना लहू (अपना बलिदान) बहाया और हम विश्वास के द्वारा

crucified" as its object. This faith looks to the cross. Any other notion of faith removes Jesus from the cross and makes him no more than a teacher or lawgiver. Jesus is Savior. One does not rely, therefore, on the conditions, but upon Christ.

1. One Must Repent Of His Sins In Order To Be Baptized And, Thus, Saved.

Jesus says in Luke 13:3, "... unless you repent, you will all likewise perish." It is either repent or perish; the choice is ours. Acts 17:30 says, "Truly these times of ignorance God overlooked, but now commands all men everywhere to repent." All people everywhere are commanded of God to repent. Repent of what? Repent of our sins. Repent of not fully serving and following all that God says. God is pleading with us to repent. He greatly desires that we turn to him. He tells us in 2 Peter 3:9, "The Lord is not slack concerning His promise, as some men count slackness; but is longsuffering toward us, not willing that any should perish but that all should come to repentance." God wants us to repent so we can be saved.

Repentance is not just being sorry. 2 Corinthians 7:10 says, "For Godly sorrow produces repentance leading to salvation, not to be regretted; but the sorrow of the world produces death." Repentance is a change of heart and a change of mind. We must make up our mind to stop living life our way and start living it God's way. It is making up our minds that we are going to serve God with all our might and do everything.

Romans 2:4 says, "The goodness of God leads you to repentance." God has been so good to us, and this should cause us to want to please Him in every way. God, because of His love for us, has done so much for us, and because of this we read in I John 4:19, "We love Him, because He first loved us." This should cause us to want to repent and do all the things that He has asked us to do, otherwise we do not love God. Jesus said in John 14:24, "He who does not love Me does not keep my words."

2. To Repent Is Basically Synonymous With Becoming A Disciple As Well As Confessing Jesus Christ As Lord.

We not only confess that Jesus is the Christ, the Son of the Living God, as Peter did in Matthew 16:18; we also confess Him as our Lord. "... if you confess with your mouth the Lord Jesus and believe in your heart that God has raised Him from the dead, you will be saved..." Romans 10:9. We name Him as our leader, owner, ruler, chief, boss, the one who has total authority over our lives. Someday everyone will make this confession ("...that at the name of Jesus every knee should bow, of those in heaven, and of those on

उसका उत्तर देते हैं। हमें विश्वास होना चाहिए उसके खून में (उसके खून पर भरोसा) या उस पर विश्वास जिसने अपना खून बहाया। लेकिन क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह में विश्वास करना क्या है? यह विश्वास है कि वह हमारे पापों के लिए मरा और साथ ही हमारे पापबलि के रूप में उस पर भरोसा या भरोसा किया।

यीशु मनुष्य को छुड़ाने के लिए मरा, इसलिए उद्धार के लिए उसकी मृत्यु पर निर्भर होना चाहिए या उस पर भरोसा करना चाहिए। क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह पर यह निर्भरता विश्वास है। यह विश्वास कुछ शर्तों को बचाने के अपने वादे को पूरा करने के लिए यीशु की अखंडता में विश्वास से कहीं अधिक है। परिस्थितियों का अर्थ स्वयं मोक्ष के लिए उसकी मृत्यु पर विश्वास करना है। विश्वास क्रूस की ओर, लहू की ओर देखता है। यीशु केवल किसी को प्रभु या राजा के रूप में पहचानने के लिए प्रेरित करने के लिए नहीं मरे, अर्थात्, हम पर शासन करने का अधिकार रखने वाले के रूप में। वह पापियों को बचाने के लिए मरा। इसलिए, जो विश्वास बचाता है उसका अर्थ उसके लहू पर निर्भर होना चाहिए। विश्वास के तत्व के रूप में लहू में विश्वास के बिना, पापबलि के रूप में मसीह के प्रति कोई संतोषजनक प्रतिक्रिया नहीं है। विश्वास जो बचाता है वह अवश्य है कि यीशु मसीह और उसे क्रूस पर चढ़ाया जाए" इसका उद्देश्य है। यह विश्वास क्रूस की ओर देखता है। विश्वास की कोई अन्य धारणा यीशु को क्रूस से हटा देती है और उसे एक शिक्षक या कानून देने वाले से अधिक कुछ नहीं बनाती है। यीशु उद्धारकर्ता है। इसलिए, कोई शर्तों पर नहीं, बल्कि मसीह पर निर्भर करता है।

1. बपतिस्मा लेने के लिए व्यक्ति को अपने पापों का पश्चाताप करना चाहिए और इस प्रकार बचाया जाना चाहिए।

यीशु लूका 13:3 में कहते हैं, "... जब तक तुम मन न फिराओगे, वैसे ही सब भी नाश हो जाओगे।" यह या तो पश्चाताप या नाश है; चुनाव हमारा है। प्रेरितों के काम 17:30 कहता है, "वास्तव में अज्ञानता के इन समयों को परमेश्वर ने अनदेखा किया, परन्तु अब सब मनुष्यों को हर जगह मन फिराने की आज्ञा देता है।" हर जगह सभी लोगों को पश्चाताप करने के लिए परमेश्वर की आज्ञा है। किस बात का पश्चाताप? हमारे पापों का पश्चाताप। पूरी तरह से सेवा न करने और परमेश्वर की कही हुई हर बात का पालन न करने का पश्चाताप करें। परमेश्वर हमसे पश्चाताप करने की याचना कर रहा है। वह बहुत चाहता है कि हम उसकी ओर फिरें। वह हमें 2 पतरस 3:9 में कहता है, "प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में सुस्त नहीं है, जैसा कि कुछ लोग सुस्ती समझते हैं, परन्तु हमारे लिए धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नाश हो, परन्तु यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले।" परमेश्वर चाहता है कि हम पश्चाताप करें ताकि हमें बचाया जा सके।

पछताना सिर्फ पछताना नहीं है। 2 कुरिन्थियों 7:10 कहता है, "क्योंकि ईश्वरीय दुःख से ऐसा मन फिराव होता है, जो उद्धार की ओर ले जाता है, और पछताने के लिये नहीं, परन्तु जगत के शोक से मृत्यु उत्पन्न होती है।" पश्चाताप हृदय का परिवर्तन और मन का परिवर्तन है। हमें अपने जीवन को अपने तरीके से जीने से रोकने के लिए अपना मन बनाना चाहिए और इसे भगवान के तरीके से जीना शुरू करना चाहिए।

earth, and of those under the earth, and that every tongue should confess that Jesus Christ is Lord, to the glory of God the Father." Philippians 2:10-11) but for some it will be too late.

Since baptism is the embodiment of faith and a sinner's appeal to God for forgiveness, it is obvious that without faith in Christ as one's sacrifice and without surrounding to Jesus as Lord. There can be no baptism, and thus no salvation.

3. So What Must One Do To Be Saved?

Repentance is "in the name of Jesus Christ." Jesus as the Christ is man's sin offering. Hence, repentance must be "in the name of" the crucified Christ. The phrase "in the name of Jesus Christ" signifies not only the authority of Jesus, but reliance upon him as sin offering. Hence, repentance is not merely turning away from sin, but it is related to turning to Jesus as sin offering. Such repentance is inseparable from faith that means trust in Jesus Christ. Peter spent much time on Pentecost leading his hearers to repentance. But it was not a mere turning from sin that he sought, but such a turning from sin as would lead to a full acceptance of the Lord and Savior. The rejection of Christ through unbelief was also a sin that called for repentance. When one repents of the rejection of Jesus as Savior he accepts him as the Savior. Faith, therefore, must be accompanied by repentance, and repentance must be associated with trust before one has responded to Christ as his sin offering.

4. It Is Required That Penitent Believers Be Baptized In The Name Of Jesus Christ" (Acts 2:38).

The relation of baptism to faith in the scriptures is easily revealed as the expression or the embodiment of faith. What is signified by trust in Christ crucified is outwardly expressed or embodied by baptism which is a burial in and a resurrection from the water "in the name of Jesus Christ." Baptism, therefore, signifies trust in Christ. It is not something different from faith added to faith and repentance, but an expression of both. Hence, Peter commanded his hearers to repent and be baptized.....in the name of Jesus Christ for the remission of sins" (Acts 2:38). Baptism, like faith, looks to Calvary, to Christ as sin offering. It has, therefore, the meaning of faith. God has joined baptism to faith and repentance, and he expects every one of us "to be baptized in the name of the Lord" (Acts 10:48).

Conclusion:

The conditions of salvation are responses to Christ as sin offering. They are meaningless, therefore, apart from the cross. It is senseless and pointless to reach the conditions without first having reached Jesus as a sin offering. The conditions are not a few commands

यह हमारा मन बना रहा है कि हम अपनी पूरी शक्ति से परमेश्वर की सेवा करने जा रहे हैं और सब कुछ करेंगे।

रोमियों 2:4 कहता है, "परमेश्वर की भलाई तुम्हें मन फिराव की ओर ले जाती है।" परमेश्वर हमारे लिए बहुत अच्छा रहा है, और इससे हमें उसे हर तरह से प्रसन्न करने की इच्छा होनी चाहिए। परमेश्वर ने हमारे लिए अपने प्रेम के कारण हमारे लिए बहुत कुछ किया है, और इस वजह से हम 1 यूहन्ना 4:19 में पढ़ते हैं, "हम उससे प्रेम करते हैं, क्योंकि उसने पहिले हम से प्रेम किया।" इससे हमें पश्चाताप करना चाहिए और वह सब करना चाहिए जो उसने हमसे करने के लिए कहा है, अन्यथा हम परमेश्वर से प्रेम नहीं करते हैं। यीशु ने यूहन्ना 14:24 में कहा, "जो मुझ से प्रेम नहीं रखता, वह मेरे वचनों को नहीं मानता।"

2. पश्चाताप करना मूल रूप से एक शिष्य बनने के साथ-साथ यीशु मसीह को प्रभु के रूप में स्वीकार करने का पर्याय है।

हम न केवल यह अंगीकार करते हैं कि यीशु ही जीवित परमेश्वर का पुत्र मसीह है, जैसा कि पतरस ने मत्ती 16:18 में किया था; हम उसे अपना प्रभु भी मानते हैं। "... यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुआओं में से जिलाया, तो तू उद्धार पाएगा..." रोमियों 10:9. हम उसे अपने नेता, मालिक, शासक, मुखिया, मालिक के रूप में नामित करते हैं, जिसका हमारे जीवन पर पूर्ण अधिकार है। किसी दिन हर कोई यह अंगीकार करेगा ("...कि यीशु के नाम पर हर एक घुटना झुकना चाहिए, जो स्वर्ग में हैं, और जो पृथ्वी पर हैं, और जो पृथ्वी के नीचे हैं, और यह कि हर एक जीभ अंगीकार करे कि यीशु मसीह ही प्रभु है, पिता परमेश्वर की महिमा के लिये।" फिलिप्पियों 2:10-11) परन्तु कुछ के लिए बहुत देर हो चुकी होगी।

चूंकि बपतिस्मा विश्वास का अवतार है और क्षमा के लिए एक पापी की ईश्वर से अपील है, यह स्पष्ट है कि मसीह में विश्वास के बिना किसी के बलिदान के रूप में और यीशु को प्रभु के रूप में घेरने के बिना। कोई बपतिस्मा नहीं हो सकता है, और इस प्रकार कोई मोक्ष नहीं हो सकता है।

3. तो किसी को बचाए जाने के लिए क्या करना चाहिए?

जब कोई यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में अस्वीकार करने का पश्चाताप करता है तो वह उसे उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करता है। विश्वास, इसलिए, पश्चाताप के साथ होना चाहिए, और पश्चाताप को विश्वास के साथ जोड़ा जाना चाहिए, इससे पहले कि कोई व्यक्ति मसीह को उसके पापबलि के रूप में उत्तर दे।

4. यह आवश्यक है कि पश्चाताप करने वाले विश्वासियों को यीशु मसीह के नाम पर बपतिस्मा दिया जाए" (प्रेरितों के काम 2:38)।

शास्त्रों में विश्वास के लिए बपतिस्मा के संबंध को अभिव्यक्ति या विश्वास के अवतार के रूप में आसानी से प्रकट किया जाता है। क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह में विश्वास से जो संकेत मिलता है वह बाहरी रूप से बपतिस्मा द्वारा व्यक्त या सन्निहित है जो "यीशु मसीह के नाम पर" पानी से दफन और पुनरुत्थान है। इसलिए, बपतिस्मा मसीह में विश्वास का प्रतीक है।

arbitrarily given by one in authority to test man's willingness to obey, but natural responses to one who is man's sin offering. He must make Christ crucified his plea before God and expect salvation because of Jesus' death on man's behalf. The sinner is being called, not merely to confess Jesus as his Lord but as Savior.

Questions

1. Whoever is committed to the only begotten son shall be saved because he desires to please God by doing His will.

True ____ False ____

2. To believe in the crucified Christ is to
 - a. ____ believe Christ died as our sin sacrifice
 - b. ____ put trust and reliance upon Him as sin offering
 - c. ____ a and b
3. Why is it necessary for a person to repent
 - a. ____ It is not necessary
 - b. ____ To obey a command
 - c. ____ Repenting is an act of change in attitude and life and may include a verbal statement of such action.

4. Expressing one's belief that Jesus is Lord and Savior is totally unnecessary.

True ____ False ____

5. Is there any benefit in appealing to God for forgiveness if you do not have faith that he can or are unwilling to put your trust in Him?
Yes ____ No ____

SHOULD BABIES BE BAPTIZED?

I believe that babies should not and cannot be baptized and here are the reasons why not.

Lesson 7

1. Infant Baptism Is Unbiblical

a. Since baptism is the embodiment of faith and a sinner's appeal to God for forgiveness, it is obvious that without faith in Christ as one's sin sacrifice, there can be no baptism.

Acts 22:16 — An infant is incapable of calling on the name of the Lord.

1 Peter 3:21 — An infant is incapable of appealing to God for a good conscience.

यह विश्वास और पश्चाताप में जोड़े गए विश्वास से अलग कुछ नहीं है, बल्कि दोनों की अभिव्यक्ति है। इसलिए, पतरस ने अपने श्रोताओं को पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम पर पश्चाताप करने और बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी" (प्रेरितों के काम 2:38)। बपतिस्मा, विश्वास की तरह, कलवारी को, मसीह को पापबलि के रूप में देखता है। इसलिए, यह विश्वास का अर्थ है। परमेश्वर ने बपतिस्मा को विश्वास और पश्चाताप के साथ जोड़ दिया है, और वह उम्मीद करता है कि हम में से प्रत्येक "प्रभु के नाम पर बपतिस्मा लेगा" (प्रेरितों के काम 10:48)।

निष्कर्ष:

उद्धार की शर्तें पापबलि के रूप में मसीह के प्रति प्रतिक्रिया हैं। वे अर्थहीन हैं, इसलिए, क्रूस के अलावा। पापबलि के रूप में यीशु के पास पहली बार पहुँचे बिना परिस्थितियों तक पहुँचना निरर्थक और व्यर्थ है। शर्तें मनुष्य की आज्ञा मानने की इच्छा का परीक्षण करने के लिए मनमाने ढंग से दी गई कुछ आज्ञाएँ नहीं हैं, बल्कि मनुष्य की पापबलि के लिए स्वाभाविक प्रतिक्रियाएँ हैं। उसे परमेश्वर के सामने मसीह को सूली पर चढ़ा देना चाहिए और मनुष्य की ओर से यीशु की मृत्यु के कारण उद्धार की अपेक्षा करनी चाहिए। पापी को न केवल यीशु को अपना प्रभु मानने के लिए बल्कि उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करने के लिए बुलाया जा रहा है।

प्रश्न

1. जो कोई एकलौते पुत्र के प्रति वचनबद्ध है, वह उद्धार पाएगा क्योंकि वह परमेश्वर की इच्छा पूरी करके उसे प्रसन्न करना चाहता है।

सही गलत ____

2. क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह में विश्वास करना है
 - d. ____ विश्वास करें कि मसीह हमारे पाप बलिदान के रूप में मरा
 - e. ____ पापबलि के रूप में उस पर भरोसा और भरोसा रखें
 - f. ____ ए और बी

3. इंसान को पश्चाताप करना क्यों ज़रूरी है?

- a. ____ यह आवश्यक नहीं है
- b. ____ आज्ञा का पालन करना
- c. ____ पश्चाताप दृष्टिकोण और जीवन में परिवर्तन का एक कार्य है और इसमें इस तरह की कार्रवाई का मौखिक बयान शामिल हो सकता है।

4. किसी के विश्वास को व्यक्त करना कि यीशु प्रभु और उद्धारकर्ता हैं, पूरी तरह से अनावश्यक है।

सही गलत ____

5. क्या परमेश्वर से क्षमा के लिए अपील करने का कोई लाभ है यदि आपको यह विश्वास नहीं है कि वह आप पर भरोसा कर सकता है या नहीं करना चाहता है?

Colossians 2:12 — An infant is incapable of having faith in the working of God.

b. The scriptures describe those who are to be baptized and the description excludes infants.

Matthew 28:19 — “make disciples of all the nations, baptizing them (Those who became disciples).”

Mark 16:16 — “He who has believed and has been baptized shall be saved.”

Acts 2:41 — “Then those who had received his word were baptized.”

Acts 8:12 — “...when they believed ... they were baptized, men and women alike.”

Acts 8:36-37 — “What prevents me from being baptized?” “...if you believe with all your heart, you may.”

c. Simply stated, it was not practiced in the New Testament. The earliest historical references to infant baptism came 150 years (Origen) to 200 years (Irenaeus) after Pentecost. This prolonged silence makes it obvious that infant baptism was an innovation to what the apostolic church practiced. Even those who defend the practice of infant baptism have to admit this is so. Consider, for example, L. Berkhof in his *Systematic Theology* under the heading, “the Scriptural basis for infant baptism.” He writes: “It may be said at the outset that there is no explicit command in the Bible to baptize children, and that there is not a single instance in which we are plainly told that children were baptized. But this does not necessarily make infant baptism unbiblical” (p. 632).

2. Some Arguments Given By Those Who Believe In Infant Baptism

a. Martin Luther in his “Large Catechism Part Fourth:

i. “That the Baptism of infants is pleasing to Christ is sufficiently proved from His own work, namely, that God sanctifies many of them who have been thus baptized, and has given them the Holy Ghost; and that there are yet many even today in whom we perceive that they have the Holy Ghost both because of their doctrine and life ... This is indeed the best and strongest proof for the simple-minded and unlearned.”

ii. “Further, we say that we are not so much concerned to know whether the person baptized believes or not; for on that account Baptism does not become invalid; but everything depends upon the Word and command of God. When the Word is added to the water, Baptism is valid, even though faith be wanting... For even though a

हां नहीं _____

क्या बच्चों को बपतिस्मा देना चाहिए?

मेरा मानना है कि बच्चों को बपतिस्मा नहीं लेना चाहिए और न ही दिया जा सकता है और यहाँ कारण हैं कि क्यों नहीं।

पाठ 7

1. शिशु बपतिस्मा बाइबिल नहीं है

एक। चूंकि बपतिस्मा विश्वास का मूर्त रूप है और एक पापी द्वारा परमेश्वर से क्षमा के लिए अपील की जाती है, यह स्पष्ट है कि मसीह में अपने पाप बलिदान के रूप में विश्वास किए बिना, कोई बपतिस्मा नहीं हो सकता।

प्रेरितों के काम 22:16 - एक शिशु प्रभु के नाम से पुकारने में असमर्थ है।

1 पतरस 3:21 — एक शिशु अच्छे विवेक के लिए परमेश्वर से अपील करने में असमर्थ होता है।

कुलुस्सियों 2:12 — एक शिशु परमेश्वर के कार्य में विश्वास रखने में असमर्थ होता है।

बी। शास्त्र उन लोगों का वर्णन करते हैं जिन्हें बपतिस्मा लेना है और विवरण में शिशुओं को शामिल नहीं किया गया है।

मत्ती 28:19 — “सब जातियों के लोगों को (जो चले बने) उन्हें बपतिस्मा देकर चेला बनाओ।”

मरकुस 16:16 - “जिसने विश्वास किया है और बपतिस्मा ले लिया है वह बच जाएगा।”

प्रेरितों के काम 2:41 — “तब जिन लोगों ने उसका वचन ग्रहण किया था, उन्होंने बपतिस्मा लिया।”

प्रेरितों के काम 8:12 — “... जब उन्होंने विश्वास किया ... तो पुरुषों और महिलाओं ने समान रूप से बपतिस्मा लिया।”

प्रेरितों के काम 8:36-37 — “मुझे बपतिस्मा लेने से क्या रोकता है?” “...यदि आप पूरे मन से विश्वास करते हैं, तो आप कर सकते हैं।”

सी। सीधे शब्दों में कहें तो, नए नियम में इसका अभ्यास नहीं किया गया था।पेंटेकोस्ट के बाद शिशु के बपतिस्मा का सबसे पहला ऐतिहासिक संदर्भ 150 साल (ओरिजेन) से 200 साल (आइरेनियस) तक आया। यह लंबी चुप्पी यह स्पष्ट करती है कि शिशु बपतिस्मा प्रेरितिक चर्च के अभ्यास के लिए एक नवीनता थी। यहाँ तक कि जो लोग शिशु बपतिस्मा की प्रथा का बचाव करते हैं, उन्हें भी यह स्वीकार करना होगा कि ऐसा ही है। उदाहरण के लिए, एल. बेरखोफ ने अपने व्यवस्थित धर्मशास्त्र में शीर्षक के तहत, “शिशु बपतिस्मा के लिए शास्त्रीय आधार” पर विचार करें। वह लिखता है: “शुरुआत में यह कहा जा सकता है कि बच्चों को बपतिस्मा देने के लिए बाइबल में कोई स्पष्ट आदेश नहीं है, और एक भी उदाहरण ऐसा नहीं है जिसमें हमें स्पष्ट रूप से बताया गया

Jew should today come dishonestly and with evil purpose, and we should baptize him in all good faith, we must say that his baptism is nevertheless genuine. For here is the water together with the Word of God, even though he does not receive it as he should."

iii. "Therefore they are presumptuous, clumsy minds that draw such inferences and conclusions as these: Where there is not the true faith, there also can be no true Baptism. Just as if I would infer: If I do not believe, then Christ is nothing; or thus: If I am not obedient, then father, mother, and government are nothing. Gold is none the less gold though a harlot wear it in sin and shame."

b. Catholic:

i. "Some people mistakenly contend that the phrase "Repent and be baptized" and "Believe and be baptized" demonstrate that only those old enough to repent can be baptized. But, consider 2 Thessalonians 3:10, "If anyone was unwilling to work, neither should that one eat." It says anyone. Does that mean that we should starve our babies since they don't work? Of, course not. The verbs "to repent", "to believe", and "to work" apply only to the extent that a person is capable of doing so."

ii. "Infants moved by God's grace can receive His Gift of faith. When Mary brought Jesus to St. Elizabeth and St. John the Baptist. Elizabeth replied, "The infant in my womb leaped for joy."

a. Calvin justified infant baptism on the grounds that there is a seed of faith which is implanted in the children of believing parents because of the covenant promise of God. Thus the Reformed evangelical position: 1) While there is no explicit command, infant baptism is based on the essential unity and continuity of the covenant of grace, 2) The covenant of grace is a single, spiritual covenant made initially with Abraham and fulfilled in Christ, 3) No faith is necessary, 4) Because of covenantal unity, the sign of the new covenant can be given to the children of believers in the NT, just as Abraham gave the sign of the covenant God made with him to his infant sons in the OT, and 5) The sign of the new covenant is baptism which replaces the old covenant sign of circumcision. This accounts for things like "household baptisms," in which it is assumed that infants were baptized, "covenant children" instead of "privileged children" in 1 Corinthians 7:14, and the "inclusion" of little children in the kingdom of God as opposed to the "likeness" of little children to kingdom citizens in Mark 10:14-16.

A Rebuttal

हो कि बच्चों ने बपतिस्मा लिया था। परन्तु यह अनिवार्य रूप से शिशु के बपतिस्मा को बाइबिल नहीं बना देता" (पृष्ठ 632)।

2. शिशु बपतिस्मा में विश्वास रखने वालों द्वारा दिए गए कुछ तर्क

एक। मार्टिन लूथर अपने "बड़े प्रवचन भाग चौथे" में:

मैं। "कि शिशुओं का बपतिस्मा मसीह को प्रसन्न करने वाला है, यह उसके अपने कार्य से पर्याप्त रूप से प्रमाणित है, अर्थात्, परमेश्वर उनमें से बहुतों को पवित्र करता है जिन्होंने इस प्रकार बपतिस्मा लिया है, और उन्हें पवित्र आत्मा दिया है; और यह कि आज भी बहुत से ऐसे हैं जिनमें हम अनुभव करते हैं कि उनके पास उनके सिद्धांत और जीवन दोनों के कारण पवित्र आत्मा है ... यह वास्तव में सरल-मन वाले और अनपढ़ों के लिए सबसे अच्छा और सबसे मजबूत प्रमाण है।"

ii. "इसके अलावा, हम कहते हैं कि हम यह जानने के लिए इतने चिंतित नहीं हैं कि बपतिस्मा लेने वाला व्यक्ति विश्वास करता है या नहीं; क्योंकि उस कारण बपतिस्मा अमान्य नहीं हो जाता; परन्तु सब कुछ परमेश्वर के वचन और आज्ञा पर निर्भर करता है। जब वचन पानी में मिला दिया जाता है, तो बपतिस्मा मान्य होता है, भले ही विश्वास की कमी हो... क्योंकि भले ही आज एक यहूदी को बेईमानी और बुरे उद्देश्य के साथ आना चाहिए, और हमें उसे सभी अच्छे विश्वास में बपतिस्मा देना चाहिए, हमें यह कहना चाहिए कि उसका बपतिस्मा फिर भी वास्तविक है। क्योंकि जल परमेश्वर के वचन के साथ यहां है, तौभी वह उसे उस रूप में ग्रहण नहीं करता जैसा उसे करना चाहिए।"

iii. "इसलिए वे अभिमानी, अनाड़ी दिमाग हैं जो इस तरह के निष्कर्ष और निष्कर्ष निकालते हैं: जहां सच्चा विश्वास नहीं है, वहां कोई सच्चा बपतिस्मा भी नहीं हो सकता है। जैसे कि मैं अनुमान लगाता: यदि मैं विश्वास नहीं करता, तो मसीह कुछ भी नहीं है; या इस प्रकार: यदि मैं आज्ञाकारी नहीं हूँ, तो पिता, माता और सरकार कुछ भी नहीं हैं। सोना भी कम सोना नहीं है, हालांकि वेश्या इसे पाप और शर्म में पहनती है।"

बी। कैथोलिक:

मैं। "कुछ लोग गलती से तर्क देते हैं कि "पश्चात्ताप करो और बपतिस्मा लो" और "विश्वास करो और बपतिस्मा लो" वाक्यांश प्रदर्शित करते हैं कि केवल वे ही जो पश्चात्ताप करने के लिए पर्याप्त पुराने हैं, बपतिस्मा लिया जा सकता है। लेकिन, 2 थिस्सलुनीकियों 3:10 पर विचार करें, "यदि कोई काम करना न चाहे, तो वह न खाए।" यह कोई भी कहता है। क्या इसका मतलब यह है कि हमें अपने बच्चों को भूखा रखना चाहिए क्योंकि वे काम नहीं करते हैं? बिलकूल नहीं। क्रियाएँ "पश्चात्ताप करना", "विश्वास करना" और "काम करना" केवल उस सीमा तक लागू होती हैं जब कोई व्यक्ति ऐसा करने में सक्षम होता है।"

ii. "भगवान की कृपा से प्रेरित शिशु उनके विश्वास का उपहार प्राप्त कर सकते हैं। जब मैरी यीशु को सेंट एलिजाबेथ और सेंट जॉन द बैपटिस्ट के पास ले आई। इलीशिबा ने उत्तर दिया, "मेरे गर्भ में पल रहा शिशु खुशी से उछल पड़ा।"

b. केल्विन इस आधार पर शिशु के बपतिस्मा को न्यायोचित ठहराया कि विश्वास का एक बीज है जो परमेश्वर की वाचा की प्रतिज्ञा के कारण विश्वास करने वाले माता-पिता के बच्चों में प्रत्यारोपित

Nowhere does the Bible mention a single, spiritual "covenant of grace" that somehow spans the ages and connects Abraham to Christ.

While their physical relationship to Abraham entitled them to temporal, physical blessings under the Abrahamic covenant, it did not entitle his descendants to any eternal, spiritual blessings unless they were spiritually like their father Abraham (i.e. they were looking in faith to God). God has never promised spiritual blessings to anyone, at any time, on any other basis than grace. And grace by its very definition not only excludes all human merit; it also excludes physical and natural descent. This is true in both the Old and New Testaments no matter what the covenant.

The children of believers are in a very privileged position. They are the subjects of their parents' prayers, they are exposed to the Word of God and to the testimonies of their parents and other Christians, and they are urged to seek the Lord while he may be found and call upon him while he is near. But nowhere in the NT are we told to baptize them until they give evidence that they come to personal faith in God through Christ Jesus the savior.

Just because they are children of believers does not mean they have been chosen by God, nor that they have any share in the new covenant. To baptize them as if they did, or in the hope that they will, is unbiblical. To baptize them as a sign that they are "covenant children" who need to respond to the gracious overtures of God, is to go back to the types and shadows of the OT, to the days of Abraham and Moses when God was preparing Israel and the world for the emergence of a new nation and people who would all know him, love him, and serve him.

That circumcision was a prophetic type of baptism is seen in Colossians 2:11, 12: "In Him you were also circumcised with the circumcision made without hands, by putting off the body of the sins of the flesh, by the circumcision of Christ, buried with Him in baptism, in which you also were raised with Him through faith in the working of God, who raised Him from the dead." The language cannot apply to infants: an infant has no sins to be put off and an infant has no faith in the working of God.

Baptism of unknowing, unbelieving infants is as unbiblical and ineffective to accomplish the biblical purposes for baptism as it is for adults.

E. When Is A Child Old Enough To Be Baptized?

This is an important question, especially for parents and grandparents. There is not really a clear, concise answer in the scriptures for this question. This may imply that it

किया जाता है। इस प्रकार सुधारित इंजील की स्थिति: 1) जबकि कोई स्पष्ट आदेश नहीं है, शिशु बपतिस्मा अनुग्रह की वाचा की आवश्यक एकता और निरंतरता पर आधारित है, 2) अनुग्रह की वाचा एक एकल, आध्यात्मिक वाचा है जिसे शुरू में अब्राहम के साथ बनाया गया था और इसमें पूरा किया गया था। क्राइस्ट, 3) कोई विश्वास आवश्यक नहीं है, 4) वाचा की एकता के कारण, नई वाचा का चिन्ह NT में विश्वासियों के बच्चों को दिया जा सकता है, जैसे अब्राहम ने अपने शिशु को उसके साथ बनाई गई वाचा का संकेत दिया था। ओटी में पुत्र, और 5) नई वाचा का चिन्ह बपतिस्मा है जो खतने की पुरानी वाचा के चिन्ह को प्रतिस्थापित करता है। यह "घरेलू बपतिस्मा,

c.

एक खंडन

बाइबल कहीं भी एक एकल, आध्यात्मिक "अनुग्रह की वाचा" का उल्लेख नहीं करती है जो किसी भी तरह युगों तक फैली हुई है और अब्राहम को मसीह से जोड़ती है।

जबकि अब्राहम के साथ उनके शारीरिक संबंध ने उन्हें अब्राहम की वाचा के तहत लौकिक, भौतिक आशीषों का अधिकार दिया, इसने उसके वंशजों को किसी भी शाश्वत, आध्यात्मिक आशीषों का अधिकार नहीं दिया, जब तक कि वे आत्मिक रूप से अपने पिता अब्राहम की तरह नहीं थे (अर्थात् वे परमेश्वर के प्रति विश्वास में देख रहे थे)। परमेश्वर ने कभी किसी को, किसी भी समय, अनुग्रह के अलावा किसी अन्य आधार पर आध्यात्मिक आशीष देने का वादा नहीं किया है। और अनुग्रह अपनी परिभाषा के द्वारा न केवल सभी मानवीय योग्यताओं को बाहर करता है; इसमें भौतिक और प्राकृतिक वंश को भी शामिल नहीं किया गया है। यह पुराने और नए नियम दोनों में सच है चाहे कोई भी वाचा ही क्यों न हो।

विश्वासियों के बच्चे बहुत विशेषाधिकार प्राप्त स्थिति में हैं। वे अपने माता-पिता की प्रार्थनाओं के विषय हैं, वे परमेश्वर के वचन और अपने माता-पिता और अन्य ईसाइयों की गवाही के संपर्क में हैं, और उनसे आग्रह किया जाता है कि जब तक वह मिल जाए तब तक प्रभु की तलाश करें और जब वह निकट हो तो उसे पुकारें। लेकिन NT में कहीं भी हमें उन्हें बपतिस्मा देने के लिए नहीं कहा गया है जब तक कि वे इस बात का प्रमाण नहीं देते कि वे उद्धारकर्ता मसीह यीशु के माध्यम से परमेश्वर में व्यक्तिगत विश्वास में आते हैं।

सिर्फ इसलिए कि वे विश्वासियों की संतान हैं इसका मतलब यह नहीं है कि उन्हें परमेश्वर द्वारा चुना गया है, और न ही उनका नई वाचा में कोई हिस्सा है। उन्हें बपतिस्मा देना जैसे कि उन्होंने किया था, या इस आशा में कि वे करेंगे, बाइबल आधारित नहीं है। उन्हें एक संकेत के रूप में बपतिस्मा देने के लिए कि वे "वाचा के बच्चे" हैं जिन्हें भगवान के अनुग्रहपूर्ण प्रस्तावों का जवाब देने की आवश्यकता है, ओटी के प्रकारों और छायाओं में वापस जाना है, अब्राहम और मूसा के दिनों में जब परमेश्वर इस्राएल को तैयार कर रहा था और एक नए राष्ट्र के उदय के लिए दुनिया और ऐसे लोग जो सभी उसे जानते हैं, उससे प्यार करते हैं और उसकी सेवा करते हैं।

is the wrong question. If so, what should the question then be? A more useful question might be: "What must a child (or any person) know and understand in order to be baptized? Maturity and capacity for understanding spiritual matters does not always depend exactly on the age of the person.

The answer to this question ("What must a person know and understand in order to be baptized?") has answers in the scriptures. These answers can be put in the form of questions that you can ask the child to answer. Here are some questions that a person must be able to answer in order to be ready to be baptized:

1. Who is God?
2. What is sin?
3. What is the result when a person sins?
4. What does it mean to be lost?
5. What does it mean to be saved?
6. Who is Jesus?
7. Why was Jesus crucified or why did Jesus have to die?
8. What does God promise to do for a person in baptism?
9. What does it mean when we say that our sins are washed away by the blood of Jesus?
10. What does it mean to say that Jesus died for you?

In addition, these questions of a personal nature may be asked:

1. Are you lost?
2. Why do you feel guilty before God?
3. Why do you want to be baptized?
4. Have you repented of your sins? What does that mean?
5. Do you believe in Jesus? What does that mean? What does believing in Jesus have to do with his death on the cross?
6. Are you ready to commit yourself and your life to Jesus Christ and confess Him as your Lord? What does it mean for Jesus to be the Lord?

NOTES:

1. These questions are all to be answered, not with a simple yes or no, but with expressions of the child's own understanding.
2. A child (or adult) may not have to understand theological words like "justification, atonement, reconciliation, propitiation, redemption, regeneration, etc. but they can answer these questions in their own vocabulary in simple terms.
3. Be careful of children who are mainly motivated by a desire to please adults.

वह खतना एक भविष्यसूचक प्रकार का बपतिस्मा था जिसे कुलुस्सियों 2:11, 12 में देखा गया है: "उसी में तुम्हारा खतना भी बिना हाथों के किए हुए खतना से हुआ, और शरीर के पापों की देह को उतारकर, और मसीह के खतना के द्वारा, उसके साथ बपतिस्मे में दफनाया गया, जिसमें तुम भी उसके साथ उस विश्वास के द्वारा जी उठे हो जो परमेश्वर के कार्य में है, जिस ने उसे मरे हुआ में से जिलाया।" भाषा शिशुओं पर लागू नहीं हो सकती: एक शिशु के पास कोई पाप नहीं है जिसे दूर किया जाना है और एक शिशु को ईश्वर के कार्य में कोई विश्वास नहीं है।

अनजाने, अविश्वासी शिशुओं का बपतिस्मा उतना ही गैर-बाइबलीय और अप्रभावी है जितना कि वयस्कों के लिए बपतिस्मा के लिए बाइबिल के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए।

ई. बपतिस्मा लेने के लिए एक बच्चा कब काफी पुराना है?

यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है, खासकर माता-पिता और दादा-दादी के लिए। इस प्रश्न का वास्तव में शास्त्रों में स्पष्ट, संक्षिप्त उत्तर नहीं है। इसका मतलब यह हो सकता है कि यह गलत सवाल है। यदि हां, तो प्रश्न क्या होना चाहिए? एक अधिक उपयोगी प्रश्न हो सकता है: "बपतिस्मा लेने के लिए एक बच्चे (या किसी भी व्यक्ति) को क्या जानना और समझना चाहिए? आध्यात्मिक मामलों को समझने की परिपक्वता और क्षमता हमेशा व्यक्ति की उम्र पर निर्भर नहीं करती है।

इस प्रश्न का उत्तर ("बपतिस्मा लेने के लिए एक व्यक्ति को क्या जानना और समझना चाहिए?") के शास्त्रों में उत्तर हैं। इन उत्तरों को प्रश्नों के रूप में रखा जा सकता है जिनका उत्तर आप बच्चे से पूछ सकते हैं। यहाँ कुछ प्रश्न दिए गए हैं जिनका एक व्यक्ति को बपतिस्मा लेने के लिए तैयार होने के लिए उत्तर देने में सक्षम होना चाहिए:

1. ईश्वर कौन है?
2. पाप क्या है?
3. जब कोई व्यक्ति पाप करता है तो उसका परिणाम क्या होता है?
4. खो जाने का क्या मतलब है?
5. बचाए जाने का क्या अर्थ है?
6. यीशु कौन है?
7. यीशु को सूली पर क्यों चढ़ाया गया या यीशु को क्यों मरना पड़ा?
8. बपतिस्मे में एक व्यक्ति के लिए परमेश्वर क्या करने का वादा करता है?
9. इसका क्या अर्थ है जब हम कहते हैं कि यीशु के लहू से हमारे पाप धुल जाते हैं?
10. यह कहने का क्या अर्थ है कि यीशु आपके लिए मरा?

इसके अलावा, व्यक्तिगत प्रकृति के ये प्रश्न पूछे जा सकते हैं:

1. क्या आप खो गए हैं?
2. आप भगवान के सामने दोषी क्यों महसूस करते हैं?
3. आप बपतिस्मा क्यों लेना चाहते हैं?
4. क्या आपने अपने पापों का पश्चाताप किया है? इसका क्या मतलब है?

4. Regular participation in Bible reading and prayer, worship, listening to sermons and classes are important to gauge spiritual awareness.
5. The child must be able to make a commitment to the Lord in terms of obedience.

Questions

1. Baptism is
 - a. Another's, not your, decision based on their belief
 - b. A personal decision based on faith and trust
2. What does the Bible say about baptism?
 - a. make disciples of all the nations, baptizing them
 - b. he who has believed and has been baptized shall be saved.
 - c. those who had received his word were baptized.
 - d. be baptized for a gravely ill or deceased family member or friend
 - e. all the above
 - f. a, b and c
3. Baptism is valid, even though faith is wanting.
True False
4. In the New Covenant baptism is the circumcision of the putting off the body of sins
True False
5. Everyone must be baptized even though they do not believe they have sinned
True False

MUST BAPTISM BE DONE BY IMMERSING A PERSON IN WATER INSTEAD OF JUST SPRINKLING OR POURING WATER ON THEM?

I think the answer is yes and these are some reasons why.

Lesson 8

The Greek word translated "baptize" means immerse.

Baptism is from the Greek *baptizo* which always means to "dip", "immerse", or "submerge. Modern English dictionaries may give other definitions but this only reflects modern usage. This does not necessarily show what the word means in the language of the Bible. Greek dictionaries of Bible words show "baptize" means to immerse:

Thayer's Lexicon on *baptizo* says: "to dip, immerse, submerge."

5. क्या आपको जीसस में विश्वास है? इसका क्या मतलब है? यीशु पर विश्वास करने का कूस पर उसकी मृत्यु से क्या लेना-देना है?
6. क्या आप अपने आप को और अपने जीवन को यीशु मसीह के लिए समर्पित करने और उन्हें अपने प्रभु के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार हैं? यीशु के प्रभु होने का क्या अर्थ है?

टिप्पणियाँ:

1. इन सभी सवालों के जवाब साधारण हां या ना में नहीं, बल्कि बच्चे की अपनी समझ की अभिव्यक्ति के साथ दिए जाने हैं।
2. एक बच्चे (या वयस्क) को "औचित्य, प्रायश्चित, सुलह, प्रायश्चित, छुटकारे, उत्थान, आदि जैसे धार्मिक शब्दों को समझने की आवश्यकता नहीं हो सकती है, लेकिन वे इन प्रश्नों का उत्तर अपनी शब्दावली में सरल शब्दों में दे सकते हैं।
3. उन बच्चों से सावधान रहें जो मुख्य रूप से वयस्कों को खुश करने की इच्छा से प्रेरित होते हैं।
4. नियमित भागीदारी है बाइबल पढ़ना और प्रार्थना, पूजा, उपदेश सुनना और कक्षाएं आध्यात्मिक जागरूकता को मापने के लिए महत्वपूर्ण हैं।
5. आज्ञाकारिता के मामले में बच्चे को प्रभु के प्रति प्रतिबद्धता बनाने में सक्षम होना चाहिए।

प्रश्न

1. बपतिस्मा है
 - a. दूसरे का, आपका नहीं, उनके विश्वास के आधार पर निर्णय
 - b. विश्वास और विश्वास पर आधारित एक व्यक्तिगत निर्णय
2. बपतिस्मे के बारे में बाइबल क्या कहती है?
 - a. सभी राष्ट्रों के चले बनाओ, उन्हें बपतिस्मा दो
 - b. जिसने विश्वास किया है और बपतिस्मा लिया है वह बचाया जाएगा।
 - c. जिन्होंने उसका वचन प्राप्त किया था, उन्होंने बपतिस्मा लिया।
 - d. गंभीर रूप से बीमार या मृत परिवार के सदस्य या मित्र के लिए बपतिस्मा लें
 - e. सब से ऊपर
 - f. ए, बी और सी
3. बपतिस्मा वैध है, भले ही विश्वास चाह रहा हो।
सही गलत
4. नई वाचा में बपतिस्मा पापों के शरीर को दूर करने का खतना है
सही गलत
5. सभी को बपतिस्मा लेना चाहिए, भले ही वे विश्वास न करें कि उन्होंने पाप किया है
सही गलत

Strong's Concordance defines *baptizo*, "to make whelmed i.e.: fully wet."

Lydell and Scott define it as "To dip, dip under."

Exponents of sprinkling overlook an important factor. The original New Testament text and the spoken language of that day was Greek. The authors of the New Testament knew the Greek word *baptizo* meant to immerse. They also knew the Greek word *rantizo* meant to sprinkle and the Greek word *cheo* meant to pour. These often used words were never interchangeable, having separate meanings. If God had intended for baptism to be sprinkling, the Greek word *rantizo*, or pouring, the Greek word *cheo*, He would have been employed them rather than immersion, the Greek word *baptizo*.

2. The Bible Evidence

The best way to understand a Bible command is to study the passages that refer to it in context comparing them to other passages on the subject. This is how we learn the meaning of words. Notice what baptism requires and consider what action fits what the Bible says:

a. Baptism requires water

The element or substance used is not inherent in the word "baptize." The substance, though, used in the baptism that Jesus commanded everyone, is water.

- Acts 10:47-48 — "Surely no one can refuse the water for these to be baptized..."

b. Baptism requires much water

- John 3:23 states, "And John also was baptizing in Aenon near to Salim, because there was much water there..." "Much water" is not needed if one is merely being sprinkled or poured, but it is necessary for immersion.

c. In baptism people came to water.

- Acts 8:36 — "They came to some water."
- Matthew 3:5-6 — "Then Jerusalem was going out to him, and all Judea, and all the district around the Jordan; and they were being baptized by him in the Jordan River, as they confessed their sins."

Some people think the eunuch pulled out a bottle of water and Philip used some of it to baptize him. Not so! The water used to baptize the eunuch was a body of water they came to as they traveled. When people receive sprinkling or pouring, do they need to go to the water? No, the water can come to them, because not much is required, but when people are immersed, do they go to the water.

d. Baptism involves going down into and coming up out of the water.

क्या किसी व्यक्ति को सिर्फ छिड़कने या उन पर पानी डालने के बजाय पानी में डुबो कर ही बपतिस्मा लेना चाहिए?

मुझे लगता है कि इसका उत्तर हां है और ये कुछ कारण हैं।

पाठ 8

"बपतिस्मा" अनुवादित यूनानी शब्द का अर्थ है विसर्जित करना।

बपतिस्मा ग्रीक से लिया गया है, जिसका अर्थ हमेशा "डुबकी", "विसर्जित" या "डूबना" होता है। आधुनिक अंग्रेजी शब्दकोश अन्य परिभाषाएं दे सकते हैं लेकिन यह केवल आधुनिक उपयोग को दर्शाता है। यह जरूरी नहीं दिखाता कि बाइबल की भाषा में इस शब्द का क्या अर्थ है। बाइबिल शब्दों के ग्रीक शब्दकोशों में "बपतिस्मा" का अर्थ है विसर्जित करना:

थायर्स लेक्सिकनऑन बैप्टिजो कहते हैं: "डुबकी देना, डुबाना, डुबाना।"

मजबूत सहमति बैप्टिजो को परिभाषित करता है, "मजबूत बनाने के लिए: पूरी तरह से गीला।"

लिडेल और स्कॉट्स "डुबकी, नीचे डुबकी" के रूप में परिभाषित करें।

छिड़काव के प्रतिपादक एक महत्वपूर्ण कारक की अनदेखी करते हैं। नए नियम का मूल पाठ और उस समय की बोली जाने वाली भाषा ग्रीक थी। नए नियम के लेखक ग्रीक शब्द बैप्टिजो को विसर्जित करना जानते थे। वे यह भी जानते थे कि ग्रीक शब्द रैन्टिजो का मतलब छिड़कना होता है और ग्रीक शब्द चीओ का मतलब डालना होता है। अक्सर इस्तेमाल किए जाने वाले ये शब्द अलग-अलग अर्थ रखते हुए कभी भी विनिमेय नहीं होते थे। यदि परमेश्वर का इरादा था कि बपतिस्मा छिड़काव हो, ग्रीक शब्द रैन्टिजो, या डालना, ग्रीक शब्द चीओ, तो वह उन्हें विसर्जन के बजाय नियोजित करता, ग्रीक शब्द बैप्टिजो।

2. बाइबिल साक्ष्य

बाइबल की आज्ञा को समझने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि उस सन्दर्भ का अध्ययन किया जाए जो इसे संदर्भ में संदर्भित करता है और इस विषय पर अन्य अनुच्छेदों से उनकी तुलना करता है। इस तरह हम शब्दों के अर्थ सीखते हैं। ध्यान दें कि बपतिस्मा की क्या आवश्यकता है और विचार करें कि कौन-सा कार्य बाइबल के अनुसार उपयुक्त है:

एक। बपतिस्मा के लिए पानी की आवश्यकता होती है

इस्तेमाल किया गया तत्व या पदार्थ "बपतिस्मा देना" शब्द में निहित नहीं है। हालाँकि, बपतिस्मा में जिस पदार्थ का उपयोग यीशु ने सभी को करने की आज्ञा दी, वह पानी है।

- प्रेरितों के काम 10:47-48 — "निश्चय कोई भी इन लोगों के बपतिस्मा के लिए पानी को अस्वीकार नहीं कर सकता..."
- बी। बपतिस्मा के लिए बहुत पानी की आवश्यकता होती है
- यूहन्ना 3:23 कहता है, "और यूहन्ना भी सलीम के पास ऐनोन में बपतिस्मा देता था, क्योंकि वहाँ बहुत पानी था..." "बहुत पानी" की आवश्यकता नहीं है यदि किसी को केवल छिड़का या डाला जा रहा है, लेकिन यह विसर्जन के लिए आवश्यक है।

सी। बपतिस्मा में लोग पानी के लिए आए।

- Mark 1:9-10 — “It came to pass in those days that Jesus came from Nazareth of Galilee, and was baptized by John in the Jordan. And immediately, coming up out of the water, He saw the heavens opening, and the Spirit descending upon Him” (NKJV reads ‘like a dove’).
- Acts 8:38-39 reads, “...and they both went down into the water, Philip as well as the eunuch; and he baptized him. And when they came up out of the water...”

Here the obvious reference is to immersion. Does sprinkling or pouring require going down into the water? No, but baptism does.

e. Baptism is a burial and a resurrection.

- Colossians 2:12 — “... buried with Him in baptism, in which you were also raised with Him through faith in the working of God, who raised Him from the dead.”
- Romans 6:4-5 — “Therefore we have been buried with Him through baptism into death, in order that as Christ was raised from the dead through the glory of the Father so we too might walk in newness of life. For if we have become united with *Him* in the likeness of His death, certainly we shall be also in the likeness of His resurrection.”

In baptism we are buried with Jesus and raised with Him. As He was buried in the earth, we are buried in baptism.

Some say baptism is “just a symbol” of Jesus' burial, so it does not matter how it is done. There is a symbolic element in baptism, but how does that prove that the action does not matter?

Do the passages say Jesus was buried, but it doesn't matter whether or not we are buried? It says **we** are **buried** and **we** are **raised** in baptism. The one to be baptized is to be buried and raised.

Actually, symbols are important, especially, when it was God Himself who selected the symbols. Who would presume to change what God wanted?

Obviously, death, burial and resurrection in baptism is something that God wants us to know and be reminded of by the symbolic action that He chose for us to do. See Romans 6:1 — 12 and see how important and practical it is for the Christian to be reminded that he died with Christ in baptism.

“What shall we say then? Shall we continue in sin that grace might increase? May it never be! How shall we

- प्रेरितों के काम 8:36 — “वे कुछ पानी के पास आए।”

- मत्ती 3:5-6 — “तब यरूशलेम, और सारे यहूदिया, और यरदन के चारों ओर के सारे जिले में उसके पास निकल जाता था; और जब उन्होंने अपने पापोंको मान लिया, तब वे यरदन नदी में उस से बपतिस्मा लेते थे।”

कुछ लोग सोचते हैं कि खोजे ने पानी की एक बोटल निकाली और फिलिप्पुस ने उसमें से कुछ का उपयोग उसे बपतिस्मा देने के लिए किया। ऐसा नहीं! खोजे को बपतिस्मा देने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला पानी पानी का एक शरीर था जब वे यात्रा के दौरान आए थे। जब लोग छिड़काव या उंडेलते हैं, तो क्या उन्हें पानी में जाने की आवश्यकता होती है? नहीं, पानी उनके पास आ सकता है, क्योंकि ज्यादा जरूरत नहीं है, लेकिन जब लोग डूब जाते हैं, तो क्या वे पानी में जाते हैं।

डी। बपतिस्मा में नीचे जाना और पानी से बाहर आना शामिल है।

- मरकुस 1:9-10 — “उन दिनों में यीशु गलील के नासरत से आया, और यहून्ना से यरदन में बपतिस्मा लिया। और तुरन्त, जल में से ऊपर आकर, उस ने आकाश को खुलते हुए, और आत्मा को उस पर उतरते देखा” (एनकेजेवी 'कबूतर की नाई' पढ़ता है)।
- प्रेरितों के काम 8:38-39 पढ़ता है, “... और वे दोनों जल में उतर गए, अर्थात् फिलिप्पुस और खोजे; और उसने उसे बपतिस्मा दिया। और जब वे पानी से बाहर निकले...”

यहाँ स्पष्ट सन्दर्भ विसर्जन का है। क्या छिड़काव या डालने के लिए पानी में उतरना आवश्यक है? नहीं, लेकिन बपतिस्मा करता है।

इ। बपतिस्मा एक दफन और पुनरुत्थान है।

- कुलुस्सियों 2:12 — “... उसके साथ बपतिस्मे में गाड़ दी गई, और उस विश्वास के द्वारा जो परमेश्वर ने उसे मरे हुआ में से जिलाया, उस पर विश्वास करने के द्वारा तुम भी उसके साथ जी उठे।”
- रोमियों 6:4-5 — “इसलिये हम मृत्यु के बपतिस्मा के द्वारा उसके साथ गाड़े गए हैं, कि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुआ में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ एक हो गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी होंगे।”

बपतिस्मे में हम यीशु के साथ गाड़े जाते हैं और उनके साथ जी उठते हैं। जैसे उसे पृथ्वी में दफनाया गया था, हमें बपतिस्मा में दफनाया गया है।

कुछ लोग कहते हैं कि बपतिस्मा यीशु के दफनाने का “सिर्फ एक प्रतीक” है, इसलिए इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि यह कैसे किया जाता है। बपतिस्मे में एक प्रतीकात्मक तत्व होता है, लेकिन यह कैसे साबित करता है कि कार्रवाई मायने नहीं रखती?

who died to sin live in it? Or do you not know that all of us who have been baptized into Christ Jesus have been baptized into His death? Therefore we have been buried with Him through baptism into death, in order that as Christ was raised from the dead through the glory of the Father so too might walk in newness of life. For if we have become united with Him in the likeness of His death, certainly we shall be also in the likeness of His resurrection, knowing this, that our old self was crucified with Him, that our body of sin might be done away with, that we should no longer be slaves of sin. For he who has died has been freed from sin. Now if we have died with Christ, we believe that we shall also live with Him, knowing that Christ, having been raised from the dead, is to never die again; death no longer is master over Him. For the death that He died, He died to sin, once for all; but the life that He lives, He lives to God. Even so consider yourselves to be dead to sin, but alive to God in Christ Jesus. Therefore do not let sin reign in your mortal body, that you should obey its lusts.” (Romans 6:1-12)

Is There A Certain Formula Of Words That Must Be Spoken When One Is Baptized?

I do not believe there is such a formula and here are the reasons why:

- Some say: “I baptize you in the name of the Father, the Son and the Holy Spirit”
- Some say: “I baptize you in the name of Jesus.”
- Some add to these: “for the remission of sins” or “for the remission of sins and to receive the gift of the Holy Spirit.”
- Some even baptize the person three times, once “in the name of the Father”, again “in the name of the Son” and finally “in the name of the Holy Spirit.”
- Some do not believe that it is required to say anything special, as long as the person being baptized understands what they are doing and why they are being baptized.

1. Does doing something in the name of another require the repeating a formula using that person’s name?

- The apostles could not cast out demons, heal the sick or do other miracles except in the name of Jesus but Peter sometimes omitted saying this formula (Acts 9:40).
- Christians pray in the name of Jesus but did not always repeat this formula (Acts 4:23-30).
- Preaching is done in the name of Jesus (Luke 24:46, 47) but this doesn’t mean that these words always have to be repeated for the preaching to be valid.
- All we do, we do in Jesus’ name (Colossians 3:17) but this doesn’t mean the words must always be repeated.

क्या मार्ग कहते हैं कि यीशु को दफनाया गया था, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हमें दफनाया गया है या नहीं? यह कहता है कि हमें दफनाया गया है और हम बपतिस्मा में उठाए गए हैं। बपतिस्मा लेने वाले को दफनाया और उठाया जाना है।

दरअसल, प्रतीक महत्वपूर्ण हैं, खासकर, जब प्रतीकों का चयन स्वयं भगवान ने किया था। परमेश्वर जो चाहता था उसे बदलने की कल्पना कौन करेगा?

जाहिर है, बपतिस्मा में मृत्यु, गाड़ा जाना और पुनरुत्थान एक ऐसी चीज है जिसे परमेश्वर चाहता है कि हम उस प्रतीकात्मक कार्य के बारे में जानें और याद दिलाएं जिसे उसने हमारे लिए करने के लिए चुना था। रोमियों 6:1-12 को देखें और देखें कि मसीही विश्वासियों को यह स्मरण दिलाना कितना महत्वपूर्ण और व्यावहारिक है कि वह बपतिस्मा में मसीह के साथ मरा।

“फिर हम क्या कहें? क्या हम पाप में बने रहें कि अनुग्रह बढ़े? काश ऐसा कभी न हो! हम जो पाप के लिए मरे हैं, उसमें कैसे रहें? या क्या तुम नहीं जानते कि हम सब ने जो मसीह यीशु में बपतिस्मा लिया है, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया है? इसलिथे हम उसके साथ मृत्यु के बपतिस्मे के द्वारा गाड़े गए हैं, कि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ एक हो गए हैं, तो निश्चित रूप से हम उसके पुनरुत्थान की समानता में भी होंगे, यह जानते हुए कि हमारा पुराना शरीर उसके साथ कूस पर चढ़ाया गया था, ताकि हमारे पाप के शरीर को दूर किया जा सके। कि हम अब पाप के दास न रहें। क्योंकि जो मर गया है वह पाप से मुक्त हो गया है। अब यदि हम मसीह के साथ मर गए हैं, तो हम विश्वास करते हैं कि हम भी उसके साथ रहेंगे, यह जानते हुए कि मसीह, मरे हुओं में से जी उठना, फिर कभी न मरना है; मृत्यु अब उसके ऊपर स्वामी नहीं रही। क्योंकि जिस मृत्यु से वह मरा, वह पाप के लिथे एक ही बार मरा; परन्तु जो जीवन वह जीता है, वह परमेश्वर के लिथे जीता है। तौभी अपने आप को पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो। इसलिए पाप को अपने नश्वर शरीर में राज्य न करने दें, कि आप उसकी वासनाओं का पालन करें। ” (रोमियों 6:1-12)

क्या शब्दों का कोई निश्चित सूत्र है जिसे बपतिस्मा लेने पर बोला जाना चाहिए?

मैं विश्वास नहीं होता कि ऐसा कोई फॉर्मूला है और इसके कारण यहां दिए गए हैं:

- कुछ लोग कहते हैं: “मैं तुम्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा देता हूँ”
- कुछ लोग कहते हैं: “मैं तुम्हें यीशु के नाम से बपतिस्मा देता हूँ।”
- कुछ लोग इनमें जोड़ते हैं: “पापों की क्षमा के लिए” या “पापों की क्षमा के लिए और पवित्र आत्मा का उपहार प्राप्त करने के लिए।”
- कुछ लोग व्यक्ति को तीन बार बपतिस्मा भी देते हैं, एक बार “पिता के नाम पर”, फिर “पुत्र के नाम पर” और अंत में “पवित्र आत्मा के नाम पर।”

- Actually, the scriptures do not teach that a certain formula of words must be said when one is baptized.

2. No single identical formula was given in examples of Bible baptisms:

- Matthew 28:19 — “in (*eis* into) the name of the Father and of the Son and of the Holy Spirit”
- Acts 2:38 — “in (*epi* upon) the name of Jesus Christ”
- Acts 8:16 — “in (*eis* into) the name of the Lord Jesus”
- Acts 10:48 — “in (*en* in) the name of the Lord”
- Acts 19:5 — “in (*eis* into) the name of the Lord Jesus”

3. Some ideas about what “in the name of” means:

- Thayer: “by one’s command and authority, acting on his behalf, promoting his cause.”
- Pulpit Commentary: “into the power ... influence ... faith ... family of”
- International Critical Commentary: “by way of consecration to”
- W. F. Flemington: “into the ownership of”

4. Jesus Only Doctrine

There is a “Jesus only Doctrine” that is taught by Oneness Pentecostals.

“Doctrines are taught that a person cannot be saved unless this person first forsakes his belief in the Trinity and is re-baptized ‘in the Name of Jesus only’, according to an interpretation of several scriptures, most notably Acts 2:38. Conversely, the baptismal formula accepted by most Christians is found in Matthew 28:19” (ref. Wikipedia Free Encyclopedia).

Following are comments on this doctrine from the web site of the United Pentecostal Church International (<http://www.upci.org>).

“The Formula for Baptism”: “Jesus commanded His disciples to “teach all nations, baptizing them in the name of the Father, and of the Son, and of the Holy Ghost” (Matthew 28:19). He did not command them to use these words as a formula, but He commanded them to baptize in “the name.” The word name is used here in the singular, and it is the focal point of the baptismal command. The titles Father, Son, and Holy Ghost describe God’s relationships to humanity and are not the supreme, saving name described here, which is Jesus. “...there is salvation in no one else; for there is no other name under heaven that has been given among men, by which we must be saved (Acts 4:12).”

Jesus is the name in which the roles of Father, Son, and Holy Ghost are revealed. The angel of the Lord

- कुछ लोग यह नहीं मानते हैं कि कुछ विशेष कहने की आवश्यकता है, जब तक कि बपतिस्मा लेने वाला व्यक्ति समझता है कि वे क्या कर रहे हैं और उन्हें बपतिस्मा क्यों दिया जा रहा है।

3. क्या दूसरे के नाम पर कुछ करने के लिए उस व्यक्ति के नाम का उपयोग करके एक सूत्र दोहराने की आवश्यकता होती है?

- प्रेरित यीशु के नाम के अलावा राक्षसों को बाहर नहीं निकाल सकते, बीमारों को ठीक नहीं कर सकते थे या अन्य चमत्कार नहीं कर सकते थे, लेकिन पतरस ने कभी-कभी इस सूत्र (प्रेरितों के काम 9:40) को छोड़ दिया।
- ईसाई यीशु के नाम से प्रार्थना करते हैं लेकिन हमेशा इस सूत्र को नहीं दोहराते (प्रेरितों के काम 4:23-30)।
- प्रचार यीशु के नाम से किया जाता है (लूका 24:46, 47) लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि प्रचार के वैध होने के लिए इन शब्दों को हमेशा दोहराया जाना चाहिए।
- हम सब कुछ करते हैं, हम यीशु के नाम में करते हैं (कुलुस्सियों 3:17) लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि शब्दों को हमेशा दोहराया जाना चाहिए।
- दरअसल, शास्त्र यह नहीं सिखाते कि बपतिस्मा लेने पर शब्दों का एक निश्चित सूत्र कहा जाना चाहिए।

2. बाइबल के बपतिस्मे के उदाहरणों में कोई एक समान सूत्र नहीं दिया गया था:

- मत्ती 28:19 — “में (इस में) पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा का नाम”
- प्रेरितों के काम 2:38 — “यीशु मसीह के नाम में”
- प्रेरितों के काम 8:16 - “प्रभु यीशु के नाम में”
- प्रेरितों के काम 10:48 - “प्रभु के नाम में”
- प्रेरितों के काम 19:5 - “प्रभु यीशु के नाम में”

3. “के नाम पर” का क्या अर्थ है, इसके बारे में कुछ विचार:

- थायर: “किसी के आदेश और अधिकार से, उसकी ओर से कार्य करना, उसके कारण को बढ़ावा देना।”
- पल्टिट कमेंट्री: “सत्ता में ... प्रभाव ... विश्वास ... का परिवार”
- इंटरनेशनल क्रिटिकल कमेंट्री: “अभिषेक के माध्यम से”
- डब्ल्यू एफ फ्लेमिंगटन: “के स्वामित्व में”

4. जीसस ओनली डॉक्ट्रिन

एक “यीशु केवल सिद्धांत” है जो एकता पेंटेकोस्टल द्वारा सिखाया जाता है।

“सिद्धांत सिखाए जाते हैं कि एक व्यक्ति को तब तक नहीं बचाया जा सकता जब तक कि यह व्यक्ति पहले अपने विश्वास को नहीं छोड़ता” टिनिटी और कई धर्मग्रंथों की व्याख्या के अनुसार, विशेष रूप से प्रेरितों के काम 2:38 के अनुसार, ‘केवल यीशु के नाम पर’ फिर से बपतिस्मा लिया जाता है। इसके विपरीत, अधिकांश लोगों द्वारा स्वीकार किया गया बपतिस्मा सूत्र ईसाइयों मत्ती 28:19” (संदर्भ विकिपीडिया मुक्त विश्वकोश) में पाया जाता है।

instructed Joseph, "She will bear a Son; and you shall call his name JESUS: for it is he who will save His people from their sins" (Matthew 1:21). Jesus said, "I have come in my Father's name," and, "The Helper, the Holy Spirit, whom the Father will send in my name, (John 5:43; 14:26)." Thus by baptizing in the name of Jesus, we honor the Godhead. "For in Him all the fullness of Deity dwells in bodily form" (Colossians 2:9).

Luke 24:47 describes the commission that Jesus gave: "and that repentance for forgiveness of sins should be proclaimed [preached] in His name to all the nations [Jews and Gentiles], beginning from Jerusalem." Peter, [ten days later, preached] "Repent, and let each of you be baptized in the name of Jesus Christ for the forgiveness of your sins; and you shall receive the gift of the Holy Spirit" (Acts 2:38). Cornelius and his household were Gentiles, yet there again Peter "commanded them to be baptized in the name of the Lord" (Acts 10:48). (Most translations actually say, "In the name of Jesus Christ").

The Samaritans, who were not Jews, were also baptized in the name of Jesus. "And Philip went down to the city of Samaria, and began proclaiming Christ to them..." "But when they believed Philip preaching the good news about the kingdom of God, and the name of Jesus Christ, they were being baptized, both men and women..." "...They had simply been baptized in the name of the Lord Jesus" (Acts 8:5, 12, 16).

Paul went to Ephesus many years after the Day of Pentecost and found some disciples of John the Baptist there. "He said to them, 'Did you receive the Holy Spirit when you believed?' And they said to him, 'No, we have not even heard whether there is a Holy Spirit.' And he said, 'Into what then were you baptized?' and they said, 'Into John's baptism.' And Paul said, 'John baptized with the baptism of repentance, telling the people to believe in Him who was coming after him, that is, in Jesus.' And when they heard this they were baptized in the name of the Lord Jesus." (Acts 19:2-5) Although these disciples had already been baptized, the name of Jesus was so important as to cause them to be re-baptized in His name.

The apostles not only preached baptism in Jesus' name, but they practiced it. Nowhere can we find that they baptized using the words "in the name of the Father, and of the Son, and of the Holy Ghost." Instead, we find them baptizing in the name of the Lord Jesus Christ. In baptizing in Jesus' name, they fulfilled the command of the Lord in Matthew 28:19.

History tells us that it was not until many years after the apostles that the mode and formula of baptism in the

यूनाइटेड पेंटेकोस्टल चर्च इंटरनेशनल की वेब साइट से इस सिद्धांत पर टिप्पणियां निम्नलिखित हैं (<http://www.upci.org>)

"बपतिस्मा का सूत्र": "यीशु ने अपने चेलों को "सब जातियों को पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा देने की शिक्षा देने" की आज्ञा दी (मत्ती 28:19)। उसने उन्हें इन शब्दों को सूत्र के रूप में उपयोग करने की आज्ञा नहीं दी, परन्तु उसने उन्हें "नाम" में बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी। नाम शब्द का प्रयोग यहाँ एकवचन में किया गया है, और यह बपतिस्मा की आज्ञा का केंद्र बिंदु है। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की उपाधियाँ मानवता के साथ परमेश्वर के संबंधों का वर्णन करती हैं और यहाँ वर्णित सर्वोच्च, बचाने वाला नाम नहीं हैं, जो कि यीशु है। "... और किसी में मोक्ष नहीं है; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें (प्रेरितों के काम 4:12)।

यीशु वह नाम है जिसमें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की भूमिकाएँ प्रकट होती हैं। यहोवा के दूत ने यूसुफ को निर्देश दिया, "वह एक पुत्र को जन्म देगी; और उसका नाम यीशु रखना; क्योंकि वही अपनी प्रजा को उनके पापों से बचाएगा" (मत्ती 1:21)। यीशु ने कहा, "मैं अपने पिता के नाम से आया हूँ," और, "सहायक, पवित्र आत्मा, जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, (यूहन्ना 5:43; 14:26)। इस प्रकार यीशु के नाम में बपतिस्मा लेकर, हम ईश्वर का सम्मान करते हैं। "क्योंकि ईश्वर की सारी परिपूर्णता देह के रूप में उसी में वास करती है" (कुलुस्सियों 2:9)।

लूका 24:47 उस आज्ञा का वर्णन करता है जो यीशु ने दी थी: "और यह कि पापों की क्षमा के लिये मन फिराव का प्रचार उसके नाम से यरूशलेम से लेकर सब जातियों [यहूदियों और अन्यजातियों] में [प्रचार] किया जाए।" पतरस, [दस दिन बाद, प्रचार किया] "पश्चात्ताप करो, और तुम में से प्रत्येक अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; और तुम पवित्र आत्मा का वरदान पाओगे" (प्रेरितों के काम 2:38)। कुरनेलियुस और उसका घराना गैर-यहूदी थे, फिर भी पतरस ने "उन्हें प्रभु के नाम से बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी" (प्रेरितों के काम 10:48)। (अधिकांश अनुवाद वास्तव में कहते हैं, "यीशु मसीह के नाम पर")।

सामरी लोग, जो यहूदी नहीं थे, ने भी यीशु के नाम पर बपतिस्मा लिया। "तब फिलिप्पुस सामरिया के नगर में गया, और उन को मसीह का प्रचार करने लगा..." "परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस को परमेश्वर के राज्य और यीशु मसीह के नाम का सुसमाचार सुनाते हुए विश्वास किया, तो उन्होंने बपतिस्मा लिया। पुरुष और महिला दोनों..."। "... उन्होंने बस प्रभु यीशु के नाम पर बपतिस्मा लिया था" (प्रेरितों के काम 8:5, 12, 16)।

पिन्तेकुस्त के दिन के कई वर्ष बाद पौलुस इफिसुस गया और वहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के कुछ शिष्यों को पाया। "उसने उन से कहा, 'क्या तुम ने विश्वास करके पवित्र आत्मा प्राप्त किया था?' और उन्होंने उस से कहा, नहीं, हम ने यह तक नहीं सुना कि पवित्र आत्मा होता है या नहीं। और उस ने कहा, 'तो फिर तू ने किस बात का बपतिस्मा लिया?' और उन्होंने कहा, 'यूहन्ना के बपतिस्मे में।' और पौलुस ने कहा, 'यूहन्ना ने मन फिराव का बपतिस्मा दिया, और लोगों से कहा, कि जो उसके बाद आ

name of Jesus Christ were changed. (See *Hastings' Dictionary of the Bible*, vol. 1, p.241.)

It seems obvious that the reason for this group's debate concerning the words that must be said in baptism is not really the insistence upon a formula, but rather an objection to the doctrine of the triune nature of God – are there really three persons in the Godhead? This must be the subject of another study.

Questions

- Baptism means to:
 - ___ Immerse in water
 - ___ Pour water over
 - ___ Sprinkle water on
- Baptism (immersion) requires
 - ___ water
 - ___ much water
 - ___ people coming to water
 - ___ a going down into water and a coming up out of water
 - ___ a burial and a resurrection
 - ___ all of the above
- After one is baptized into Christ God resurrects him into a newness of life.
True ___ False ___
- One is united with Christ when he
 - ___ Believes that Jesus is the Christ
 - ___ Repents
 - ___ Buried into Christ death and is resurrected by God
- One who has died to sin and buried into Christ death is freed from sin becoming alive into God in Christ.
True ___ False ___
- What words or formula must be spoken for a persons baptism to be acceptable to God.
 - ___ In the name of Jesus only
 - ___ In the name of the Father, Son and Holy Spirit
 - ___ It is not words or formulas but in the name / authority of Jesus

HOW MANY BAPTISMS ARE THERE?

I believe that today there is only one literal baptism usually referred to as Christian baptism or “baptism into Christ.”

Lesson 9.

रहा है उस पर अर्थात् यीशु पर विश्वास करें।' और यह सुनकर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम से बपतिस्मा लिया।” (प्रेरितों 19:2-5) हालाँकि इन शिष्यों ने पहले ही बपतिस्मा ले लिया था, यीशु का नाम इतना महत्वपूर्ण था कि उन्हें उसके नाम पर फिर से बपतिस्मा दिया गया।

प्रेरितों ने न केवल यीशु के नाम में बपतिस्मा का प्रचार किया, बल्कि उन्होंने इसका अभ्यास भी किया। हम कहीं नहीं पाते हैं कि उन्होंने "पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम पर" शब्दों का उपयोग करके बपतिस्मा लिया। इसके बजाय, हम उन्हें प्रभु यीशु मसीह के नाम पर बपतिस्मा देते हुए पाते हैं। यीशु के नाम में बपतिस्मा लेते हुए, उन्होंने मत्ती 28:19 में प्रभु की आज्ञा को पूरा किया।

इतिहास हमें बताता है कि प्रेरितों द्वारा ईसा मसीह के नाम पर बपतिस्मे के तरीके और सूत्र को बदलने के कई साल बाद तक नहीं हुआ था। (हेस्टिंग्स डिक्शनरी ऑफ द बाइबल, खंड 1, पृष्ठ 241 देखें।)

यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि बपतिस्मा में कहे जाने वाले शब्दों के संबंध में इस समूह की बहस का कारण वास्तव में एक सूत्र पर जोर देना नहीं है, बल्कि ईश्वर के त्रिगुण प्रकृति के सिद्धांत पर आपत्ति है - क्या वास्तव में ईश्वर में तीन व्यक्ति हैं ? यह एक और अध्ययन का विषय होना चाहिए।

प्रश्न

- बपतिस्मा का अर्थ है:
 - ___ पानी में विसर्जित करें
 - ___ ऊपर से पानी डालें
 - ___ पर पानी छिड़कें
- बपतिस्मा (विसर्जन) की आवश्यकता है
 - ___ पानी
 - ___ अधिक पानी
 - ___ पानी में आने वाले लोग
 - ___ पानी में उतरना और पानी से बाहर आना
 - ___ एक दफन और एक पुनरुत्थान
 - ___ ऊपर के सभी
- एक के बाद एक मसीह में बपतिस्मा लेने के बाद भगवान उसे जीवन के एक नएपन में पुनर्जीवित करता है।
सही गलत ___
- एक व्यक्ति मसीह के साथ एक हो जाता है जब वह
 - ___ विश्वास करता है कि यीशु ही मसीह है
 - ___ पश्चाताप
 - ___ मसीह की मृत्यु में दफनाया गया और भगवान द्वारा पुनर्जीवित किया गया
- जो पाप के लिए मर गया और मसीह में दफन हो गया, मृत्यु पाप से मुक्त हो गई और मसीह में परमेश्वर के रूप में जीवित हो गई।
सही गलत ___

1. Ephesians 4: 4-6 — “There is one body and one Spirit, just as you were called in one hope of your calling; one Lord, one faith, one baptism; one God and Father of all, who is above all, and through all, and in you all.”

The question is asked: “If there is only one baptism, why does the writer of Hebrews refer to “baptisms”?” **Hebrews 6:1, 2** — “Therefore, leaving the discussion of the elementary principles of Christ, let us go on to perfection, not laying again the foundation of repentance from dead works and of faith toward God, of the doctrine of baptisms, of laying on of hands, of resurrection of the dead, and of eternal judgment” (NKJV).

There are several baptisms mentioned in the Bible, but discounting those that were only symbolic and those that were temporary, there remains only one baptism practiced in the church today. It is immersion in water in the name of Jesus Christ for the remission of the sins of those who come to Jesus, repentant of their sins and trusting in His death on the cross to take away their sins.

2. Various Baptisms In The Bible

a. Baptism of John

Mark 1:4 — “John the Baptist appeared in the wilderness preaching a baptism of repentance for the forgiveness of sins.”

Acts 18:25 — “This man had been instructed in the way of the Lord; and being fervent in spirit, he was speaking and teaching accurately the things concerning Jesus, being acquainted only with the baptism of John.”

Acts 19:4 — “And Paul said, ‘John baptized with the baptism of repentance, telling the people to believe in Him who was coming after him, that is, in Jesus.’”

The baptism of John was temporary and no longer to be practiced after Christ gave his life on the cross.

b. Baptism in Fire

Matthew 3:7-12 — “But when he saw many of the Pharisees and Sadducees coming for baptism, he said to them, ‘You brood of vipers, who warned you to flee from the wrath to come? Therefore bring forth fruit in keeping with repentance; and do not suppose that you can say to yourselves, ‘We have Abraham for our father’; for I say to you that God is able from these stones to raise up children to Abraham. And the axe is already laid at the root of the trees; every tree therefore that does not bear good fruit is cut down and thrown into the fire. As for me, I baptize you with water for repentance, but He who is coming after me is mightier than I, and I am not fit to remove His sandals; He will baptize you with

6. एक व्यक्ति के बपतिस्मा को परमेश्वर को स्वीकार करने के लिए कौन से शब्द या सूत्र बोले जाने चाहिए।
a. _____ केवल यीशु के नाम पर
b. _____ पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर
सी। _____ यह शब्द या सूत्र नहीं बल्कि यीशु के नाम / अधिकार में है

कितने बपतिस्मा हैं?

मेरा मानना है कि आज केवल एक शाब्दिक बपतिस्मा है जिसे आमतौर पर ईसाई बपतिस्मा या "मसीह में बपतिस्मा" कहा जाता है।

पाठ 9.

1. इफिसियों 4: 4-6 — “एक देह और एक ही आत्मा है, जैसे तुम को अपने बुलाए जाने की एक ही आशा में बुलाया गया था; एक प्रभु, एक विश्वास, एक बपतिस्मा; एक ही परमेश्वर और सबका पिता, जो सब से ऊपर है, और सब के द्वारा, और तुम सब में।”

प्रश्न पूछा जाता है: "यदि केवल एक ही बपतिस्मा है, तो इब्रानियों का लेखक "बपतिस्मा" का उल्लेख क्यों करता है? इब्रानियों 6:1, 2 - "इसलिए, मसीह के प्रारंभिक सिद्धांतों की चर्चा को छोड़कर, हम पूर्णता की ओर बढ़ते हैं, और मृत कार्यों से पश्चाताप की नींव नहीं रखते हैं, और ईश्वर के प्रति विश्वास की, बपतिस्मा के सिद्धांत की, हाथ रखने, मरे हुएओं के जी उठने, और अनन्त न्याय का" (एनकेजेवी)।

बाइबल में कई बपतिस्मे का उल्लेख किया गया है, लेकिन जो केवल प्रतीकात्मक थे और जो अस्थायी थे, उन्हें छोड़कर, आज चर्च में केवल एक ही बपतिस्मा का अभ्यास किया जाता है। यह उन लोगों के पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम में पानी में विसर्जन है जो यीशु के पास आते हैं, अपने पापों का पश्चाताप करते हैं और अपने पापों को दूर करने के लिए क्रूस पर उनकी मृत्यु पर भरोसा करते हैं।

2. बाइबिल में विभिन्न बपतिस्मा

g. जॉन का बपतिस्मा

मरकुस 1:4 - "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला जंगल में प्रकट हुआ और पापों की क्षमा के लिये मन फिराव के बपतिस्मे का प्रचार कर रहा था।"

प्रेरितों के काम 18:25 — “इस व्यक्ति को यहोवा के मार्ग की शिक्षा दी गई थी; और जोश में आकर, वह यूहन्ना के बपतिस्मे से पहिचान पाकर, यीशु के विषय में ठीक-ठीक बातें करता और उपदेश देता था।

प्रेरितों के काम 19:4 - "पौलुस ने कहा, 'यूहन्ना ने मन फिराव का बपतिस्मा दिया, और लोगों से कहा, कि जो उसके बाद आ रहा है उस पर अर्थात् यीशु पर विश्वास करें।'"

यूहन्ना का बपतिस्मा अस्थायी था और मसीह द्वारा क्रूस पर अपना जीवन देने के बाद इसका अभ्यास नहीं किया जाना था।

h. आग में बपतिस्मा

the Holy Spirit and fire. And His winnowing fork is in His hand, and He will thoroughly clear His threshing floor; and He will gather His wheat into the barn, but He will burn up the chaff with unquenchable fire.”

The baptism in fire is symbolic of God’s judgment on the unrepentant.

c. Baptism into Moses

1 Corinthians 10:1-2 — “For I do not want you to be unaware, brethren, that our fathers were all under the cloud, and all passed through the sea; and all were baptized into Moses in the cloud and in the sea.”

When Israel left Egypt, crossing the Red Sea, they were encompassed by water – the cloud over them and the Red Sea around them. This is a symbolic use of the word “baptism” in several details, not only them being surrounded by water (though passing on dry land). It is indeed a prophetic type of our experience. As they were freed from their slavery and came into the relationship with Moses as their leader, so we, in baptism, are freed from the bondage of sin and come into a relationship with Jesus as our Lord.

d. Baptism of Suffering

Matthew 20:20-23 — “Then the mother of the sons of Zebedee came to Him with her sons, bowing down, and making a request of Him. And he said to her, ‘What do you wish?’ She said to him ‘Command that in Your kingdom these two sons of mine may sit, one on Your right and one on Your left.’ But Jesus answered and said, ‘You do not know what you are asking for. Are you able to drink the cup that I am about to drink?’ They said to Him, ‘We are able.’ He said to them, ‘My cup you shall drink; but to sit on My right and on My left, this is not Mine to give, but it is for those for whom it has been prepared by My Father.’”

In Matt. 26:39 — He prays to the Father to “let this cup pass from me; yet not as I will, but as thou wilt.” In John 18:11: “the cup which the Father has given me, shall I not drink it?” The “cup” and “baptism” Jesus spoke of here was a symbolic way of talking about the terrible things he would soon suffer as he offered himself as our sin sacrifice. It is symbolic language.

e. Baptism into Christ

Mark 16:16 — “He who has believed and has been baptized shall be saved; but he who has disbelieved shall be condemned.”

Gal. 3:27 — “For all of you who were baptized into Christ have clothed yourselves with Christ.”

मत्ती 3:7-12 — “परन्तु जब उस ने बहुत से फरीसियों और सद्कियों को बपतिस्मे के लिये आते देखा, तो उन से कहा, हे सांपों के बच्चों, किस ने तुम्हें आनेवाले क्रोध से बचने की चेतावनी दी? इसलिए मन फिराव के अनुसार फल लाओ; और यह न समझो, कि तुम अपने आप से कह सकते हो, कि हमारे पिता के लिथे इब्राहीम है; क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि परमेश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के सन्तान उत्पन्न कर सकता है। और कुल्हाड़ा तो पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है; इसलिए हर एक पेड़ जो अच्छा फल नहीं लाता, काटा और आग में झोंक दिया जाता है। जहाँ तक मेरी बात है, मैं तुम्हें बपतिस्मा देता हूँमन फिराव के लिथे जल के साथ, परन्तु जो मेरे पीछे आनेवाला है वह मुझ से सामर्थी है, और मैं उसकी जूती उतारने के योग्य नहीं; वह तुम्हें बपतिस्मा देगापवित्र आत्मा और आग के साथ। और उसका ललकारने वाला कांटा उसके हाथ में है, और वह अपने खलिहान को पूरी तरह से साफ कर देगा; और वह अपना गेहूँ खलिहान में बटोरेंगा, परन्तु भूसी को आग से भस्म करेगा।”

आग में बपतिस्मा अपश्चातापी पर परमेश्वर के न्याय का प्रतीक है।

i. मूसा में बपतिस्मा

1 कुरिन्थियों 10:1-2 — “हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम इस बात से अनजान रहो, कि हमारे पुरखा सब बादल के नीचे थे, और सब समुद्र में से होकर चले थे; और सब ने बादल और समुद्र में मूसा का बपतिस्मा लिया।”

जब इस्राएल ने लाल सागर को पार करते हुए मिस्र छोड़ दिया, तो वे पानी से घिरे हुए थे - उनके ऊपर बादल और उनके चारों ओर लाल समुद्र। यह कई विवरणों में “बपतिस्मा” शब्द का प्रतीकात्मक उपयोग है, न केवल वे पानी से घिरे हुए हैं (हालांकि सूखी भूमि पर गुजरते हुए)। यह वास्तव में हमारे अनुभव का एक भविष्यवाणी प्रकार है। जैसे वे अपनी दासता से मुक्त हुए और मूसा के साथ उनके अगुवे के रूप में संबंध में आए, वैसे ही हम, बपतिस्मे में, पाप के बंधन से मुक्त हो जाते हैं और हमारे प्रभु के रूप में यीशु के साथ संबंध में आ जाते हैं।

j. दुख का बपतिस्मा

मत्ती 20:20-23 — “तब जब्दी के पुत्रों की माता अपने पुत्रों समेत उसके पास आई, और दण्डवत की, और उस से बिनती की। और उस ने उस से कहा, ‘तुम क्या चाहती हो?’ उसने उस से कहा, आज्ञा दे, कि मेरे ये दोनों पुत्र तेरे राज्य में बैठें, एक तेरी दहिनी ओर और एक तेरी बाईं ओर। परन्तु यीशु ने उत्तर दिया और कहा, ‘तुम नहीं जानते कि तुम क्या मांग रहे हो। क्या तुम वह प्याला पी सकते हो जो मैं पीने जा रहा हूँ?’ उन्होंने उससे कहा, ‘हम सक्षम हैं।’ उस ने उन से कहा, मेरा प्याला तुम पीना; परन्तु मेरे दाहिनी ओर और मेरे बायें बैठना, यह देने को मेरा नहीं, परन्तु उनके लिये है जिनके लिये यह मेरे पिता ने तैयार किया है।”

मैट में। 26:39 - वह पिता से प्रार्थना करता है कि “यह कटोरा मेरे पास से टल जाए; तौभी जैसा मैं चाहता हूँ, वैसा नहीं, जैसा तू चाहता है।” यूहन्ना 18:11 में: “जो कटोरा पिता ने मुझे दिया है, क्या मैं उसे न पीऊँ?” यीशु ने यहाँ जिस “प्याले” और “बपतिस्मा” के बारे में बात की थी, वह उन भयानक चीजों के बारे में बात करने का एक प्रतीकात्मक तरीका था

Romans 6: 3 — “Or do you not know that all of us who have been baptized into Christ Jesus have been baptized into His death?”

f. Baptism with (in-ASV) the Holy Spirit [also see Appendix II below]

In Matthew 3:11, John refers to Jesus: “He will baptize you with the Holy Spirit.”

In Acts 1:5, Jesus said to them “For John baptized with water; but you shall be baptized with the Holy Spirit not many days from now.”

The baptism in the Holy Spirit was what Jesus did with the Spirit on the day of Pentecost.

John 15:26 — “But when the Helper comes, whom I will send to you from the Father, that is the Spirit of truth, who proceeds from the Father, He will bear witness of Me.”

On the day of Pentecost, Jesus poured the Spirit out on “all flesh” (see Acts 2:17). The baptism in the Holy Spirit was a once for all time historical event. The effects remain but the Spirit has already been poured out on all humanity.

Conclusion:

There is now one baptism. All the others are either symbolic uses of the word meaning “immersion” or historical events that do not need to be repeated.

Questions

1. John the Baptist preached a baptism of
 - a. Repentance
 - b. Salvation
 - c. Moses
2. The Baptism of Fire is symbolic of God’s judgment on the unrepentant
True false
3. Passing through the waters of the Red Sea delivered the Israelites from bondage of the Egyptians whereas Christ’s baptism delivers one from the bondage of sin
True false
4. The baptism into Christ is the calling on God to forgive thereby cleansing one of their sins.
True false
5. The Baptism of the Holy Spirit is what Jesus did with the Spirit on the day of Pentecost.
True false

BAPTISM WITH THE HOLY SPIRIT.

जिसे वह जल्द ही भुगतना होगा क्योंकि उसने खुद को हमारे पाप बलिदान के रूप में पेश किया था। यह सांकेतिक भाषा है।

k. मसीह में बपतिस्मा

मरकुस 16:16 — “जिसने विश्वास किया है और बपतिस्मा लिया है वह उद्धार पाएगा; परन्तु जिसने काफ़िर किया, वह दोषी ठहराया जाएगा।”

लड़की 3:27 - "क्योंकि तुम सब ने जो मसीह में बपतिस्मा लिया था, अपने आप को मसीह में पहिन लिया है।"

रोमियों 6:3 — "या क्या तुम नहीं जानते कि हम सब ने जो मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया है, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया है?"

1. (इन-एएसवी) पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा [नीचे परिशिष्ट II भी देखें]

मत्ती 3:11 में, यूहन्ना यीशु को संदर्भित करता है: "वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा।"

प्रेरितों के काम 1:5 में, यीशु ने उनसे कहा, "क्योंकि यूहन्ना ने जल से बपतिस्मा दिया; परन्तु अब से अधिक दिन न रहने पर तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।"

पवित्र आत्मा में बपतिस्मा वह था जो यीशु ने पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा के साथ किया था।

यूहन्ना 15:26 - "परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं पिता की ओर से तुम्हारे पास भेजूंगा, वह सत्य का आत्मा है, जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा।"

पिन्तेकुस्त के दिन, यीशु ने आत्मा को "सब प्राणियों" पर उंडेला (देखें प्रेरितों के काम 2:17)। पवित्र आत्मा में बपतिस्मा हमेशा के लिए ऐतिहासिक घटना थी। प्रभाव बना रहता है लेकिन आत्मा पूरी मानवता पर पहले ही उंडेली जा चुकी है।

निष्कर्ष:

अब एक बपतिस्मा है। अन्य सभी या तो "विसर्जन" शब्द के प्रतीकात्मक उपयोग हैं या ऐतिहासिक घटनाएं जिन्हें दोहराने की आवश्यकता नहीं है।

प्रश्न

1. जॉन द बैपटिस्ट ने के बपतिस्मा का प्रचार किया
 - d. पश्चाताप
 - e. मोक्ष
 - f. मूसा
2. आग का बपतिस्मा अपश्चातापी पर परमेश्वर के न्याय का प्रतीक है
सही गलत

3. लाल समुद्र के पानी ने इस्राएलियों को मिस्रियों के बंधन से छुड़ाया जबकि मसीह का बपतिस्मा पाप के बंधन से मुक्ति दिलाता है

Lesson 10

One of the Bible subjects most confused and misunderstood in people's minds is the baptism with the Holy Spirit. A large part of the confusion is resolved with a proper biblical definition - exactly what is the baptism with the Holy Spirit? This lesson tries to do just that. When this is understood, then many of the other subjects become clear, such as:

1. When is somebody baptized with the Spirit?
2. How can somebody know if they have been baptized with the Spirit or not?
3. Is speaking in tongues the sign that somebody was baptized with the Spirit?
4. What happened in the house of Cornelius in Acts 10?
5. Is baptism "with" or "in the" Spirit the same thing of baptism "for" or "of" the Spirit?
6. Was Jesus speaking of the baptism with the Spirit when said to the Apostles: "you will receive power when the Holy Spirit descends on you" (Acts 1:8)?
7. If there is a baptism with the Holy Spirit and a baptism in water, can we say that there is "only one baptism"?

The Baptism With The Holy Spirit Was Done By Jesus, Exclusively

A. Matthew 3:11 "I indeed baptize you with water unto repentance, but He who is coming after me is mightier than I, whose sandals I am not worthy to carry. He will baptize you with the Holy Spirit and fire.

Mark 1:8 "I indeed baptized you with water, but He will baptize you with the Holy Spirit."

Luke 3:16 John answered, saying to all, "I indeed baptize you with water; but One mightier than I is coming; whose sandal strap I am not worthy to loose. He will baptize you with the Holy Spirit and fire.

John 1:33 "I did not know Him, but He who sent me to baptize with water said to me, 'Upon whom you see the Spirit descending, and remaining on Him, this is He who baptizes with the Holy Spirit.'"

Note: it was not something done by men nor something done by the Holy Spirit, but by Jesus.

1. John (who immersed) is preaching to his listeners to repent of their sins to be saved.
2. He informs them that someone greater than he was coming; therefore the time to make their decision to repent was limited.

सही गलत ____

4. मसीह में बपतिस्मा परमेश्वर से क्षमा करने का आह्वान है जिससे उनके पापों में से एक को शुद्ध किया जा सके।

सही गलत ____

5. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा वह है जो यीशु ने पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा के साथ किया था।

सही गलत ____

पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा।

पाठ 10

लोगों के मन में सबसे अधिक भ्रमित और गलत समझे जाने वाले बाइबल विषयों में से एक पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा है। एक उचित बाइबिल परिभाषा के साथ भ्रम का एक बड़ा हिस्सा हल किया जाता है - वास्तव में पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा क्या है? यह पाठ ठीक वैसा ही करने का प्रयास करता है। जब यह समझ में आ जाता है, तो अन्य कई विषय स्पष्ट हो जाते हैं, जैसे:

1. किसी को आत्मा से कब बपतिस्मा दिया जाता है?
2. कोई कैसे जान सकता है कि उन्होंने आत्मा से बपतिस्मा लिया है या नहीं?
3. क्या अन्यभाषा में बोलना इस बात का संकेत है कि किसी ने आत्मा से बपतिस्मा लिया है?
4. प्रेरितों के काम 10 में कुरनेलियुस के घर में क्या हुआ?
5. क्या "आत्मा के साथ" या "आत्मा में" बपतिस्मा "आत्मा के लिए" या "के लिए" बपतिस्मा की एक ही बात है?
6. क्या यीशु आत्मा के साथ बपतिस्मा के बारे में बात कर रहे थे जब प्रेरितों से कहा: "जब पवित्र आत्मा तुम पर उतरेगा तब तुम सामर्थ पाओगे" (प्रेरितों के काम 1:8)?
7. यदि पवित्र आत्मा से बपतिस्मा और जल में बपतिस्मा है, तो क्या हम कह सकते हैं कि "केवल एक ही बपतिस्मा है?"

पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा यीशु द्वारा किया गया था, विशेष रूप से

ए. मत्ती 3:11 "मैं तो तुम्हें मन फिराव के लिये जल से बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु जो मेरे पीछे आनेवाला है, वह मुझ से सामर्थी है, जिसकी जूती उठाने के योग्य मैं नहीं। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।

मरकुस 1:8 "मैं ने तो तुम्हें तो जल से तो बपतिस्मा दिया है, परन्तु वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा।"

3. John is not talking about dates or chronologies (neither the order nor when it would happen); but only about the greatness of Jesus.

4. His authority would be seen in that He could baptize with the Holy Spirit and with fire.

- a. Jesus has power over the two.
- b. Not that the two are the same thing.

5. Baptism with the Holy Spirit did not involve fire.

- a. The "tongues of fire" that rested on the apostles in Acts 2 were not an immersion in fire.
- b. These two baptisms have two different purposes.

6. The baptism with fire.

a. Matthew 3:12; "His winnowing fan is in His hand, and He will thoroughly purge His threshing floor, and gather His wheat into the barn; but He will burn up the chaff with unquenchable fire."

i. John knew that among his hearers were two groups of people, the ones who would accept his message (the wheat), and the ones that they would reject it (the chaff).

ii. The ones who would accept it and repent would receive the blessing of the baptism with the Spirit.

iii. The ones who rejected it would receive the punishment of the baptism with fire.

(a) This did happen with these listeners in year 70 A.D. when the Romans destroyed Jerusalem.

(b) This event is not mentioned in the gospel of John, probably because John was written after 70 A.D.

iv. Malachi 4:1-6 is a parallel to Matthew 3:10-12.

B. Acts 2:33; "Therefore being exalted to the right hand of God, and having received from the Father the promise of the Holy Spirit, He poured out this which you now see and hear."

C. Nobody (neither men nor the Spirit) would baptize with the Spirit. Only Jesus would do that. Men baptized in water and the Spirit gave gifts and power to be able but neither baptized with the Spirit. When we read in the Bible of a man acting or the Spirit doing something, we can know that such a thing does not refer to the baptism with the Holy Spirit.

The Baptism With The Holy Spirit Was Something Done With The Spirit And Not Done By The Spirit.

A. Matthew 3:11 Jesus ... "baptizes with (or in) the Spirit."

B. The Bible does not speak of the baptism "by the" Spirit but the baptism "with" the Spirit.

- 1. It was not something that the Spirit did (to fill, to seal, to give power, to give gifts) but something that Jesus did with the Spirit.

लूका 3:16 यूहन्ना ने सब से कहा, मैं तो तुम्हें जल से बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु एक मुझ से बलवान आनेवाला है, जिस की जूती का बन्धन मैं खोलने के योग्य नहीं। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।

यूहन्ना 1:33 "मैं उसे नहीं जानता था, परन्तु जिस ने मुझे जल से बपतिस्मा देने को भेजा है, उसने मुझ से कहा, 'जिस पर तुम आत्मा को उतरते और उस पर बने हुए देखते हो, यह वही है जो पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देता है।'"

नोट: यह कुछ मनुष्यों द्वारा नहीं किया गया था और न ही पवित्र आत्मा द्वारा किया गया था, बल्कि यीशु द्वारा किया गया था।

- 1. जॉन (जो डूब गया) अपने श्रोताओं को अपने पापों से बचने के लिए पश्चाताप करने का उपदेश दे रहा है।
- 2. वह उन्हें बताता है कि कोई उससे बड़ा आ रहा है; इसलिए उनके पश्चाताप करने का निर्णय लेने का समय सीमित था।
- 3. जॉन तारीखों या कालक्रम के बारे में बात नहीं कर रहा है (न तो आदेश और न ही यह कब होगा); लेकिन केवल यीशु की महानता के बारे में।
- 4. उसका अधिकार इस बात में देखा जाएगा कि वह पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा दे सकता था।

एक। यीशु के पास दोनों पर अधिकार है।

बी। ऐसा नहीं है कि दोनों एक ही चीज हैं।

5. पवित्र आत्मा के बपतिस्मे में आग शामिल नहीं थी।

एक। "आग की जीभ" जो प्रेरितों के काम 2 में प्रेरितों पर टिकी थी, आग में विसर्जन नहीं थी।

बी। इन दो बपतिस्माओं के दो अलग-अलग उद्देश्य हैं।

6. आग से बपतिस्मा।

एक। मत्ती 3:12; "उसका पंखा उसके हाथ में है, और वह अपने खलिहान को अच्छी तरह से शुद्ध करेगा, और अपने गेहूं को खलिहान में इकट्ठा करेगा, लेकिन वह भूसी को आग से जला देगा।"

मैं। यूहन्ना जानता था कि उसके सुनने वालों में लोगों के दो समूह थे, एक वे जो उसके संदेश (गेहूं) को स्वीकार करेंगे, और दूसरे जो वे इसे (भूसा) अस्वीकार करेंगे।

ii. जो लोग इसे स्वीकार करेंगे और पश्चाताप करेंगे, उन्हें आत्मा के साथ बपतिस्मा की आशीष मिलेगी।

iii. जिन लोगों ने इसे अस्वीकार कर दिया, उन्हें आग से बपतिस्मे की सजा मिलेगी।

(ए) इन श्रोताओं के साथ वर्ष 70 ईस्वी में ऐसा हुआ जब रोमियों ने यरूशलेम को नष्ट कर दिया।

(बी) जॉन के सुसमाचार में इस घटना का उल्लेख नहीं किया गया है, शायद इसलिए कि जॉन को 70 ईस्वी के बाद लिखा गया था

iv. मलाकी 4:1-6 मत्ती 3:10-12 के समानांतर है।

2. It is not the gift of speaking in languages (that is something that the Holy Spirit did and not Jesus (1 Corinthians 12:11)).

3. Simply, it was not something that the Spirit does, but something done with the Spirit.

The Baptism With The Holy Spirit Happened On The Day Of Pentecost And Not Before.

A. Matthew 3:11 - It had not happened yet when Jesus was baptized by John.

B. John 7:39 11 and 12:16, 23 - It would only happen after Jesus was glorified (after his resurrection). Acts 1:4-5 – Here, in the hour of the ascension of Jesus, they had still not received the promise from the Father (v. 4), which was the baptism with the Holy Spirit (v. 5).

C. Acts 2:16-17 - On the day of Pentecost, in his sermon, Peter identifies the events of that day as being the fulfillment of the prophecy of the baptism with the Holy Spirit made by Joel the prophet.

D. The Spirit had been present, acting, moving, empowering, etc. since the creation of the world but nothing that He did or that was done with Him before the day of Pentecost is called "the baptism with the Spirit". Before Pentecost, people had been full of the Spirit and had received power from the Spirit, but none of this was called "baptism with the Spirit."

E. Therefore, It is not...

1. the power to do miracles (many had done miracles before Pentecost).

2. the gift of inspiration (many had been inspired before Pentecost).

3. to be full of the Spirit (many had been before Pentecost).

a. John (Luke 1:15).

b. Isabel (Luke 1:41).

c. Zachariah (Luke 1:67).

4. to be clothed by the Spirit since people in the Old Testament (before Pentecost) had been clothed with the Spirit (see Judges 6:34; 1 Chronicles 12:18; 2 Chronicles 24:20).

The Baptism With The Holy Spirit Is Called The "Promise Of The Father"

A. Jesus had already spoken about the promise of the Father to his disciples. The Father promised to send the Spirit in the name of Jesus after Jesus returned to heaven.

1. John 14:16,17,26 "And I will pray the Father, and He will give you another Helper, that He may abide with you forever; "the Spirit of truth,

ख. प्रेरितों के काम 2:33; "इस कारण परमेश्वर के दाहिने हाथ पर ऊंचा किया गया, और पिता से पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा प्राप्त करके, जो कुछ तुम देखते और सुनते हो, उसे उण्डेल दिया।"

ग. कोई भी (न तो पुरुष और न ही आत्मा) आत्मा से बपतिस्मा देगा। केवल यीशु ही ऐसा करेगा। पुरुषों ने पानी में बपतिस्मा लिया और आत्मा ने सक्षम होने के लिए उपहार और शक्ति दी, लेकिन आत्मा से बपतिस्मा नहीं लिया। जब हम बाइबल में पढ़ते हैं कि कोई व्यक्ति कार्य कर रहा है या आत्मा कुछ कर रहा है, तो हम जान सकते हैं कि ऐसी बात पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा का उल्लेख नहीं करती है।

पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा कुछ ऐसा था जो आत्मा के साथ किया गया था और आत्मा के द्वारा नहीं किया गया था।

ए. मत्ती 3:11 यीशु ... "आत्मा के साथ (या में) बपतिस्मा देता है।"

B. बाइबल "आत्मा के द्वारा" बपतिस्मे के बारे में नहीं बल्कि "आत्मा के साथ" बपतिस्मा की बात करती है।

1. यह ऐसा कुछ नहीं था जो आत्मा ने किया (भरने, मुहर लगाने, शक्ति देने, उपहार देने के लिए) लेकिन कुछ ऐसा जो यीशु ने आत्मा के साथ किया।

2. यह भाषाओं में बोलने का वरदान नहीं है (यह कुछ ऐसा है जो पवित्र आत्मा ने किया था और यीशु ने नहीं (1 कुरिन्थियों 12:11)।

3. साधारणतया, यह कुछ ऐसा नहीं था जो आत्मा करता है, परन्तु कुछ ऐसा जो आत्मा के साथ किया जाता है।

पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा पिन्तेकुस्त के दिन हुआ था और इससे पहले नहीं।

उ. मत्ती 3:11 - यह अभी तक नहीं हुआ था जब यीशु को यूहन्ना ने बपतिस्मा दिया था।

बी यूहन्ना 7:39 11 और 12:16, 23 - यह केवल यीशु की महिमा के बाद (उसके पुनरुत्थान के बाद) होगा। प्रेरितों के काम 1:4-5 - यहाँ, यीशु के स्वर्गारोहण की घड़ी में, उन्हें अभी भी पिता से प्रतिज्ञा प्राप्त नहीं हुई थी (पद 4), जो पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा था (पद 5)।

सी. प्रेरितों के काम 2:16-17 - पिन्तेकुस्त के दिन, अपने धर्मोपदेश में, पतरस उस दिन की घटनाओं की पहचान योएल भविष्यद्वक्ता द्वारा की गई पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा की भविष्यवाणी की पूर्ति के रूप में करता है।

D. आत्मा संसार के निर्माण के समय से ही मौजूद, अभिनय, गतिमान, सशक्तीकरण आदि था, लेकिन पिन्तेकुस्त के दिन से पहले उसने जो कुछ भी किया या उसके साथ किया, उसे "आत्मा के साथ बपतिस्मा" कहा जाता है। पिन्तेकुस्त से पहले, लोग आत्मा से भरे हुए थे और उन्होंने आत्मा से सामर्थ प्राप्त की थी, लेकिन इनमें से किसी को भी "आत्मा के साथ बपतिस्मा" नहीं कहा गया था।

ई. इसलिए, यह नहीं है...

1. चमत्कार करने की शक्ति (कई लोगों ने पिन्तेकुस्त से पहले चमत्कार किए थे)।

2. प्रेरणा का उपहार (कई लोग पिन्तेकुस्त से पहले प्रेरित हुए थे)।

whom the world cannot receive, because it neither sees Him nor knows Him; but you know Him, for He dwells with you and will be in you. ... "But the Helper, the Holy Spirit, whom the Father will send in My name, He will teach you all things, and bring to your remembrance all things that I said to you.

2. John 15:26 "But when the Helper comes, whom I shall send to you from the Father, the Spirit of truth who proceeds from the Father, He will testify of Me.
3. John 16:7 "Nevertheless I tell you the truth. It is to your advantage that I go away; for if I do not go away, the Helper will not come to you; but if I depart, I will send Him to you.
4. Acts 1:4,5 And being assembled together with them, He commanded them not to depart from Jerusalem, but to wait for the Promise of the Father, "which," He said, "you have heard from Me; for John truly baptized with water, but you shall be baptized with the Holy Spirit not many days from now."

B. On the day of Pentecost, Jesus poured out the Spirit on all flesh. This event was what Joel (and Isaiah) has prophesied centuries before:

1. Isaiah 32:15 Until the Spirit is poured upon us from on high and the wilderness becomes a fruitful field and the fruitful field is counted as a forest.
2. Isaiah 44:3 For I will pour water on him who is thirsty and floods on the dry ground; I will pour My Spirit on your descendants.
3. Joel 2:28 (Acts 2:17) "And it shall come to pass afterward that I will pour out My Spirit on all flesh.

C. On the day of Pentecost, the Father fulfilled His promise and Jesus poured out the Spirit - Acts 2:33 "Therefore being exalted to the right hand of God, and having received from the Father the promise of the Holy Spirit, He poured out this which you now see and hear."

Note: Baptism with the Spirit was always a promise and never a command.

A Definition Of "Baptism With the Holy Spirit"

The Baptism with the Holy Spirit is what Jesus did with the Spirit on the day of Pentecost in fulfillment of the promise of the Father - **Jesus poured out the Spirit on all flesh**. The Spirit since then became available to all saved people, independent of race (Jewish or heathen) or role in the government of God (priest, prophet, etc.).

Some Implications:

3. आत्मा से परिपूर्ण होना (कई पिन्तेकुस्त से पहले थे)।

एक। यूहन्ना (लूका 1:15)।

बी। इसाबेल (लूका 1:41)।

सी। जकर्याह (लूका 1:67)।

4. आत्मा के द्वारा पहने जाने के लिए क्योंकि पुराने नियम में (पिन्तेकुस्त से पहले) लोगों को आत्मा के कपड़े पहनाए गए थे (देखें न्यायियों 6:34; 1 इतिहास 12:18; 2 इतिहास 24:20)।

पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा को "पिता का वादा" कहा जाता है

उ. यीशु ने अपने शिष्यों को पिता की प्रतिज्ञा के बारे में पहले ही बता दिया था। यीशु के स्वर्ग में लौटने के बाद पिता ने यीशु के नाम से आत्मा भेजने का वादा किया।

1. यूहन्ना 14:16,17,26 "और मैं पिता से प्रार्थना करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह तुम्हारे साथ सदा बना रहे; सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न तो उसे देखता है और न ही उसे जानता है; परन्तु तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और तुम में रहेगा। ... "परन्तु सहायक, पवित्र आत्मा, जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।

2. यूहन्ना 15:26 "परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं पिता की ओर से तुम्हारे पास भेजूंगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा।

3. यूहन्ना 16:7 तौभी मैं तुम से सच कहता हूँ, कि तुम्हारा ही भला है कि मैं चला जाऊँ; क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं चला जाऊँ तो उसे तुम्हारे पास भेजूंगा।

4. प्रेरितों के काम 1:4, 5 और उनके साथ इकट्ठे होकर, उसने उन्हें यरूशलेम से न जाने की आज्ञा दी, परन्तु पिता के उस प्रतिज्ञा की बाट जोहने की बाट जोहते रहे, "जिसे तुम ने मुझ से सुना है; क्योंकि यूहन्ना ने सचमुच बपतिस्मा दिया था जल से, परन्तु अब से अधिक दिन न रहने पर तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।"

B. पिन्तेकुस्त के दिन, यीशु ने सब प्राणियों पर आत्मा उण्डेला। यह घटना वही थी जो योएल (और यशायाह) ने सदियों पहले भविष्यवाणी की थी:

4. यशायाह 32:15 जब तक कि आत्मा ऊपर से हम पर न उण्डेले जाए, और जंगल एक फलदायी खेत न हो जाए, और फलदायी खेत वन के रूप में गिना जाए।

5. यशायाह 44:3 क्योंकि मैं प्यासे को जल और सूखी भूमि पर जल भर दूंगा; मैं तेरे वंश पर अपना आत्मा उण्डेलूंगा।

6. योएल 2:28 (प्रेरितों 2:17) "और बाद में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब प्राणियों पर उण्डेलूंगा।

A. This means that the Spirit was made available for all of humanity. Those who receive the benefit are those who become Christians.

B. The baptism with the Spirit occurred once in history. He, the Spirit, was poured out once for all.

1. In the same way that Jesus died once for all, the Spirit was poured out once for all. These two historical events never need to be repeated.
2. Even Acts 10:45 reflects this truth. In the house of Cornelius, the Holy Spirit fell on the Gentiles who heard the gospel. They started speaking in languages. This event convinced the Jews that the Holy Spirit had been poured out on the Gentiles as well as the Jews.
3. But when had He been poured out on the Gentiles? It was on the day of Pentecost. The perfect tense of the verb in Acts shows this. It indicates an act completed in the past with effects continuing in the present. Once He was poured out, the Holy Spirit began to do His works, but nothing that He does is called "the baptism."
4. The baptism with the Holy Spirit is what Jesus did with the Spirit on the day of Pentecost. The effect of the baptism with the Holy Spirit is the same as the death of Christ. Although He died for all, only the ones that believe, repent and are baptized in water receive the benefit. Although poured out on all flesh, only the ones that believe, repent and are baptized in water receive the benefit.
5. Once He was poured out, the Spirit began to do His works, but nothing He did or does is referred to as the baptism with the Spirit. The baptism is what Jesus did with the Spirit on the day of Pentecost.
6. In practice, the effect of the baptism with the Spirit is the same as the death of Christ. Even though he died for all people of all ages, only those who believe, repent and are baptized in water receive the benefit. Even though the Spirit was poured out on all humanity, only those who believe, repent and are baptized in water receive the benefit.

C. All people of all ages were baptized with the Spirit potentially and all the saved in Christ of all ages are baptized effectively in the Spirit.

This was the promise of the Father (Acts 1:4,5). Jesus received the promise of the Father (Acts 2:33). Peter, in

C. पित्तुकुस्त के दिन, पिता ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की और यीशु ने आत्मा उंडेली - प्रेरितों के काम 2:33 "इसलिये परमेश्वर के दाहिने हाथ पर ऊंचा किया गया, और पिता से पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा प्राप्त करके, उण्डेल दिया इसमें से जो तुम अभी देखते और सुनते हो।"

नोट: आत्मा के साथ बपतिस्मा हमेशा एक वादा था और एक आदेश कभी नहीं।

"पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा" की परिभाषा

पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा वह है जो यीशु ने आत्मा के साथ पित्तुकुस्त के दिन पिता के वादे को पूरा करने के लिए किया था - यीशु ने सभी मांस पर आत्मा को उंडेला। तब से आत्मा सभी बचाए गए लोगों के लिए उपलब्ध हो गया, जाति (यहूदी या अन्यजाति) से स्वतंत्र या परमेश्वर की सरकार (पुजारी, भविष्यवक्ता, आदि) में भूमिका से स्वतंत्र।

कुछ निहितार्थ:

उ. इसका अर्थ है कि आत्मा पूरी मानवता के लिए उपलब्ध कराया गया था। लाभ पाने वाले वे हैं जो ईसाई बन जाते हैं।

B. आत्मा के साथ बपतिस्मा इतिहास में एक बार हुआ। वह, आत्मा, एक बार सभी के लिए उंडेला गया।

7. जिस प्रकार यीशु एक ही बार के लिए मरा, उसी प्रकार आत्मा सब के लिए एक ही बार उण्डेला गया। इन दो ऐतिहासिक घटनाओं को कभी दोहराने की जरूरत नहीं है।
8. यहां तक कि प्रेरितों के काम 10:45 भी इस सच्चाई को दर्शाता है। कुरनेलियुस के घराने में पवित्र आत्मा अन्यजातियों पर गिरा, जिन्होंने सुसमाचार सुना था। वे भाषाओं में बात करने लगे। इस घटना ने यहूदियों को आश्चर्य किया कि पवित्र आत्मा अन्यजातियों के साथ-साथ यहूदियों पर भी उंडेला गया था।
9. परन्तु वह अन्यजातियों पर कब उण्डेला गया था? यह पित्तुकुस्त के दिन था। प्रेरितों के काम में क्रिया का सिद्ध काल यह दर्शाता है। यह वर्तमान में जारी प्रभावों के साथ अतीत में पूर्ण किए गए कार्य को इंगित करता है। एक बार जब वह उंडेल दिया गया, तो पवित्र आत्मा ने अपना कार्य करना शुरू कर दिया, लेकिन जो कुछ भी वह करता है उसे "बपतिस्मा" कहा जाता है।
10. पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा वही है जो यीशु ने पित्तुकुस्त के दिन आत्मा के साथ किया था। पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा का प्रभाव मसीह की मृत्यु के समान है। हालाँकि वह सभी के लिए मरा, केवल वही जो विश्वास करते हैं, पश्चाताप करते हैं और पानी में बपतिस्मा लेते हैं उन्हें ही लाभ मिलता है। हालाँकि सभी मांस पर उंडेला गया, केवल वे ही लाभ प्राप्त करते हैं जो विश्वास करते हैं, पश्चाताप करते हैं और पानी में बपतिस्मा लेते हैं।

Acts 2:39, explained that the promise was for “you others” - those Jews present on Pentecost, “for your children” - the Jews of future generations, and “for all who are far off” – the Gentiles (See Ephesians 2:13), for as many as the Lord our God shall call - all Christians in all ages.

D. Today, if you are in Christ, you have been effectively baptized in the Spirit.

But when? On the day of Pentecost. But how? In the same way Jesus died for you 2,000 years ago. You received the benefit of the death of Christ when you became a Christian. The Spirit was poured out on all flesh 2,000 years ago. You received the benefit of this outpouring when you became a Christian.

Baptism With The Spirit Does Not Mean “Receive Miraculous Power From The Spirit”.

A. Luke 24:49 "Behold, I send the Promise of My Father upon you; but tarry in the city of Jerusalem until you are endued with power from on high." does not say that the promise of the Father is the same thing as “receive power”. He said that both things would so they should stay in Jerusalem. The Spirit gave power before Pentecost but the baptism with the Spirit did not happen before Pentecost.

B. Jesus gave the Spirit and the Spirit gave power but the baptism is what Jesus did and not what the Spirit did.

C. Not all Christians did miracles but all Christians received the Spirit.

D. Since the baptism with the Spirit is a unique historical event, it doesn't make sense to talk about “receiving Holy Spirit baptism”. The Bible never uses that type of phrase. How can you receive a past historical event? We can receive the Spirit or we can receive a gift from the Spirit but we cannot receive the “baptism of the Spirit”.

We Need To Distinguish Between The “Baptism With The Spirit” Which Was A Work Of Jesus, And Giving Power, Which Is A Work Of The Spirit.

A. This is the most common mistake in the mind of many people - confusing what Jesus did with the Spirit (Baptized or poured out) and what the Spirit did once He was poured out or made available.

B. For example, the Spirit gave miraculous powers to people to speak in other languages and heal the sick.

11. एक बार जब वह उंडेल दिया गया, तो आत्मा ने अपना काम करना शुरू कर दिया, लेकिन उसने जो कुछ भी किया या नहीं किया उसे आत्मा के साथ बपतिस्मा कहा जाता है। बपतिस्मा वह है जो यीशु ने पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा के साथ किया था।

12. व्यवहार में, आत्मा के साथ बपतिस्मे का प्रभाव मसीह की मृत्यु के समान ही होता है। भले ही वह सभी उम्र के सभी लोगों के लिए मर गया, केवल वे जो विश्वास करते हैं, पश्चाताप करते हैं और पानी में बपतिस्मा लेते हैं वे ही लाभ प्राप्त करते हैं। भले ही आत्मा पूरी मानवता पर उंडेला गया था, केवल वे जो विश्वास करते हैं, पश्चाताप करते हैं और पानी में बपतिस्मा लेते हैं वे ही लाभ प्राप्त करते हैं।

ग. सभी उम्र के सभी लोगों ने संभावित रूप से आत्मा के साथ बपतिस्मा लिया था और सभी युगों के मसीह में बचाए गए सभी लोगों ने आत्मा में प्रभावी रूप से बपतिस्मा लिया है।

यह पिता की प्रतिज्ञा थी (प्रेरितों के काम 1:4,5)। यीशु ने पिता की प्रतिज्ञा को प्राप्त किया (प्रेरितों के काम 2:33)। पतरस ने, प्रेरितों के काम 2:39 में, समझाया कि वादा "तुम दूसरों" के लिए था - वे यहूदी जो पिन्तेकुस्त के दिन उपस्थित थे, "आपके बच्चों के लिए" - आने वाली पीढ़ियों के यहूदी, और "उन सभी के लिए जो दूर हैं" - अन्यजातियों (इफिसियों 2:13 को देखें, क्योंकि जितने लोग हमारे परमेश्वर यहोवा को बुलाएंगे, वे सभी युगों के सभी मसीही होंगे।

D. आज, यदि आप मसीह में हैं, तो आपने प्रभावी रूप से आत्मा में बपतिस्मा लिया है।

लेकिन जब? पिन्तेकुस्त के दिन। पर कैसे? उसी तरह यीशु आपके लिए 2,000 साल पहले मरा। जब आप ईसाई बने तो आपको मसीह की मृत्यु का लाभ मिला। 2,000 साल पहले सभी मांस पर आत्मा उंडेला गया था। जब आप ईसाई बने तो आपको इस उँडेलेपन का लाभ मिला।

आत्मा के साथ बपतिस्मा का अर्थ "आत्मा से चमत्कारी शक्ति प्राप्त करना" नहीं है।

ए. लूका 24:49 "देख, मैं आपके पिता की प्रतिज्ञा को तुझ पर भेजता हूँ, परन्तु जब तक ऊपर से सामर्थ न प्राप्त हो तब तक यरूशलेम नगर में ठहरे रहो।" यह नहीं कहता है कि पिता का वादा "शक्ति प्राप्त करने" के समान है। उस ने कहा, कि दोनों बातें ऐसी होंगी, कि वे यरूशलेम में रहें। पिन्तेकुस्त से पहले आत्मा ने शक्ति दी थी लेकिन आत्मा के साथ बपतिस्मा पिन्तेकुस्त से पहले नहीं हुआ था।

बी. यीशु ने आत्मा दी और आत्मा ने शक्ति दी लेकिन बपतिस्मा वही है जो यीशु ने किया और न कि आत्मा ने क्या किया।

सी. सभी ईसाइयों ने चमत्कार नहीं किया लेकिन सभी ईसाइयों ने आत्मा को प्राप्त किया।

C. He seals believers in Christ, dwells in the redeemed, inspired the apostles and prophets, comforts and guides, etc. but none of this is called "the baptism."

D. The baptism is what Jesus did with the Spirit on the day of Pentecost - He poured Him out on all flesh.

E. In the Bible, when the Spirit descended on someone, came on someone or fell on someone, that person received divine power

1. He descended on Jesus and he did miracles

Matthew 3:16

Luke 3:22

Luke 4:18

Mark 1:10

John 1:32

2. Luke 2:25-27 - Simeon prophesied

3. Luke 1:35 - Mary conceived Jesus

4. Acts 1:8 - the apostles received power

5. Acts 2:3, 4 - They spoke in languages

6. Acts 8:16 - They performed signs

7. Acts 10:44, 45 - They spoke in languages

8. Acts 19:6 - They spoke in languages and prophesied

Note: In **Acts 8**, the apostles were men especially chosen to witness the resurrection of Jesus. They had qualifications: **Luke 24:48; Acts 1:8; 1; John 1:1-2** and credentials: **2 Corinthians 12:12; 1 Corinthians 9:1; Acts 1:21,22; Acts 8:18**. They and only they had the power to make the Spirit fall on someone by the laying on of hands (and so to give power) .

Compare The Baptism With The Spirit To Baptism In Water To See Which Of The Two Is The "One Baptism" Of Ephesians 4:5.

Baptism In Water (In The Name Of Jesus)

A. Done by men

Matthew 28:1

Acts 8:38

1 Corinthians 1:14-16

B. Done with water

Acts 8:38-39

Acts 10:47

C. Happened many times (with each conversion)

D. Is a commandment and not a promise

Acts 2:38

Acts 22:16

E. A Definition: Christian baptism is immersion in water in the name of Jesus (by the authority of Jesus)

डी. चूंकि आत्मा के साथ बपतिस्मा एक अद्वितीय ऐतिहासिक घटना है, इसलिए "पवित्र आत्मा के बपतिस्मा को प्राप्त करने" के बारे में बात करने का कोई मतलब नहीं है। बाइबल कभी भी उस प्रकार के वाक्यांश का प्रयोग नहीं करती है। आप पिछली ऐतिहासिक घटना को कैसे प्राप्त कर सकते हैं? हम आत्मा को प्राप्त कर सकते हैं या हम आत्मा से उपहार प्राप्त कर सकते हैं लेकिन हम "आत्मा का बपतिस्मा" प्राप्त नहीं कर सकते।

हमें "आत्मा के साथ बपतिस्मा" के बीच अंतर करने की आवश्यकता है जो यीशु का कार्य था, और शक्ति देना, जो कि आत्मा का कार्य है।

उ. यह बहुत से लोगों के मन में सबसे आम गलती है - यह भ्रमित करना कि यीशु ने आत्मा के साथ क्या किया (बपतिस्मा दिया या उंडेला) और एक बार जब वह उंडेल दिया गया या उपलब्ध कराया गया तो आत्मा ने क्या किया।

बी. उदाहरण के लिए, आत्मा ने लोगों को अन्य भाषाएं बोलने और बीमारों को चंगा करने के लिए चमत्कारी शक्तियां दीं।

ग. वह मसीह में विश्वासियों को सील कर देता है, छुड़ाए गए लोगों में रहता है, प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं को प्रेरित करता है, आराम और मार्गदर्शक, आदि। लेकिन इनमें से किसी को भी "बपतिस्मा" नहीं कहा जाता है।

D. पित्तेकुस्त के दिन यीशु ने आत्मा के साथ जो किया वह बपतिस्मा है - उसने उसे सभी मांस पर उंडेला।

ई. बाइबल में, जब आत्मा किसी पर उतरी, किसी पर उतरी या किसी पर गिरी, तो उस व्यक्ति को दैवीय शक्ति प्राप्त हुई

2. वह यीशु पर उतरा और उसने चमत्कार किया

मत्ती 3:16

लूका 3:22

लूका 4:18

मार्क 1:10

जॉन 1:32

2. लूका 2:25-27 - शिमोन ने भविष्यद्वाणी की

3. लूका 1:35 - मरियम ने यीशु को गर्भ धारण किया

4. प्रेरितों के काम 1:8 - प्रेरितों को शक्ति प्राप्त हुई

5. प्रेरितों के काम 2:3, 4 - वे भाषा बोलते थे

6. प्रेरितों के काम 8:16 - उन्होंने चिन्ह दिखाए

7. प्रेरितों के काम 10:44, 45 - वे भाषाएँ बोलते थे

8. प्रेरितों के काम 19:6 - वे भाषा बोलते थे और भविष्यद्वाणी करते थे

नोट: प्रेरितों के काम 8 में, प्रेरित वे पुरुष थे जिन्हें विशेष रूप से यीशु के पुनरुत्थान को देखने के लिए चुना गया था। उनमें योग्यता थी: लूका 24:48; प्रेरितों के काम 1:8; 1; यूहन्ना 1:1-2 और प्रमाण-पत्र: 2 कुरिन्थियों 12:12; 1 कुरिन्थियों 9:1; प्रेरितों के काम 1:21,22; अधिनियम 8:18। उनके पास और केवल उनके पास हाथ रखने (और

for remission of sins. It is always preceded by faith and repentance.

F. Some teachings:

- Baptism in water is necessary (**Mark 16:16; Acts 2:38; 22:16**)
- Baptism is only permitted for someone who believes (**Acts 8:37,38**)
- Baptism symbolizes a burial (**Romans 6:3-6**). It is by immersion.
- In baptism, we enter into Christ (Galatians 3:26, 27)

Ephesians 4:5 says that there is "only one baptism". This baptism is baptism in water, because the baptism in the Spirit already happened and does not need to be repeated. Baptism in water in the name of Jesus, though, continues being done whenever someone becomes a Christian.

Some Say That "Holy Spirit Baptism" Was Promised Only To The Apostles.

The "baptism of the Spirit" for these people is when somebody receives the power from the Spirit as inspiration, revelations, miracles, etc. But problems with this idea exist.

First, the expression "baptism of the Spirit" does not exist in the Bible. All the translations have "baptism with the Spirit" or "baptism in the Spirit." It is not a baptism that the Spirit does, but rather, it is a baptism where the Spirit is used. In the promises of the Old Testament, it is the Spirit that would be poured out and this would be evident by the miraculous gifts that the Spirit would give. It has to be kept in mind what it is that was poured out – it was not gifts, but rather, the Spirit. The promise was the Spirit and not the gifts that the Spirit would distribute after being poured out. Miracles and gifts already had been given well before this baptism, but what was promised only occurred on that day and not before. Until that day, the Spirit never was poured out for all people, but since that day all can receive the Spirit. The words of Jesus in Acts 1:4-5 shows that the promise of the Father and the baptism with the Spirit were the same thing. When the apostles received the Spirit in Acts 2, Peter said in v.16 that the prophecy of Joel (the promise of the Father) was being fulfilled. This agrees with the words of Jesus in 1:4,5. In 2:33, Peter agrees with John 7:39 and he says clearly that the promise was the pouring out of the Holy Spirit. When Peter says: "this which you see and hear", he is using the manifestations of the Spirit to illustrate that the Spirit, in fact, was poured out. Jesus poured out the Spirit as was promised since the Old Testament.

इसलिए शक्ति देने के लिए द्वारा किसी पर आत्मा गिराने की शक्ति थी।

आत्मा के साथ बपतिस्मा की तुलना पानी में बपतिस्मा से करें यह देखने के लिए कि दोनों में से कौन इफिसियों 4:5 का "एक बपतिस्मा" है।

पानी में बपतिस्मा (यीशु के नाम पर)

A. पुरुषों द्वारा किया गया

मत्ती 28:1

प्रेरितों के काम 8:38

1 कुरिन्थियों 1:14-16

B. पानी के साथ किया गया

प्रेरितों के काम 8:38-39

प्रेरितों के काम 10:47

C. कई बार हुआ (प्रत्येक रूपांतरण के साथ)

D. एक आज्ञा है और वादा नहीं है

प्रेरितों के काम 2:38

प्रेरितों के काम 22:16

ई. एक परिभाषा: ईसाई बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिए यीशु (यीशु के अधिकार से) के नाम पर पानी में विसर्जन है। यह हमेशा विश्वास और पश्चाताप से पहले होता है।

एफ। कुछ शिक्षाएं:

- पानी में बपतिस्मा आवश्यक है (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; 22:16)
- बपतिस्मा केवल उसी के लिए अनुमति है जो विश्वास करता है (प्रेरितों के काम 8:37,38)
- बपतिस्मा एक गाड़े जाने का प्रतीक है (रोमियों 6:3-6)। विसर्जन से है।
- बपतिस्मे में, हम मसीह में प्रवेश करते हैं (गलातियों 3:26, 27)

इफिसियों 4:5 कहता है कि "केवल एक ही बपतिस्मा" है। यह बपतिस्मा पानी में बपतिस्मा है, क्योंकि आत्मा में बपतिस्मा पहले ही हो चुका है और इसे दोहराने की आवश्यकता नहीं है। हालाँकि, जब भी कोई ईसाई बनता है, तो यीशु के नाम पर पानी में बपतिस्मा होता रहता है।

कुछ लोग कहते हैं कि "पवित्र आत्मा के बपतिस्मा" का वादा केवल प्रेरितों से किया गया था।

इन लोगों के लिए "आत्मा का बपतिस्मा" तब होता है जब कोई व्यक्ति आत्मा से प्रेरणा, रहस्योद्घाटन, चमत्कार आदि के रूप में शक्ति प्राप्त करता है, लेकिन इस विचार के साथ समस्याएं मौजूद हैं।

Some of those who say that the promise of the baptism with the Spirit was only made to the apostles affirm that in the passages where Jesus speaks about this, only the apostles were present (for example, Acts 1:4-5). But when Jesus spoke to the apostles, this did not necessarily limit the promise. Actually, when we look at all the passages that speak about this baptism, we see that this was not so. When John the Baptist spoke, he was not only speaking to the apostles but to the multitude of Jews who went to be baptized by him (Matthew 3:1-12 and Luke 3:15, 16). When the apostle John spoke about the promise (that it, is the baptism with the Spirit) in John 7:39, it was not only limited to the apostles. The promise of Acts is not limited to only some, but is a promise for all the saved. One reason that some think that it was limited is because they do not understand that the baptism with the Spirit is not the distribution of gifts (ex. languages) nor a miraculous thing.

What About The Case Of Cornelius? (Acts 10-11)

In Acts 10: 44-45 Peter was called to preach to the Gentiles. While he was preaching, the Spirit fell on the Gentiles and they started to speak in languages. Does this mean that the Gentiles received the Spirit before they became Christians? Not at all. Certainly the Spirit already acted in some people before Acts 2. Saul in the Old Testament is an example. In 1 Samuel 10:10, the Spirit of the Lord possessed Saul and he prophesied (also see 1 Samuel 11:6). In 1 Samuel 16:14 it is said that the Spirit of the Lord was removed, but in 1 Samuel 19:23 Spirit came upon Saul again and he prophesied. The Spirit can come upon somebody, make him prophesy (or do something else) and then remove Himself. Somebody being influenced by the Spirit, even to the point of prophesying, does not necessarily mean that the Spirit dwells in that person as was promised in the Old Testament.

In Acts, we learn about the promise of the Spirit through the preaching of Peter in chapter 2. When somebody is called by God through the gospel and becomes a Christian, this person receives the gift of the Spirit. This is possible because the Spirit was poured out on all flesh. In Acts 10, God wanted to show that this included the Gentiles, just as would be later preached: "He does not make a distinction". The Spirit fell on them before they had become Christians, showing that God accepted the Gentiles as well as the Jews who believed in Jesus as the Christ. When Peter and the others saw this, they recognized that when the Spirit was poured out, back in Acts 2 (the verb is in the perfect tense), He had been poured out on the Gentiles also. Then, without hesitation, the Gentiles were baptized, without circumcision, and, according to promise, received the Holy Spirit.

पहला, अभिव्यक्ति "आत्मा का बपतिस्मा" बाइबल में मौजूद नहीं है। सभी अनुवादों में "आत्मा के साथ बपतिस्मा" या "आत्मा में बपतिस्मा" है। यह एक बपतिस्मा नहीं है जो आत्मा करता है, बल्कि यह एक बपतिस्मा है जहाँ आत्मा का उपयोग किया जाता है। पुराने नियम के वादों में, यह आत्मा है जिसे उंडेला जाएगा और यह उन चमत्कारी उपहारों से स्पष्ट होगा जो आत्मा देगा। इसे ध्यान में रखना होगा कि वह क्या है जो उंडेला गया था - यह उपहार नहीं था, बल्कि आत्मा था। प्रतिज्ञा आत्मा थी, न कि उपहार जो आत्मा उंडेले जाने के बाद वितरित करेगा। इस बपतिस्मे से पहले ही चमत्कार और उपहार दिए जा चुके थे, लेकिन जो वादा किया गया था वह केवल उसी दिन हुआ था और पहले नहीं। उस दिन तक, आत्मा सभी लोगों के लिए कभी नहीं उंडेला गया, परन्तु उस दिन से सब लोग आत्मा को प्राप्त कर सकते हैं। प्रेरितों के काम 1:4-5 में यीशु के वचन दिखाते हैं कि पिता की प्रतिज्ञा और आत्मा से बपतिस्मा एक ही बात थी। जब प्रेरितों ने प्रेरितों के काम 2 में आत्मा को प्राप्त किया, तो पतरस ने 16वें पद में कहा कि योएल की भविष्यवाणी (पिता की प्रतिज्ञा) पूरी हो रही थी। यह 1:4,5 में यीशु के शब्दों से सहमत है। 2:33 में, पतरस यूहन्ना 7:39 से सहमत है और वह स्पष्ट रूप से कहता है कि प्रतिज्ञा पवित्र आत्मा का उंडेला जाना था। जब पतरस कहता है: "यह जो तुम देखते और सुनते हो", वह आत्मा की अभिव्यक्तियों का उपयोग यह स्पष्ट करने के लिए कर रहा है कि आत्मा, वास्तव में, उंडेला गया था। यीशु ने आत्मा को उंडेला जैसा कि पुराने नियम में वादा किया गया था। जब प्रेरितों ने प्रेरितों के काम 2 में आत्मा को प्राप्त किया, तो पतरस ने 16वें पद में कहा कि योएल की भविष्यवाणी (पिता की प्रतिज्ञा) पूरी हो रही थी। यह 1:4,5 में यीशु के शब्दों से सहमत है। 2:33 में, पतरस यूहन्ना 7:39 से सहमत है और वह स्पष्ट रूप से कहता है कि प्रतिज्ञा पवित्र आत्मा का उंडेला जाना था। जब पतरस कहता है: "यह जो तुम देखते और सुनते हो", वह आत्मा की अभिव्यक्तियों का उपयोग यह स्पष्ट करने के लिए कर रहा है कि आत्मा, वास्तव में, उंडेला गया था। यीशु ने आत्मा को उंडेला जैसा कि पुराने नियम में वादा किया गया था।

उनमें से कुछ जो कहते हैं कि आत्मा के साथ बपतिस्मा की प्रतिज्ञा केवल प्रेरितों से की गई थी, यह पुष्टि करते हैं कि जिन अनुच्छेदों में यीशु इस बारे में बात करते हैं, उनमें केवल प्रेरित ही उपस्थित थे (उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 1:4-5)। परन्तु जब यीशु ने प्रेरितों से बात की, तो यह आवश्यक रूप से प्रतिज्ञा को सीमित नहीं करता था। दरअसल, जब हम इस बपतिस्मे के बारे में बोलने वाले सभी अंशों को देखते हैं, तो हम देखते हैं कि ऐसा नहीं था। जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला बोला, तो वह न केवल प्रेरितों से बल्कि उन यहूदियों की भीड़ से भी बात कर रहा था जो उसके द्वारा बपतिस्मा लेने गए थे (मत्ती 3:1-12 और लूका 3:15, 16)। जब प्रेरित यूहन्ना ने यूहन्ना 7:39 में प्रतिज्ञा

Questions

1. The baptism with the Holy Spirit was done by Jesus exclusively
True ____ False ____
2. The baptism with the Holy Spirit is something done with the Holy Spirit not something done by the Holy Spirit.
True ____ False ____
3. The baptism with the Holy Spirit happened on Pentecost Day not before.
True ____ False ____
4. God, the Father, promised to send the Holy Spirit in the name of Jesus after Jesus returned to heaven.
True ____ False ____
5. The baptism of the Holy Spirit occurs annually around Christmas
True ____ False ____
6. Today those in Christ have been effectively baptized in the Spirit as the Holy Spirit was poured out on all men on Pentecost Day.
True ____ False ____
7. One baptized with the Holy Spirit receives miraculous powers.
True ____ False ____
8. Which of the following happened when the Holy Spirit descended on them?
 - a. ____ Mary conceived
 - b. ____ Simeon prophesied
 - c. ____ Jesus did miracles
 - d. ____ Judas betrayed Jesus
 - e. ____ All the above
 - f. ____ a, b, and c
9. Baptism in Jesus name, by the authority of Jesus, is
 - a. ____ Done by men
 - b. ____ Done in water
 - c. ____ A command not a promise
 - d. ____ Always preceded by faith and repentance
 - e. ____ All the above
 - f. ____ None of the above
 - g. ____ a and b
10. What does the Bible say about Holy Spirit baptism
 - a. ____ "baptism of the Holy Spirit"
 - b. ____ "baptism with the Holy Spirit"

(कि यह आत्मा के साथ बपतिस्मा है) के बारे में बात की, तो यह केवल प्रेरितों तक ही सीमित नहीं था। प्रेरितों के काम का वादा केवल कुछ लोगों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि सभी बचाए गए लोगों के लिए एक वादा है।

कुरनेलियुस के मामले के बारे में क्या? (अधिनियम 10-11)

प्रेरितों के काम 10: 44-45 में पतरस को अन्यजातियों को प्रचार करने के लिए बुलाया गया था। जब वह प्रचार कर रहा था, तो अन्यजातियों पर आत्मा उतरी, और वे भाषा बोलने लगे। क्या इसका अर्थ यह है कि अन्यजातियों ने मसीही बनने से पहले आत्मा को प्राप्त किया था? बिल्कुल भी नहीं। निश्चित रूप से प्रेरितों के काम 2 से पहले ही कुछ लोगों में आत्मा ने कार्य किया है। पुराने नियम में शाऊल एक उदाहरण है। 1 शमूएल 10:10 में, प्रभु की आत्मा शाऊल के पास थी और उसने भविष्यवाणी की थी (1 शमूएल 11:6 भी देखें)। 1 शमूएल 16:14 में कहा गया है कि यहोवा का आत्मा निकाल दिया गया था, परन्तु 1 शमूएल 19:23 में शाऊल पर फिर से आत्मा उतरी और उसने भविष्यवाणी की। आत्मा किसी पर आ सकती है, उससे भविष्यवाणी करवा सकती है (या कुछ और कर सकती है) और फिर खुद को हटा सकती है। कोई व्यक्ति आत्मा से प्रभावित होकर, यहाँ तक कि भविष्यवाणी करने की हद तक,

प्रेरितों के काम में, हम अध्याय 2 में पतरस के प्रचार के माध्यम से आत्मा की प्रतिज्ञा के बारे में सीखते हैं। जब किसी को परमेश्वर द्वारा सुसमाचार के माध्यम से बुलाया जाता है और वह ईसाई बन जाता है, तो यह व्यक्ति आत्मा का उपहार प्राप्त करता है। यह इसलिए संभव है क्योंकि आत्मा सभी मांस पर उंडेला गया था। प्रेरितों के काम 10 में, परमेश्वर यह दिखाना चाहता था कि इसमें अन्यजाति भी शामिल हैं, जैसा कि बाद में प्रचार किया जाएगा: "वह कोई भेद नहीं करता"। उनके ईसाई बनने से पहले आत्मा उन पर गिर गई, यह दिखाते हुए कि भगवान ने अन्यजातियों के साथ-साथ यहूदियों को भी स्वीकार किया जो यीशु को मसीह के रूप में मानते थे। जब पतरस और अन्य लोगों ने यह देखा, तो उन्होंने पहचान लिया कि जब आत्मा उँडेली गई थी, तो प्रेरितों के काम 2 में (क्रिया पूर्ण काल में है), वह अन्यजातियों पर भी उँडेला गया था। तब अन्यजातियों ने बिना खतने के बपतिस्मा लिया, और,

प्रश्न

1. पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा यीशु द्वारा विशेष रूप से किया गया था
सही गलत ____
2. पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा कुछ ऐसा है जो पवित्र आत्मा के साथ किया जाता है न कि पवित्र आत्मा द्वारा किया गया कुछ।
सही गलत ____
3. पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा पिन्तेकुस्त के दिन पहले नहीं हुआ था।
सही गलत ____

c. ___ baptism by the Holy Spirit

d. ___ a and b

11. What was poured out on Pentecost Day?

a. ___ Gifts of miracles

b. ___ Promised Holy Spirit

12. The promise of the Holy Spirit and the baptism with the Holy Spirit are the same.

True ___ False ___

4. परमेश्वर, पिता ने यीशु के स्वर्ग में लौटने के बाद यीशु के नाम से पवित्र आत्मा भेजने का वादा किया था।

सही गलत ___

5. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्रतिवर्ष क्रिसमस के आसपास होता है

सही गलत ___

6. पन्तेकुस्त के दिन सभी मनुष्यों पर पवित्र आत्मा उँडेले जाने के बाद आज वे मसीह में प्रभावी रूप से आत्मा में बपतिस्मा ले चुके हैं।

सही गलत ___

7. पवित्र आत्मा से बपतिस्मा लेने वाले को चमत्कारी शक्तियाँ प्राप्त होती हैं।

सही गलत ___

8. निम्नलिखित में से क्या हुआ जब पवित्र आत्मा उन पर उतरा?

a. ___ मैरी ने गर्भ धारण किया

b. ___ शिमोन ने भविष्यवाणी की

c. ___ यीशु ने चमत्कार किए

d. ___ यहूदा ने यीशु को धोखा दिया

e. ___ सब से ऊपर

f. ___ ए, बी, और सी

9. यीशु के नाम में बपतिस्मा, यीशु के अधिकार से, is

a. ___ पुरुषों द्वारा किया गया

b. ___ पानी में किया

c. ___ एक आदेश एक वादा नहीं है

d. ___ हमेशा विश्वास और पश्चाताप से पहले

e. ___ सब से ऊपर

f. ___ इनमे से कोई भी नहीं

g. ___ ए और बी

10. पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के बारे में बाइबल क्या कहती है

a. ___ "पवित्र आत्मा का बपतिस्मा"

b. ___ "पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा"

c. ___ पवित्र आत्मा द्वारा बपतिस्मा

d. ___ ए और बी

11. पन्तेकुस्त के दिन क्या उँडेल दिया गया था?

a. ___ चमत्कार के उपहार

b. ___ वादा किया पवित्र आत्मा

12. पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा और पवित्र आत्मा से बपतिस्मा एक ही है।

सही गलत ___

International Bible Knowledge Institute - अंतर्राष्ट्रीय बाइबल ज्ञान संस्थान

Electives Studies - वैकल्पिक अध्ययन

Mortal Man From Life to Death - नश्वर मनुष्य जीवन से मृत्यु तक

Planned Redemption - नियोजित मोचन

Creation before Genesis - उत्पत्ति से पहले का निर्माण

What Shall We Do? हम क्या करें?

End of Time on Earth - पृथ्वी पर समय का अंत

Marriage and Divorce - विवाह और तलाक

Silence of the Scriptures - शास्त्रों की चुप्पी

Daniel - डैनियल

First Principles of Christ - मसीह के पहले सिद्धांत

Holy Spirit - पवित्र आत्मा

Types and Metaphors - पवित्र आत्मा

Additional Studies - वैकल्पिक अध्ययन

Today's Church Practices - वैकल्पिक अध्ययन

Compiling and Translating the Bible - बाइबल का संकलन और अनुवाद

Shadows, Types and Prophecies - छाया, प्रकार और भविष्यवाणियां

Teachings & Practices after AD 100 - 100 ईस्वी के बाद की शिक्षाएं और व्यवहार

God's Sabbath - भगवान का सप्ताह

Promises Now and For Evermore - वादे अभी और हमेशा के लिए

God's Rebuilding Process - भगवान की पुनर्निर्माण प्रक्रिया

Living The Maximum Life - अधिकतम जीवन जीना

Real Men are Godly Men - सच्चे पुरुष ईश्वरीय पुरुष हैं

Living For One Another - एक दूसरे के लिए जीना

Greatest Questions Ever Asked - अब तक के सबसे बड़े सवाल

Wonderful Words Of Life - जीवन के अद्भुत शब्द

Lessons From The Cross - क्रॉस से सबक

Jehovah's Witnesses church - यहोवा के साक्षी चर्च

Interesting but not required for BKS award - दिलचस्प है लेकिन बीकेएस पुरस्कार के लिए आवश्यक नहीं

Outlined Bible - उल्लिखित बाइबिल

Summarized - सारांशित बाइबिल

LESSONS AND SERVICES PROVIDED BY *INTERNATIONAL BIBLE KNOWLEDGE INSTITUTE* ARE FREE OF CHARGE.
YOU WILL NEVER BE ASK FOR TUITION OR ANY OTHER FEE. *IBKI* IS NOT AN ACCREDITED INSTITUTION.

अंतर्राष्ट्रीय बाइबल ज्ञान संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले पाठ और सेवाएं निःशुल्क हैं। आपसे कभी भी ट्यूशन या कोई अन्य शुल्क नहीं मांगा जाएगा। आईबीकेआई एक मान्यता प्राप्त संस्थान नहीं है।

संस्थान का लक्ष्य परमेश्वर और उसकी इच्छा के बारे में अधिक जानने में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति को बाइबल पाठ उपलब्ध कराना है। पाठों को प्रिंट करने के लिए डाउनलोड किया जा सकता है, ऑनलाइन अध्ययन किया जा सकता है या व्यक्तियों या चर्चों द्वारा ईमेल मंत्रालय में उपयोग किया जा सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय बाइबल ज्ञान संस्थान (IBKI) से डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए एक छात्र ने चार आवश्यक पाठ्यक्रम और 7 वैकल्पिक पाठ पूरे किए होंगे।

उन्नत अध्ययन "बीकेएस" (बाइबिल नॉलेज स्कॉलर) पुरस्कार प्राप्त करने के लिए, एक डिप्लोमा अर्जित करने के अलावा एक छात्र ने सभी वैकल्पिक पाठ और 7 अतिरिक्त अध्ययन पूरे कर लिए होंगे।

आईबीकेआई गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए पुस्तकों और पाठों को उनकी संपूर्णता में बिना किसी परिवर्तन या शुल्क के पुनः पेश करने की अनुमति देता है।

Course One - The Message | कोर्स एक - संदेश

How Did Everything Get Here? सब कुछ यहाँ कैसे आया?

The Man Who Was God वह आदमी जो भगवान था

Christ - God's Mystery क्राइस्ट - भगवान का रहस्य

Myths About God भगवान के बारे में मिथक

Course Two - Obedience To His Message | पाठ्यक्रम दो - उनके संदेश की आज्ञाकारिता

Time Before Christ मसीह से पहले का समय

Time Christ on the Earth पृथ्वी पर समय मसीह

Time After Christ मसीह के बाद का समय

Time to Decide तय करने का समय

From Death Through The Cross To Life मृत्यु से क्रूस के द्वारा जीवन की

Course Three - A New Spiritual Life In Christ | कोर्स तीन - मसीह में एक नया आध्यात्मिक जीवन

Baptism into Christ मसीह में बपतिस्मा

Life to Death - The Mortal Life

A Kingdom Not Made With Hands हाथों से नहीं बना साम्राज्य

Servants In The Kingdom राज्य में सेवक

Message From The Epistles पत्रियों से संदेश

Worship God In Spirit and Truth आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की आराधना करें

Course Four - Maturing In Christ | कोर्स चार - मसीह में परिपक्व होना

Jesus of Nazareth नासरत का यीशु

Life Of Christ मसीह का जीवन

United in Christ में संयुक्त

Spiritual Milk आध्यात्मिक दूध

Body, Soul, Spirit - Where Do They Go When You Die? शरीर, आत्मा, आत्मा - जब आप मरते हैं तो वे कहाँ जाते हैं?

Living Liberated लिविंग लिबरेटेड

Revelation Of Jesus Christ यीशु मसीह का रहस्योद्घाटन

कृपया इस कार्यक्रम और पाठों के बारे में सभी प्रश्नों को इस पते पर अपने नामित शिक्षक को निर्देशित करें।

Distributed by

Hyderabad & Naidupet Church of Christ,

1-2-168, CBN Colony, Helping Hands Trust,

Naidupet-524 126, A.P,India